गाछ बजैत छैक

ई कथासभ कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटामात्र संयोग बूझल जाए ।

गाछ बजैत छैक

कथा संग्रह

रबीन्द्र नारायण मिश्र

गाछ बजैत छैक
(कथा संग्रह)
रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-343-4747-0
दाम : 350 रूपया
सर्वाधिकार सुरक्षित © **:** श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र
पहिल संस्करण : 2025

लेखक: श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र

प्रकाशक : श्रीमती आशा मिश्र
House No : C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No : 6 Builders Area Greater Noida
District : Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
M-9968502767: 9654066085

Printed in India

Gaachh Bajait Chhaik(गाछ बजैत छैक) Collection of Stories by Shri. Rabindra Narayan Mishra.
एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि। काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवम् रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

पूज्य पितामह स्वर्गीय श्रीशरण मिश्रक स्मृतिमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

अनुक्रम

गाछ बजैत छैक ७
समाधान १६
बेटीक अधिकार २६
साइबर अपराध ३५
अंतिम इच्छा ५०
प्रेरणा ५६
श्वेताक संघर्ष ६३
विश्वासघात ७१
किडनी चोर ७३
गाछ फेर हरिआ गेल ८६
नरक भरल छैक ९८
भ्रम? १०७
मोड़ ११६
उत्तराधिकारी १२५
नीलिमाक सपना १३२
जीवन अनमोल अछि १४०

गाछ बजैत छैक

हम युग-युगसँ एतहि ठाढ़ छी । एहिना गुम-सुम। चुपचाप सभकिछु देखि रहल छी। घात-प्रतिघात सहि रहल छी। कहि नहि हम कहिआ आ कोना एहि दुनिआमे प्रवेश केलहुँ । के हमर बीजकेँ एहिठाम पृथ्वी माताक आँचरमे राखि देलक? बस तहिआसँ हम पृथ्वी माताक शरणमे छी। इएह हमर सभ किछु छथि। इएह माता छथि,इएह पिता छथि। जरूर हमर भाग्य दहिन रहल होएत जे हमर बीज माटिपर एहन ठाम खसल जतए हमरा फलकाबक हेतु अनुकूल माहौल छल। हबा,रौद,पानि सभ भेटि रहल छल। नहि तँ ओ बीज थोड़े पम्ह लए सकैत। मुदा से लेलक। ओ बीज क्रमशः फुटल। ओहिमे पम्ही देलक। क्रमशः ओहिमे सँ छोट-छोट पात निकलि गेल। नहु-नहु ओ बढ़िते गेल। माहौल तँ अनुकूल छलहे । संगे हमर भाग्यो संग देलक । केओ हमरा उखाड़ि नहि देलक। कोनो चारिपहिआ-दूपहिआबला पिचि नहि देलक। ने कोनो खुरलुच्च नेनाक ध्यान हमरापर गेलैक। नहि तँ हम शुरूएमे गेल घर छलहुँ ।

हमरा स्वयं बहुत आश्चर्य भेल छल जखन बीज माटिमे गलि कए छोटसन पम्ह बाहर भेल। क्रमशः ओहिमे जड़ि विकसित भेल । आर पातसभ निकलल। क्रमशः हमर आकारमे बृद्धि होमए लागल । मुदा

जहिएसँ बीजमे सँ पम्ह बाहर भेल,संकटपर-संकट अबैत रहल । हमरा तँ लगैत अछि जे भगवान स्वयं हमरा सभदिन बचबैत रहलाह,नहि तँ कहि नहि, कहिआ एहि दुनिआकेँ छोड़ि देने रहितहुँ?

हमर चिंता कोनो अस्वाभाविक नहि छल। हमरा सामनेमे पड़ोसीक नान्हिटा छौंड़ा कतहुसँ दौड़ल अएलैक आ हमरा लगपासमे रोपल कैकटा छोट-छोट गाछसभकेँ उखाड़ि देलक। हम तँ डरे काँपि रहल छलहुँ। मोने- मोन भगवानकेँ सुमरि रहल छलहुँ । हे भगवान! एहि बालककेँ सदबुद्धि दिऔक। कहुना हमर जान बकसि दिअए। ओकर हाथ हमरा दिस लप-लप कए रहल छल। ओ जेना-जेना हमर लगीच आएल जाइत छल,तौँ-तौँ डरसँ हमर कंठ सुखा रहल छल। मोनमे भेल जे एकरा बुझबिऐक,निहोरा करिऐक ।

“रे बौआ! तूँ एहन अगरजित किएक भेल छैं? तोरा माए-बाबू किछु बुझबै नहि छथुन की? हमरा जीबए देबह तँ काल्हि जा कए हम एकटा विशाल बृक्ष बनब । सुंदर-सुंदर फल-फूल देबह। रौदमे छाहरि देबह। नित्य भोरे शुद्ध हबाक आनन्द लए सकबह।”

मुदा ओकरा कहाँ होस रहैक जे किछु सुनत,किछु सोचत। ओ तँ रच्छ भेल जे लगे मे ठाढ़ कुकुर भुकए लागल । कुकुरकेँ भुकैत सुनि कए ओकर पिता घरसँ बाहर निकलल आ ओहि बालककेँ पकड़ि कए घर लेने चलि गेल। हम बचि गेलहुँ । लगीचमे कैकटा छोट-छोट फूलक गाछसभ खसल पड़ल छल। केओ ओकर हाल-चाल नहि लेलक। माटि-पानि बिना ओ सभ मौला गेल आ साँझ होइत-होइत निष्प्राण भए गेल। एहि तरहक घटनासभ होइते रहैत छल। हम कोना बचैत रहलहुँ,कोना

एतेकटा भए सकलहुँ से सोचि बहुत आश्चर्य लागि रहल अछि। अपना-आपमे ई एकटा अविस्मरणीय अनुभव अछि जे चाहिओ कए हम बिसरि नहि सकैत छी। रहि-रहि कए हमरा ओ बातसभ मोन पड़िते रहैत अछि।

हमर जीवन तँ आत्मरक्षार्थ कएल गेल संघर्षसँ भरल अछि। मुदा ककरा कहबैक अपन मोनक बात? सभ तँ अपनेमे परेसान अछि। संयोगसँ आइ तूँ भेटि गेलह। मोनमे अटकल बातसभ भादवक बाढ़िक पानि जकाँ निकलि रहल अछि। रुकबाक नामे नहि लैत अछि। आखिर दुखो सहबाक एकटा सीमा होइत छैक। मुदा धैर्य बनेने रहलासँ नीको दिन देखबाक मौका अबिते छैक। हमर सामनेक मकानमे नव किरायेदार आएल। ओ गाछ-बृक्षक प्रेमी छल। ओकरा अएलाक बाद तँ जेना हमर राजयोग आबि गेल। हमरे नहि लगपासक सभगाछ-बृक्षसभक समय आनन्दमे बीति रहल छल। ओ अन्हरोखेमे हमरासभकेँ भरल सीसी पानिसँ नहा दैत छल। जड़ि कोरिअबैत रहैत छल। ओहिमे समय-समयपर खाद-पानि दैत रहैत छल। तकर बाद तँ हमसभ तेना ने फनफनेलहुँ जे की कहिअह?मासे दिनमे हमरसभक रूप-रंग बदलि गेल। ओ नित्य भोरे अबितए,हमरासभकेँ नमस्ते करितए। एक-एकटा गाछ लग जा कए हाल-चाल पुछितए। गजब आदमी छल ओ। द्वारिसँ जखने ओ बाहर निकलैत हमसभ प्रसन्नतासँ हिलए-डोलए लगैत छलहुँ। हमर पड़ोसी गाछ तँ मधुर-मधुर गीत गाबए लगैत छल। हबामे ओ गीत खन-खन करैत तेना ने पसरि जाइत छल जेना कि बिरजू महराजक नृत्य भए रहल होइक। की महमही रहैत छल। ओ अबितए, बेराबेरी सभ गाछमे पानि ढारितए,खाद दितए। नीक मौसम आ ओकर सेवासँ

हमरसभक स्वास्थ्य ततेक नीक भए गेल जे नवागन्तुकसभकेँ चिन्हनाइ मोसकिल भए गेलैक। ओ सभ आश्चर्यचकित भए पुछैत-

"ऐँ! ई गाछ एहिठाम कतएसँ आबि गेल?"

ओ किरायेदार से सभ सुनि कए बहुत गौरवान्वित होइत छल। अपन कारी झमटगर मोछपर हाथ फेरैत छल आ बाजि उठैत-

"एतहि छलैक । मरक मान रहैक। खुरलुच्च छौंड़ासभ एकरासभकेँ परेसान केने रहैक। हम जहिआसँ अएलहुँ एकरसभक हालति बदलि गेलैक।"

ओहि किरायेदारक सेवासँ हमरसभक तेजीसँ प्रगति होइत रहल। सालभरिक भीतरे हमसभ कैकगुणा बढ़ि गेलहुँ । मुदा की कहिअह? ओहि रातिक बाद सोचिए कए आत्मा काँपि उठैत अछि?दूपहर रातिमे कतहुसँ चिकरैत-भोकरैत एकटा साँढ़ हमरासभ दिस आबि रहल छल। अन्हरिआ राति छल,मेघ से लागल छल। कोनो क्षण वर्षा शुरू भए सकैत छल। रहि-रहि कए बिजलौका चमकि रहल छल। एहनमे जहाँ बिजलौका चमकल कि ओहि साँढ़केँ लगीचेक एकटा गाछसँ ढुसि लड़ैत देखलहुँ । एक तँ मौसम गड़बड़ छल। अन्हड़से उठि गेल छल। ऊपरसँ ओ साँढ़ कहि नहि कहाँसँ आबि गेल छल। एहने माहौलमे किछु चोरसभ किरायेदारक घरमे चोरी करबाक फिराकमे छल। ई तँ रच्छ भेल जे ओ साँढ़ एकटा गाछमे जोरसँ धक्का मारलक। ओ गाछ तँ अन्हड़मे अपने उखड़ि गेल छल। साँढ़क टक्कर मारिते हरहरा कए खसि पड़ल । किरायेदार धरफरा कए उठल । ओ अपन केबार दिस बढ़ल। हल्ला सुनि कए चोरसभ इएह-ले ओएह-ले भागल। बचि गेल

किरायेदार। ओ तँ बचि गेल मुदा हमर पड़ोसी गाछ तँ बरबादे भए गेल। ओएहटा नहि,लगपासक कैकटा गाछक तेहने हाल भए गेल छल। आब ओ हमरा दिस बढ़ल आबि रहल छल। हमर तँ रोआँ ठाढ़ भए गेल। भेल जे गेलहुँ । एतबेमे ओ किरायेदार ओहि साँढ़पर जुमा कए लाठी फेकलक। लाठी ओकर सींगमे लगलैक। दर्दसँ भोकारि पारैत ओ ओहिठामसँ भागल। हमर जानमे-जान आएल। एहि तरहें ओहि संकटसँ बचि गेलहुँ हम,नहि तँ गेल छलहुँ । हमर आस्तित्व सदा,सर्वदाक हेतु समाप्त भए गेल रहैत। भोरे पड़ोसी गाछसभक दुर्दशा देखलहुँ । रहि रहि कए कानबाक मोन होइत छल। कहुना कए अपनाकेँ संयत केलहुँ। सोचैत रहलहुँ जे जीवनमे धैर्य राखब बहुत जरूरी अछि। जे गेल से गेल। मुदा जे बाँचल अछि तकरे ने आब भार लेबक हेतैक। आखिर ई दुनिआ चलतैक कोना?

असलमे ओ किरायेदार बृक्षप्रेमी छल। हमरा लगपासमे खाली जमीनसभमे ओ तरह-तरहक गाछसभ रोपि देलक। देखिते-देखिते ओ इलाका फल-फूलसँ सुसज्जित गाछसभसँ भरि गेल। माहौलम आनन्दमय भए गेल। लगैत छल जेना स्वर्गमे पहुँचि गेल छी। किछु दिनक बाद किरायेदारक बेटीक बिआह रहैक। ओकर घर पाहुनसभसँ भरि गेल छल। सभ पाहुनकेँ ओ हमरासभ लग अनैत। अपन गुण-गान करैत जे केना ओ ओहिठामक माहौल बदलि देलक। बातो सही रहैक। ओ असगरे ततेक तरहक गाछसभ रोपि देने छल आ तकरासभकेँ ततेक सेवा केने छल जे ओहि स्थानक दृश्ये बदलि गेलैक। ओकर बेटीक बिआहक समय जेना जेना लगीच आबि रहल छल,तेना-तेना ओहिठाम

गीत-नाद होइत रहैत रहल छल। गीतेसभसँ बुझाएल जे ओ पकिआ मैथिल छल। कार्यक्रमक शुरूमे जय-जय भैरवि गीत अबस्से गाओल जाइत ।

बिआहक दिन तँ हमरा चमका देने रहए। रंग-विरंगकेँ बिजलीक वल्वसभ लगा देल गेल छल। लाल-पिअर,हरिअर वल्वसभ भुक-भुक करैत रहैत छल। हमर पात-पातमे रोशनी कए देने रहए। सभसँ नीक तखन लागल जखन ओहि कनिआक बिआह गाछसँ करेबाक बिध कराओल गेल। हम तँ रोमांचित भए गेल रही। केना ने होइतहुँ? एहन सुन्दरि कनिआ आ रंग-विरंगक गीत गबैत महिलासभ हमरा तेना ने प्रभावित केलक जे कथुक होस नहि रहल । तथापि मोन बहुत प्रसन्न रहए , आनन्दमय रहए । निस्सन्देह कनीके काल लेल सही,हम वर तँ बनिए गेल रही,सेहो एहन सुन्दरि कनिआँक ।

बिआहक साल भरिक भीतरे किरायेदारकेँ नातिक जन्म भेलैक। ओ सभ पूरा परिवार हमर तिरपेच्छन केलक । हमर चारूकात घुमैत काल ओ सभ आपसमे गप्प करए-

“ई गाछ बहुत शुभ अछि। एकर नीकसँ सेवा कएल करू।”

तकर बाद तँ हमर भाग्य चमकि गेल । ओ सभ पूरा परिवार हमरा भोरे-भोर दूधक ढार देबए लागल । तरह-तरहक फूल-फलसँ हमर चारूकातक जगह पाटल रहैत छल। क्रमशः ई समाचार सौंसे इलाकामे पसरि गेल। लोकसभ तरह-तरहक कबुला करैत छल। अपम मनोकामना पूरा हेबाक हेतु गाछमे गिरह बान्हैत छल। देखिते-देखिते हमर कैकटा डारि एहन-एहन पोटरीसभसँ भरि गेल। जेमहरे देखू तेमरे

पोटरी लटकल रहैत छल। हमरा से सभ नीक लागए से बात नहि छल। मुदा करबे की करितहुँ? बरदास करैत रहलहुँ । लोकोसभ अपन-अपन कबुला-पातीमे लागल रहल।

लगपासमे कैकटा गाछ भए गेलासँ हमरासभक समय नीकसँ कटि जाइत छल। दिनभरि तँ लोकक आबाजाही लागले रहैत छल। मुदा रातिक एकान्तक फएदा हमसभ नीकसँ उठाबी। राति भरि हम आ हमर पड़ोसी गाछ आपसमे बतिआइत रहितहुँ । हमर पड़ोसी गाछ कैक बेर मनुक्खक खिधांस करितए।

“सएह कहू । ई सभ केहन मूर्ख अछि। हमसभ एकरासभकेँ सभ तरहेँ सुखे दैत छिऐक। तथापि ओ सभ गाछ काटबासँ चुकैत नहि अछि। कोनो बहन्नाटा चाही। ककरो पैघ घर बनेबाक छैक तँ ककरो सड़कक निर्माण करक छैक। की सहर, की गाम सभठाम इएह हाल अछि। परिणाम देखिए रहल छी। पर्यावरण संतुलन बिगड़ि गेल अछि। ने वर्षाक कोनो ठेकान रहैत अछि ने गर्मीक कोनो सीमान ।”

ओहि राति एहिना हम अपन पड़ोसी गाछसँ बतिआइत रही कि लगीचेक गामक एक सएसँ बेसीए लोकसभ एकटा लासकेँ उठओने चलि आएल । बीच-बीचमे ओ सभ कहितए-

“राम नाम सत्य है।”

ओहि मुरदाकेँ जरेबाक हेतु हमर पड़ोसी गाछक कैकटा डारि काटि देलक। हमर पड़ोसी कलपैत रहि गेल। हम बुझिऐक ओकर दुख। मुदा कइए की सकैत छलहुँ ? हम तँ अपने डराएल रही। कहीं हमरे ने काटि दिअए? ओकरासभक हाथमे कुरहड़ि देखितहि हमरा लागए जे

हृदयाघात भए जाएत। कहुना कए ओ राति बितओलहुँ । सारापरसँ उठैत धुआँसँ हमर गत्र-गत्र भरि गेल छल। मुदा उपाये की छल? जखन ओ सभ पँचकठिआ दए ओहिठामसँ बिदा भेल तँ हमर जान मे जान आएल। हम बड़ी जोरसँ साँस लेलहुँ ।

जखन लोकसभ मुरदा जरा कए चलि गेल तँ हम अपना भरि पड़ोसी गाछकेँ बोल-भरोस देलिऐक । मुदा ओ तँ हतप्रभ छल। सौंसे गाछ लहुआन भेल छल। राति भरि ओ किछु नहि बाजल। भोर भेने भगवान सूर्यक लालिमा जखन सौंसे पसरल तँ ओ गाछ कनीक आश्वस्त भेल । चारि -पाँच दिनक बाद फेर किछु गोटे ओहिगाछ तर पहुँचल। ओ सभ दे दनादन दे दनादन गाछकेँ काटए लागल। ओहि आदमीक श्राद्धक हेतु भोजक तैयारी भए रहल छल। जेना-जेना कुरहरि ओहि गाछकेँ कटैत गेल तेना-तेना हमर मोन पीड़ासँ भरैत गेल। ओहि गाछक आत्मा जाइत-जाइत हमरासँ गला लगबाक हेतु आतुर छल। अपन मोनक दर्द हमरासँ बाँटए चाहैत छल। अपन भरि ओ बहुत प्रयास केलक जे कुरहरिक आघात कनी कम होइक जाहिसँ ओ अन्तिम इच्छा हमरा कहि सकए। मुदा से सभ किछु नहि भए सकल। कुरहिरिक आघात बढ़िते गेल आ ओ गाछ धराम दए खसि पड़ल । हमर हृदय चित्कार कए उठल। अन्याय,अन्याय,घोर अन्याय । जारनिक हेतु सौंसे गाछकेँ काटि देलक। जाइत-जाइतो ओ गाछ उपकारे करैत रहल। मुदा लोकसभ तकर किछु महत्व नहि देलक। एहि तरहेँ कोनो-ने-कोनो बहन्ना ताकि-ताकि हमर लगपासक सभटा गाछकेँ कटैत रहल।

आब हम फेर असगर भए गेल रही। दिनभरि अपनाकेँ बचबएमे लागल रही। यदि केओ अबैत देखाइत तखन बकार बंद भए जाइत । हमर एक-एकटा पात गुम्म पड़ि जाइत । होअए जे कहीं हमरो ने काटि दिअए। ई तँ एकटा संयोग मात्र थिक जे हम बाँचि गेल छी। सालक-साल ओहि गाममे भए रहल घटना-दुर्घटनाक प्रत्यक्षदर्शी बनि कए रहि गेल छी। असगर,निरंतर एकांतमे आत्मलीन रहैत छी । एक दिस मनुक्खक दिन-राति बढ़ैत महत्वाकांक्षा आ तेँ निरंतर भए रहल प्रकृतिक दोहन। हालति एतेक खराप भए गेल अछि जे समयपर किछु नहि होइत अछि ने वर्षा ने रौद । गर्मी तेहन भीषण होइत अछि जे लगैत अछि सभकिछु स्वाहा भए जाएत। पोखरि-इनारसभ सुखा रहल अछि। चापाकल धरिमे पानि नहि आबि रहल अछि। एहनमे देखा चाही हम कतेक दिन बाँचल रहि जाइत छी?

समाधान

कखन ने भोर भए गेलैक। लोकक आबाजाही शुरू भए गेल। जन-बनिहारसभ खेतपर चलि गेल। मुदा हम अखन धरि एककप चाहक बाट ताकि रहल छी। ओसारापर एसगरि कुर्सीपर बैसल छी। कहए लेल बेटा अछि,पुतहु अछि तथापि ई हाल अछि। जखन दोसर कोठरीमे बगलमे रहैत हमर पुतहुकँ कोनो मतलब नहि छनि तखन अनकर कथे कोन?

"आखिर एना भेल किएक?"

"की कहू?"

"कहब नहि तँ बुझबेक कोना?"

"तखन सुनू।"

पारिवारिक परिस्थिति कमोबेस सभठाम एक्के रंग भए गेल अछि। संपन्नो घरक बूढ़सभ अपने परिवारमे उपेक्षित अछि। सभ किछु अछैतो अनाथ अछि। हमर एकटा बेटा अछि-सुनील। वायुसेनामे काज करैत छल। जखन कखनहु समय भेटैक सभसँ पहिने फोनपर हमरेसँ गप्प करैत छल। मुदा हमर पुतहुकेँ सेहो नीक नहि लगलनि। फोन अबैक कि फोन लेने बारी चलि जाथि। जतेक मोन होनि बतिआथि। हमरा विरुद्ध ओकर कान भरथि। जखन कखनहु सुनील हमरासँ गप्प करबए कहैत तखन किछु बहन्ना बना दितथि। एहन बात नहि छैक जे सुनील बुझैक नहि। मुदा ओतेक फटकीसँ ओ करबे की करितए? चुप रहि जाए।

सुनीलक पत्नीकेँ बहुत दिन धरि कोनो संतान नहि भेलैक। की-की ने केलक। बाबा बैद्यनाथक दरबारमे कैक बेर हाजिरी लगओलक। आखिर बाबा ओकर बिनती सुनलखिन । ओकरा एकटा बेटी भेलैक । सुनील ओकर जन्मसँ बहुत खुस भेल छल। सभकेँ कहने फिरैक-

"भगवती अएलीह अछि। आब हमरसभक दिन घुरि जाएत ।" सदिखन ओकर चिंता करैत रहैत, ओकर हाल-चाल लैत रहैत । मुदा ओकर प्रसन्नता बेसी दिन नहि रहि सकलैक । समय साल एहन भेलैक जे सुनील कोनो कारणसँ वायु सेनामे चिकित्सकीय रूप सँ अयोग्य भए गेल । ओकरा वायुसेनासँ समयपूर्व छाँटि देलकैक। ओ वापस अपन घर चलि आएल । ओकर टांगमे किछु दिक्कति रहैक जे क्रमशः बढ़िते गेलैक। हालति तेहन खराप भए गेलैक जे ओकर चिकरब-भोकरब सुनि कए सौंसे गाम जागि जाए। केओ किछु,केओ किछु परामर्श दैत रहलैक। डाक्टरी इलाजसँ किछु फएदा नहि भेलैक । अंतमे गामक लगीचेमे एकटा बैदजी रहथि। ओ दबाइ केलखिन। तकर बाद सुनीलक हालतिमे सुधार भेलैक , दर्द कम भए भेलैक । मुदा टांग झखाइते रहलैक । क्रमशः ओ लगपासमे टहलनाइ शुरू केलक । अपन नित्यकर्म स्वयं कए लिअए। मुदा बहुत परिश्रमबला काज करबाक स्थिति नहि रहैक।

जहिआसँ सुनील गामे रहए लागल ओकर घरबाली आ ओकरामे दिन-राति खटपट होइते रहैत छल। तकर मूल कारण आर्थिक छल। बीचमे सुनील दुखित परि गेल। ओकर इलाजमे सेहो बहुत खर्चा भेलैक । सुनीलकेँ नौकरी छुटि गेलाक बाद परिवारक आर्थिक स्थिति सेहो खराप भए गेलैक। ओकरा वायुसेनासँ किछु पेनसन भेटैक । ओएह

सभ गोटेक अवलंब रहैक । स्वास्थ्यमे सुधार भेलाक बाद सुनील गामे मे दोकान खोलि लेलक। क्रमशः दोकानक बिक्री बढ़ए लगलैक। घरक हालति सेहो सुधरए लगलैक । जेना-जेना घरक हालति नीक होमए लगलैक, हमर पुतहु हमरा आर तंग करए लागलि। नित्य किछु-ने-किछु बहन्ना बना कए झगड़ा केनाइ शुरू करैत । हमर जीनाइ मोसकिल भए गेल। आखिर ओ हमरासँ भिन्न भए गेलि। एक्के घरमे हमर चुल्हा फराक भए गेल । साँझ पड़लापर हमर कोठरीमे बिजली नहि रहैत छल। हमर पुतहु ओकर बिजलीक लाइन काटि देने रहैक। अन्हारमे पुआरक धधराक इजोत कए हम भानस करी। ओहनेमे भोजनो करी । हम एसगरि कखनहु भोजन बनाबी,कहिओ ओहिना भुखले पेटे सुति रही। मुदा ओ कहिओ नहि पुछैत जे हम खेबो केलहुँ कि नहि। सुनीलकेँ ओ ततेक दबओटमे राखए जे बेचारा किछु नहि बाजि सकए।

हँ, तँ चाहक बात शुरू भेल छल। भोरक समय छलैक, चाहक अमल जोर केने रहए । आर कोनो उपाय नहि देखि आखिर अपने उठैत छी। स्टोभमे हबा भरैत छी,ओकरा जरबैत छी,ओहिपर चाहक केतलीमे दूध,पानि,चिन्नी आ चाहक पत्ती बरकबाक हेतु छोड़ि दैत छी। सामने पानिक चापाकलपर पुबारिगामबाली देखाइत छथि । ओना तँ ओ हमरा देखितहि अपने आबि जाइत छलीह । मुदा आइ की भेलनि? हमरा दिस देखितो नहि छथि?जरूर हमर पुतहु किछु कहने हेतनि। ओ अछिए एहने। हम कोना दुखी रही,हमरा कोना कष्ट होअए ताही ब्योंतमे लागल रहैत अछि। कोनो जन्मक शत्रु रहल होअत? कोनो हमरे ई हाल अछि

से बात नहि थिक। घर-घर ओएह परिस्थिति देखना जाइत अछि। जखन पुबारिगामबाली नहिए तकलीह तखन हमही हुनका हाक देलिऐनि।

“कथीमे लागल छी? चाह बनि गेल अछि। आबि जाउ। दुनूगोटे संगे चाह पिअब।”

ओ किछु उत्तर नहि देलीह। इसारासँ किछु बुझेबाक प्रयास केलीह आ चलि जाइत रहलीह।

“सएह कहू? हिनका की भेलनि? केहन बढ़िआँ भोर-साँझ आबि जाइत छलीह, हमसभ आपसमे दुख-सुख बतिआ लैत छलहुँ । मोन हल्लुक भए जाइत छल। मुदा आब की होएत?आइ तँ ओहो रस्ता बदलि लेलनि।”

ताबे चाह खौलि गेल छल। हम चाह छानि लैत छी । आइ केओ संगे नहि अछि । तेँ दुनूकप चाह अपने पिबि लैत छी ।

असलमे काल्हि हमरा पुतहुक संगे बड़ी जोर झगड़ा भेल छल।

“तूँ हमर अदखोइ-बदखोइ अनकासभ लग करैत रहैत छैं । आब देखै छिऔक तोरा लग के टपै छौ।”

-पुतहु गरजलैक ।

हम अपना भरि सफाइ देलिऐक-

“हम किएक किछु कहबैक। जखन दूगोटे बैसतैक तँ किछु-ने-किछु बतिएबे करतैक । तकर माने तँ ई नहि छै जे तोरे बारेमे गप्प हेतैक।”

“बेसी फटर-फटर नहि कर। हम सभटा बात अपने काने सुनलहुँ अछि । आइ आबए दही ओकरा। नओ-छओ भइए कए रहत।”

“बड़ चललाह अछि नओ-छओ करए बाली। बेटा हमर अछि आ हुकुम तूँ बजेबह से कतेक दिन चलतह?”

“जेहन लुरिगर बेटा ने।”

हमरा दुनूगोटेमे एहिना संवाद होइत रहल। केओ हारि मानबाक हेतु तैयारे नहि छल। पुबारिगामबालीक कानमे ई बात सभ गेलनि। एहिसँ पहिनहु हुनका हमर पुतहु कैक बेर फज्झति कए चुकल रहैक। आब ओ निर्णय कए लेलक जे हमरा आङन दिस अएबे नहि करत। तकरे परिणाम आइ देखा रहल छल।

पहिने चारिटा बुढ़िआसभ भोर आ साँझमे चाह पीबाक हेतु हमरा लग अबैत छलि। चाहक संगे सभ गोटे आपसमे गप्प-सप्प करैत छल,हँसी ठ्ठा होइत छल। समय नीकसँ बीति जाइक। मुदा हमर पुतहुकेँ से पसिंद नहि रहनि। ओ तेहन-तेहन बात कहथिन जे बुढ़िआसभ बेराबेरी हमर आङन अएनाइ छोड़ि देलक। पुबारिगामबाली तैओ अड़लि रहलीह। सभकिछु सहिओ कए हमरा लग अबैत-जाइत रहलीह। मुदा काल्हि साँझमे चापाकल लग हुनका हमर पुतहु भेटि गेलखिन। ओ हुनका सभक समानेमे दस हजार फज्झति केलकनि। बात ओतबोसँ नहि बनैत बुझेलनि तखन हुनका बेटा लगा कए सपथ देलखिन।

“हमरा आङन जे आएत तकर बेटाकेँ...।”

ई बात हुनका असह्य भए गेलनि। तत्काल हुनका किछु उत्तर नहि देलखिन। मुदा तकर बाद ओ हमरा लग बैसनाइ छोड़ि देलीह।

हमर चाह कखन ने समाप्त भए गेल। तथापि,हम ओतहि बैसल छी। अकास दिस एकटक देखि रहल छी। अकासक अनन्त शून्य जकाँ हमरो जीवनक एकान्तक कतहु अन्ते नहि बुझाइत अछि। ककरा कहबैक अपन मोनक बात,कँ बाँटत हमर सुख-दुख? सभ तँ अपनेमे बेहाल भेल अछि। ओ सभ अबैत छलीह तँ किछु समय नीकसँ बीति जाइत छल। आब कोन उम्मीदपर एतेकटा दिन बितत?

मोन पड़ैत अछि साबिकक ओ समय । कतेक रमन चमन रहैत छलैक एहि आङनमे । सदिखन हँसी ठट्ठा होइते रहैत छल। लगबे नहि करितए जे केओ फराक अछि। जकरा जाहि वस्तुक प्रयोजन होइक से दोसर घरबैआसँ भेटि जइतैक । राति-बिराति कखनहु यदि पाहुन अबैत तखनहु कोनो वस्तुक कमी नहि रहैत । सभ एक-दोसरकेँ मदति करैत। आबो ओएह आङन अछि,ओएह घर अछि,मुदा लोकसभ बदलि गेल। पुरनका लोकसभ चलि जाइत रहल। एकटा हमहीं कौआ जकाँ बैसल रहैत छी। अबैत-जाइत लोकसभकेँ देखैत रहैत छी । मुदा ककरो ई चाँकि नहि रहैत छैक जे बुढ़िआक की हाल छैक? समय-समयक बात छैक ।

हमर एक-एक दिन पहाड़ सन बीति रहल छल। ने केओ लोक भेटए जे ककरो अपन मोनक बात कहतिऐक,ने कतहु जा सकैत छलहुँ। सामने दरबाजाक कोनटापर महादेवक मंदिर छल । कखनहु ओहिठाम ससरि कए जइतहुँ जे साइत केओ भेटि जाएत। मुदा ई की? हमरा अबैत देखितहि मंदिर सुन्न पड़ि जाइत। ओहिठाम लोकसभ ससरि कए कात

भए जाइत । मोन तँ होअए जे मंदिरक देबालसँ माथ फोड़ि ली। मुदा सेहो करबाक साहस नहि होअए। अपने मोन कहए –

"लगे मे महादेव छथि। हुनके गोहरबिअनु। ओएह छथि मुक्तिदाता! आर ककरो आशा व्यर्थ।" ओहिठाम ठाढ़े-ठाढ़ महादेवकेँ गोहराबए लगलहुँ। मुदा हुनकापर किएक कोनो असरि हेतनि?

"धुर्! महादेवकेँ कोनो अहींक सुनबाइ थोड़बे करबाक छनि जे नित्य अहाँक बाट तकताह? "

"तखन कतए जाइ? के सुनत एहि बूढ़क बात?"

"बूढ़क हितक रक्षाक हेतु कानून बनि गेल छैक?"

"मुदा कानून ककरापर लागू होएत? से करत के? अपने हाथे अपन बेटाक जबह के करत?"

"तखन पड़ल रहू नरकमे।"

तरह-तरहक बात मोनमे अबैत रहल।

एतबेमे की भेल की नहि,हम ठामहि खसि पड़लहुँ। होस आएल तँ पुबारिगामबाली हमरा थेने ठाढ़ि छलीह । ओ हमरा बिना पुछने हमरा अपना संगे लेने चलि गेलीह । हमरा एतेक सुधि-बुधि नहि रहए जे किछु कहितिअनि,हुनका रोकितिअनि,कहितिअनि-

"हमरा अपन हालपर छोड़ि दिअ। हम जेना छी से हमर भाग्यक दोष । एहि लेल अहाँ किएक झंझटिमे पड़ि रहल छी?" मुदा हमरा किछु बाजल नहि भेल। हम एकटक हुनका देखैत रहलहुँ । साइत महादेवक इएह इच्छा रहल होनि?

सौंसे गाममे ई बात पसरि गेल। बेरा-बेरी सभ पुबारिगामबालीक आङनमे हमर हाल-चाल पुछए पहुँचि गेल। हम ककरा की कहितिऐक? किछु कहबाक प्रयोजनो नहि रहैक। मुदा हमर पुतहुकेँ बरदास नहि भेलैक जे हम पुबारिगामबालीक आङन चलि जाइ। ओ हहाएल-फुलाएल पहुँचि गेलि ओहि आङन आ पुबारिगामबालीकेँ जे से कहए लागलि। थोड़े काल धरि तँ ओ सुनैत रहलीह,मुदा बरदासोक सीमा होइत छैक। असलमे हुनकर कोनो गलती रहबो नहि करनि। यदि हम मंदिरपर बेहोस नहि होइतहुँ तँ साइत ओ हमरा अपना संगे नहि अनितथि। ने ई कांड होइत । आब तँ जे हेबाक छल से भए गेल। जखन हमर पुतहु बजिते रहि गेलि,किछु अनुचित बातो बाजि गेलीह तखन पुबारिगामबाली बाजि उठलीह-

“एतेक जे बाजि रहल छी से पहिने पुछि तँ लिअनु जे बात की भेलैक?”

“हमरा सभ बात बुझल अछि। अहाँ आगिमे घी देबाक काज नहि करू।”

“हद भए गेल। हम की कए रहल छी? अहाँसभ अपन गलतीकेँ नहि देखि रहल छी । अनेरे हमरापर आरोप लगा रहल छी।”

हम ई बातसभ सुनि रहल छलहुँ । आब आओर नहि सुनि सकलहुँ । हम अचानक चिकरि उठलहुँ-

“खबरदार! यदि एक शब्द बेसी बजबैं तखन .. ”

“तखन की करबही से कनी बुझिऐक।”

"तुरंत भाग एहिठामसँ ...। आब हमरा-तोरा किछु संबंध नहि...।"

"बड़ बढ़िआँ। देखैत छी तूँ एहिठाम कतबा दिन रहि सकबए।"

"एहिठाम रही कि नहि रही, मुदा तोरा संगे हरगिज नहि रहब।"

हमर पुतहु चिकरैत-भोकरैत वापस अपन आङन चलि गेलि।

एकदिन बीतल,दू दिन बीतल,तीन दिन बीतल । मुदा हमरा घरसँ केओ हमर हाल-चाल लेबए नहि आएल । हमरा उम्मीद रहए जे सुनील जरूर आएत आ हमरा वापस अपन घर लेने जाएत। जखन ओहो नहि आएल तखन अपने मोनमे होअए लागल जे कम सँ कम भगवती घरक कुंजी हुनकासभकैँ दए अबिअनि। भगवती हमरे कोठरीमे छलीह। ओकर कुंजी हमर साड़ीक खूँटमे बान्हल रहैत अछि। भगवतीक कोन दोष? हुनकर पूजा तँ होएबेक चाही। तेँ हम अछताइत-पछताइत अपन दरबाजापर पहुँचलहुँ । सुनील ओसारापर खाटपर पड़ल छल। हमरा आएल देखबो केलक। मुदा कथी लेल टोकत। हारि कए हम ओकरा लग गेलहुँ । कनी काल ठाढ़ रहलहुँ । तैओ ओ करोट नहि बदललक। केबारक पाछूसँ हमर पुतहु देखि रहल छलि। से बात सुनीलकैँ बुझल रहैक । हमरा बहुत खराप लागल। आइ अपने घरमे हम आन भए गेल छी। आखिर हम कोठरीक कुंजी फेकि देलहुँ आ वापस पुबारिगामबालीक आङन पहुँचि गेलहुँ । ओतए पहुँचले छलहुँ कि सौंसे गामक बुढ़िआसभ बेरा बेरी आबि गेल। सुनीलक व्यवहार नुकाएल नहि रहि गेलैक। सभ बुझलकैक। सभ छिआ-छिआ केलकैक।

“एहन घटना ककरो संगे भए सकैत अछि। एकर समाधान करबाक चाही।”

-एकटा बुढ़िआ बाजलि।

“सही कहि रहल छी। एना तँ केओ बूढ़ अपन घरमे नहि रहि सकत।”-दोसर बुढ़िआ बाजलि।

“हमरासभकेँ स्वयं किछु करए पड़त।”-तेसर बुढ़िआ बाजलि।

बुढ़िआसभमे ई बात गनगना गेलैक। सौंसे गाममे जेना उजाहि उठि गेल । ओही दिन चारि बजे पुबारिगामबालीक ओहिठाम गामक सभ बूढ़ एकत्रित भेल। सभ मिलि कए एकस्वरमे हमर समर्थन केलक । ततबे नहि ,ई निर्णय भेल जे गामक सभ बूढ़ आपसमे मिलि कए रहत। सभ एक-दोसरक मदति करत। नित्य भोर-साँझ सभ बूढ़ महादेव मंदिरपर बैसार करत,भजन-कीर्तन करत। सभक सामुहिक भोजन ओतहि बनत।

एकर बाद तँ गामक बूढ़सभमे हर्षक माहौल बनि गेल। हमरा फेर कहिओ पुतहुक मुँह नहि ताकए पड़ल। केओ चाह आनि रहल अछि,केओ जलखै बना रहल अछि,तँ केओ भोजनक ओरिआनमे लागि गेल अछि। सभ किछु समयपर सुलभ भए जाइत छल। केना समय बीतए से पतो नहि चलए।

19.01.2024

बेटीक अधिकार

एकाँएक बड़ीजोरक हल्ला भेलैक । सामान्यतःगोपी बाबूक ओहिठाम शांति रहैत छल । केओ गामपर रहिते नहि छलनि तँ किछु होइतैक किएक? मुदा ओहि दिन सभ छगुन्तामे रहए। हल्ला सुनि कए बहुत लोक एकत्रित भए गेल। सभ अकचकाएल ,एक दोसरक मुँह देखैत ।

“आखिर भेलैक की?”

“शंकरक बहिन रानी आएल छैक । ओकर पाछू लागल शंकर सेहो सपरिवार आबि गेलथि । तकर बाद की भेल की नहि,रातिएमे हल्ला होमए लागल । दुनू भाइ-बहिनमे विवाद भए रहल छनि।”

“से किएक?”

“ध्यानसँ सुनिऔक,अपने बुझएमे आबि जाएत।”

“तोहर बिआह बहुत नीकसँ भए गेलौक। ओहि लेल बाबू कतेक खर्च केलथि। तखने तोरा नीक घर-वर भेटलौक ।आब एतेक दिनक बाद नैहरक संपत्तिमे हिस्सा कथीक भेटतौक?”

“से की तोरापर खर्चा नहि भेलनि? तोरा पढ़ाइमे हमरासँ कैक गुणा बेसी खर्चा केलनि बाबू। मुदा तूँ पढ़बे नहि केलैं। पढ़ाइ छोड़ि आर सभ काजमे तोहर मोन लगैत छल।एहिमे हमर कोन दोष ?जहिना तूँ मा-

बाबूक संतान छहुन,तहिना हमहूँ छी। तोरो पढ़बामे खर्च केलखुन,हमरोमे केलथि।तोरो बिआहमे खर्चा भेलनि,हमरोमे खर्च केलथि।”

“ झूठ नहि बाज। हमर बिआहमे तँ फएदा भेल रहनि।”

“सभ झूठ। दुनू दिसका खर्चा बाबू गछलथि तखन तोहर बिआह भेल रहौक।”

दुनूगोटेक तामस बढ़िते गेलैक। एक-दोसरपर आरोप-प्रत्यारोप लगबैत रहल।

आखिर बात खुजलैक। बहिन पैत्रिक संपत्तिमे हिस्सा मांगि रहल छलि। ओकर कहब जे कानून आब बेटीओकेँ पैत्रिक संपत्तिमे बेटा जकाँ बरोबरिकेँ अधिकार देने छैक ,से ओकरा भेटबाक चाही। मुदा शंकर अड़ल अछि। किछु जमीन चुपचाप बेचिओ लेलक। से जखन रानीकेँ पता लगलैक तखन ओहो किछु जमीनक सौदा दिआदे मे केने अछि। रानी कतबो प्रयास केलक बात गुप्त नहि रहलैक। शंकरक पितिऔत श्यामे एहि बातक जनतब शंकरकेँ फोनपर देलखिन। भेलनि जखन टाका खर्च कए जमीन कीनि रहल छी तखन विवाद पढ़िछाइए कए आगू बढ़ी। से सुनितहि शंकर हबाइ जहाजसँ गाम आबि गेलाह। तकर बाद तँ जे भेल से लोक देखिए रहल अछि।

ओहि राति केओ आएल,केओ गेल तकर परिबाह ने रानीकेँ रहैक ने शंकरकेँ। ओ सभ आइ नओ-छओ कइए कए मानत। लागि तँ तहिना रहल छैक। दुनू भाइ बहिनमे झंझटि बढ़िते गेल। शंकर तमसा कए रानीक सामानसभ कोठरीसँ बाहर फेकि देलक। रानीकेँ घरसँ

बाहर ठेलि देलक आ कोठलीक केबार भीतरसँ बंद कए अपने सुति रहल। रानी राति भरि ओसारापर बैसलि रहि गेल। ओ कोनो हालतिमे अपन अधिकारसँ वंचित हेबाक लेल तैयार नहि छलि। ओ सभ समाचार अपन पति नीरवसँ कहलक । ईहो कहि देलक जे ओ भोरे ओकीलसँ भेंट करए मधुबनी जाएत आ ओ सोझे ओतहि आबि जाथि ।

रातिभरि ओसारापर बैसलि रानी बितल बातसभ मोन पड़ैत रहि गेलैक। ओसारापर बैसल-बैसल रानीकेँ मोन पड़ैत रहलैक नैहरमे बिताओल अपन वाल्यावस्थाक समय । ओ केना अपन संगीसभक संगे महादेव मंदिरपर शिवरातिक मेलामे जाइत छलि,केना गाममे ककरो बिआह-दान होइक तँ वर संगे हँसी ठट्ठा करैत छलि,केना आमक समयमे बाबूक संगे गाछी जाइत छल । एकटा बात आओर मोन पड़ैक। जखन कखनहु ओकरा शंकरमे झंझटि होइतैक तखन ओकर माए शंकरक पक्ष लए लैत छलखिन । ई बात रानीकेँ खराप लगैक। ओ बाबूसँ सिकाइति करए,मुदा ओहो चुप रहि जाथिन । रानी कनैत रहि जाइत छलि ।

ओकर माए आ बाबू शंकर आ रानीकेँ संगे फराक-फराक व्यवहार करथि । शंकर पव्लिक इसकुलमे पढ़ैत छल । ओहीठाम रानी सरकारी इसकुल जाइत छल। सेहो कहिओ गेलि,कहिओ नहि । यदि घरक काजसँ फुरसति भए जाइ तखन कहिओ काल इसकुलो चलि गेल,नहिओ गेल तँ केओ टोकनाहर नहि। तथापि रानीकेँ पढ़बाक इच्छा रहैक। मौका भेटितहि ओ किताब उन्टाबए लागैत । कैक बेर माए तमसाइतो छलखिन-

“तोरा कोन ओकालति करबाक छौक। घरक काजसभ सीख जाहिसँ सासुरमे मान-सम्मान हेतौक आ सासुर बसि सकबए।”

रानीकेँ से नीक नहि लागैक । ओ अपन मोनक बात बाबूकेँ कहनि । मुदा ओहो टरका देथिन । कैक बेर बाजिओ देथि-

“कतबो पढ़बह,हमरा दहेज तँ देबहि पड़त ।”

“मुदा हमरा पढ़एमे मोन लगैत अछि। हम इसकुल जाएब । हमहूँ हाकिम बनब।”

रानीक बात सुनि ओकर माए-बाबू हँसि देथि। मुदा ओ हारि नहि मनलक,जेना-तेना पढ़ैत रहलि। मैट्रिकक परीक्षामे ओ प्रथम श्रेणीमे पास केलक,जखन कि शंकर सभ सुविधा अछैत फेल कए गेल। तकर बाद तँ रानीकेँ बहुत उत्साह भेलैक। पिता सेहो समर्थन केलखिन । ओ आगूक पढ़ाइ जारी रखलक । रानी सभ दिन पढ़ाइमे ओअलि अबैत रहलि । क्रमशः ओ एलएलबीक परीक्षा पास कए लेलक आ ओकालति करए लागलि। ओमहर शंकर बहुत मोसकिलसँ कैक बेरक प्रयासक बाद मैट्रिक पास कए सकल । आइएमे तँ नाम लिखओलक सएहटा । बेरि-बेरि फेल होइत रहल। सभ प्रयासक अछैतो आगू किछु नहि कए सकल। हारि कए ओकरा बाबू अपन संगी केँ कहि कए ठीकेदारीक काज दिआ देलखिन।

शंकर पढ़ाइ अपने नहि केलक आ दोष माए-बाबूकेँ दिअए।

“अहींसभ हमर ई हाल केलहुँ। रानीकेँ पढ़बएमे लागल रहलहुँ ,हमरापर ध्यान नहि देलहुँ ।”

जखन कखनहु तामस होइक ,ओ माए-बाबूकेँ दस हजार फज्झति कए दैत छल। तैओ माए-बाबू सभ दिन ओकर कल्याणक हेतु चिंतित रहैत छलाह। रानीक बिआहोमे किछु खर्च नहि भेलनि। ओकर प्रतिभा देखि कए नीरव बिना कोनो दहेजकेँ बिआह केलनि। असलमे रानी आ नीरव संगे एलएलबीक पढ़ाइ केने छल। एक-दोसरकेँ पसिंद करैत छल। नीरवक परिवारोकेँ रानी पसिंद छलि। ओ सभ बिना नाकर-नुकुरकेँ ओकरसभक बिआहक सहमति दए देलनि। रानीक बिआह बिना कोनो दहेज बहुत आसानीसँ भए गेलनि। रानी सासुर चलि गेलि। ओकरा सासुरमे कोनो कमी नहि रहेक। अपनो दुनूगोटे ओकालतिसँ नीक उपार्जन कए लैत छल।

कालक्रमे रानीक माए-बाबूक देहान्त भए गेलनि। शंकर पैतृक संपत्तिपर काबिज भए गेल। रानीकेँ शुरूमे ताहि लेल कोनो परेसानी नहि भेलैक। मुदा बादमे शंकर आ ओकर पत्नी हीराक व्यवहारसँ ओ दुखी भए गेलि। शंकर आ हीरा तेहन माहौल बना देलक जे रानीकेँ नैहर गेनाइ मोसकिल भए गेलैक। यदि सभ किछु सहि चलिओ जाइत तँ ओ सभ ओकरा तरह-तरहसँ अपमानित करए लागल। बात तखन हदसँ बाहर भए गेल जखन शंकर एकदिन रानी आ नीरवकेँ अपना ओहिठाम आएल देखि साइकिलपर चढ़ि कए हाट दिस चलि गेल। दिआद-वादसभ ओकरासभक स्वागत केलनि,चाह-पान करओलनि। मुदा जाधरि हीरा ओतए छलि,शंकर घुरि नहि आएल। एकर बाद तँ रानी दृढ़ संकल्प केलक जे ओ अपन नैहरमे अपन कानूनी अधिकार लए कए रहति। चाहे जे होउक। तकर बादे ओ दस दिनक बात फेर गाम आएल

छलि। रातिमे शंकर संगे एतेक झंझटि भेलैक । होएबेक छलैक । असलमे शंकरक मोनमे सदिखन शङ्का तँ रहबे करैक। गाममे कैकटा घटना पहिनो घटि चुकल छल। बेटीसभ अपन अधिकारक लड़ाइ लड़ि रहल छलि। तकर नीक-बेजाए परिणामो भोगि रहल छलि ।

बहुत रास बितल बातसभ ओकर ध्यानमे अबैत रहलैक । एहिना ओसारापर बैसले-बैसल राति बीति गेलैक। शंकरक अपमानसँ आहत रानी भोरे मधुबनी ओकीलक ओहिठाम पहुँचि गेलि । ओकील साहेब भोरुका चाह पीबि रहल छलाह । रानीकेँ धरफराएल अबैत देखि सचेष्ट भेलाह ।

“बात की छैक? एतेक भोरे कोमहरसँ आबि रहल छी?”- ओकील साहेब रानीसँ पुछलखिन। रानी सभटा बात ओकील साहेबकेँ कहलखिन आ आग्रह केलखिन जे एहि परिस्थितिमे जरूरी कानूनी कारवाइ कएल जाए । रानीक बात सुनि कए ओकील साहेब भभा कए हँसि देलाह । फेर कहैत छथिन-

“अहाँ तँ अपने ओकील छी।”

“तेँ की?अपना सँ अपन केस लड़बामे कैक बेर भावुकता समस्या बनि जाइत छैक। तेँ हम चाहैत छी जे अहाँ हमर केस लड़ि दी।”

“कोनो हरजा नहि। मुदा ई परिस्थिति आएल किएक? अहाँकेँ तँ कोनो कमी अछि नहि। तखन नैहेरक संपत्तिक लेल झंझटि किएक कए रहल छी?”

“बात संपत्तिएक नहि छैक। जाबे माता-पिता रहथि हमरासभकेँ नैहरमे मान-सम्मान होइत रहल । आब जखन ओ सभ नहि

छथि,ओहिठाम एक्को दिनक हेतु जाएब पराभव भए गेल अछि। हमर भाए आ भौजीकेँ लगैत छनि जेना केओ शत्रु आबि गेल होअए। कनीको अनुराग नहि,अपनत्वक भाव नहि । कहू जे एनामे कष्ट कोना नहि हेतैक। आखिर नैहर तँ हमरो अछि ने । हमरो जन्मस्थान तँ ओएह अछि । ओतुके माटि-पानिमे हमहूँ बढ़लहुँ । हमरो माता-पिता ओएह छथि। अहीँ कहू सभ किछु कोना बिसरा जेतैक ।”

“मुदा न्यायालय आपसी प्रेम थोड़बे आनि सकत?”

“से जे होउक। आब रहिए की गेल अछि जे धखाउ? नेनासँ आइ धरि तँ भेद-भाव होइते रहल अछि। माए-बाबू हमर बिआह करा निश्चिन्त भए गेलाह। अपन अधिकार भेटि जाएत तखन कम सँ कम हमरा नैहरमे जेबासँ तँ केओ नहि रोकि सकत। हमहूँ अपन माटिपर सम्मानपूर्वक रहि सकब,आएब-जाएब। अपन लोक-वेदसँ भेँट-घाँट करब।”

“अपना ओहिठामक तँ परंपरा सएह छैक। बेटी बिआहक बाद सासुरमे बसैत छैक।”

“तँ की?ईहो नियम तँ लोके बनओने अछि। कोनो भगवान थोड़बे बना देलखिन। समय बदलि रहल छैक। गलत परंपराकेँ ठीक करबाक हेतु कानून बनि गेल छैक। बेटा-बेटीमे आब कोनो फरक नहि छैक। ताहि बातकेँ समाजकेँ स्वीकार करबामे दिक्कति किएक भए रहल छैक? प्रश्न हमरे नहि अछि। प्रवुद्ध लोकक कर्तव्य अछि जे ओ अपन आचरण आ काज द्वारा समाजमे एकटा सही उदाहरण प्रस्तुत करए। हमरा नैहरक संपत्ति भेटिए जाएत वा नहि भेटत से ओतेक

महत्वपूर्ण नहि अछि। जरूरी तँ ई अछि जे लोक बेटीक अधिकारक मान्यता देथि। ओहो बेटे जकाँ शिक्षा आ सम्मानपूर्ण जीवन जीबाक अधिकारी अछि। बहुत सोच-विचारक बाद हम निर्णय केलहुँ अछि। हमरा अपन अधिकार हेतु लड़बाक चाही आ हम लड़ब। तखने समाजक रुखि बदलतैक।"

आखिर ओकील साहेब केस लड़बाक हेतु तैयार भए गेलथि। थोड़बे दिनक बाद शंकरकेँ न्यायालयसँ बजाहटि आबि गेलनि। आब ओ की करितथि?अपना भरि रानीकेँ मनेबाक बहुत प्रयास केलनि। मुदा रानी अड़ि गेलि। साल भरिक बाद मोकदमाक फैसला रानीक पक्षमे आएल। सभटा पैतृक संपत्तिमे हुनका अधिकार भेटलनि। न्यायालयक निर्णयक अनुसार दुनू भाइ-बहिनमे पैतृक संपत्तिक बटबारा भेलैक।

सभ किछु भेलाक बाद एकदिन रानी नीरव संगे नैहर पहुँचलि। ओहि दिन ओकर माएक बरखी सेहो छलैक। रानी सौंसे गामकेँ सबजना भोज केलक। गौँआसभकेँ यथेष्ट बिदाइ सेहो केलथि। तकर बाद रानी सभक सामनेमे घोषणा केलक-

"एहिठाम पहिने जे किछु भेल अहाँसभकेँ बुझले अछि। तेँ ओ बातसभक चर्चा नहि करए चाहैत छी। हम ई मोकदमा संपत्तिक लोभमे नहि केने रही। अपितु, हमर एक मात्र लक्ष्य बेटीक अधिकार आ सम्मानकेँ स्थापित करबाक छल। कानून एहिना नहि बनि जाइत छैक। एकरो पाछू न्याय आ समानताक भावना रहैत अछि। मनुक्ख-मनुक्खमे भेद-भाव समाप्त करब एकर उद्देश्य अछि। फेर महिलाक संगे तँ तरह-तरहसँ अत्याचार कएल गेल अछि। धर्मक नामपर लोक स्वार्थवश

अत्याचार केँ प्रश्रय दैत रहल अछि। एहनो समय छल जखन पतिक मृत्युक बाद ओकर स्त्रीकेँ जीवित जरा देल जाइत छल । एहन अत्याचार आब नहि होइत अछि,मुदा अखनहु बहुत किछु करब बाँकीए अछि। हम ई मोकदमा जीति गेलहुँ जरूर मुदा नैहरक संपत्ति लेब हमर लक्ष्य ने कहिओ छल,ने आब अछि। हम एहि डीहपर अपन माता-पिताक नामपर एकटा अस्पताल खोलब आ एहिठामक संपत्तिसँ तकर संचालनक व्यवस्था करब जाहिसँ समस्त ग्रामबासीकेँ निःशुल्क चिकित्साक सुविधा भेटतनि। एहिठामक संपत्ति एतुके लोकक कल्याणमे खर्च होअए से हमर अभिलाषा अछि।"

ओहिठाम उपस्थित ग्रामीणसभ बहुत प्रसन्न भेलाह।सभ एकस्वरसँ बाजि उठलथि-

"बेटी होअए तँ रानी सन।"

१८।०२।२०२४

साइबर अपराध

मदनजी उच्चपदसँ सेवानिवृत्तिक बाद दिल्लीमे रहैत छलाह। संगमे हुनकर पत्नी मात्र छलखिन। ओतेकटा घरमे मात्र दूगोटे रहथि।हुनकर एकमात्र संतान शंकर आस्ट्रेलिआमे कोनो निजी कंपनीमे प्रमुख प्रवंधकक पदपर कार्य करैत छलखिन। ओ ओतहि संभ्रान्त कालोनीमे तीनमंजिला मकान कीनि लेने रहथि। आस्ट्रेलियाक नागरिकता सेहो भेटि गेल रहनि। ओहिठामक सुख-सुविधाक आगू हुनका अपन पिताक दिल्लीक घर बहुत झूस लगैत छलनि। दिल्लीक व्यवस्था सेहो हुनका पसिंद नहि रहनि। तँ ओ दिल्ली नहि आबथि। अपितु,अपन माता-पिताकेँ आस्ट्रेलिआ बजा लेथि। मदनजी सपत्नीक एक-दू बेर ओतए गेबो केलथि। मुदा हुनका ओहिठाम मोन नहि लगलनि। ओतए हुनकर पत्नी सेहो प्रसन्न नहि रहथि। एक बेर तँ हुनका साँसक गंभीर समस्या भए गेलनि। इलाजक बाद ओ कहुना कए ठीक भेलीह। तकर बादसँ ओ सभ आस्ट्रेलिआ गेनाइ बंद कए देलनि। दिल्लीए मे समय बिताबए लगलाह।

मदनजीकेँ सेवानिवृत्तिक बाद बहुत रास रुपया भेटल रहनि। पैतृक संपत्ति सेहो प्रयाप्त छलनि। तँ हुनका आर्थिक कष्ट नहि रहनि। मुदा असगर रहैत-रहैत दुनू गोटे कैक बेर परेसान भए जाथि। मोबाइल फोनपर फेसबुक,ह्वात्सअप सभमे लागल रहथि जाहिसँ किछु समय

कटि जानि।ओहने मानसिक अवस्थामे ओ एकदिन ओछाओनपर पड़ल किछु सोचि रहल छलाह कि फोनक घंटी बाजल-

“के छी?”

“हम छी शंकरन।हम वित्तीय सलाहकारक काज करैत छी।”

“से की?”

“हम अपनेक टाकाकेँ सही जगह निवेश करबाक परामर्श दए सकैत छी जाहिसँ अहाँकेँ कमे समयमे बहुत फएदा भए सकैत अछि।”

“मुदा हम बेसी टाका लइए कए की करब?जएह अछि ततबे नहि सम्हरि रहल अछि।”

“हम तकरे समाधान कहि रहल छी।”

“से कोना?”

“सभटा बूझि जेबैक।अहाँ कनी समय दिऔक ने। बेर-बेर सावधि जमा करबामे आब कोनो फएदा नहि छैक।ऊपरसँ टैक्सो भरैत रहू।हम तेहन पक्का व्योंत कए देब जे दुनू हाथमे लड्डू। अहाँ सभ दिन लेल निश्चिन्त भए जाएब।”

“अहाँ ककरो एहन फएदा दिओने होइ तँ हुनकर नाम बताउ।”

“एकटा,दूटा होथि तखन ने।एहन लोकसभक सूची बहुत नमगर अछि। तथापि जखन अहाँ कहिए रहल छी तँ हम अपनेकेँ किछु लोकक नाम पठा रहल छी।”

“छोड़ू से सभ।अहाँ अपन योजनाक बारेमे बताउ।”

“अहाँक टाकासभ पाँचसाल लेल निवेशित रहत। अहाँक टाका सभ साल अपने दोबर होइत जाएत। बीचमे यदि अहाँकेँ काज

पड़त तखन जरूरति भरि टाका निकालिओ सकैत छी। मुदा तखन टाकाक दोबर हेबाक गति कनी कम भए जाएत।"

"ई योजना तँ बहुत नीक बुझा रहल अछि।कतेक टाका लगेबाक छैक?"

"कम सँ कम एक करोड़ ,बेसीक कोनो सीमा नहि।यदि ओहिसँ बेसी लगाएब तखन पाँच सालमे बोनसमे नोएडामे दू बेडरूमक फ्लैट सेहो भेटत।मुदा से सुविधा शुरूक किछुए लोक धरि सीमित रहत।"

"ठीक छैक। टाका कोना आ कोन खातामे पठेबाक छैक?"

"हम पठबै छी। मुदा देखब।बेसी लोकमे एकर चर्चा नहि करब। यदि बेसी लोक योजनामे सामिल भए गेल तखन अहाँकेँ बोनसमे फ्लैट भेटब मोसकिल भए सकैत अछि। ओना टाका दुन्ना करबाक योजनामे तँ लागल रहबे करत।"

"हम किएक कहबैक ककरो?हमरा कोनो कुकुर कटने अछि?"

"फिलहाल हम जरूरी काजसँ कतहु जा रहल छी। एहि बीचमे अहाँ नीकसँ सोचि लिअ।जखन निर्णय भए जाए तँ फोन करब।हम आबि जाएब।"

"निर्णय कए लेलहुँ। जल्दीसँ फार्म दिअ,बैंक खाताक जानकारी दिअ।।हम बैंक जा कए टाका जमा करबा दैत छी।"

“अहाँ फारम भरबाक चिंता नहि करू।बस अपन नाम,पता पठा दिअ । बँकिए हमसभटा सम्हारि लेब।बैंक खाताक विवरण पठा रहल छी। बस टाका पठा दिऔक आ चैनक बंसी बजाउ।”

मदनजी तुरंत बैक पहुँचलाह। बैंकमे एक करोड़ ओहि खातामे पठेबाक लेल फार्म भरि कए दए देलखिन। फार्म देखितहि किरानी बाबूक माथा ठनकलैक। ओ एक बेर फारम दिस देखए , एक बेर हुनका दिस। असलमे ओ एतेक टाका एक्के बेर पठेबाक हुनकर आग्रहसँ चिंतित छल। आखिर ओ पुछिए देलकनि-

“एतेक टाका किएक निकालि रहल छी?”

“ताहिसँ अहाँकेँ मतलब?”

मदनजीकेँ तमसाइत देखि किरानी बाबू सोझे मनेजर लग चलि गेल। हुनका फार्म देखए देलकनि। फार्म पढ़ितहि मनेजर सेहो चिंतित भए गेलथि।ओ तुरंत मदनजीकेँ अपन कोठरीमे बजओलखिन।

“की बात छैक?एतेक टाका किएक निकालि रहल छी?सभ किछु ठीक अछि ने?”

“हद भए गेल। लगैत अछि जेना बैंक नहि,अपितु कोनो जासूसी अड्डापर आबि गेल छी।हमर टाका अछि,हम अपना हिसाबसँ निकाली कि राखी ताहिमे अहाँ लोकनिकेँ की परेसानी अछि?हम कोनो नेना नहि छी।फेर व्यक्तिगत बात हम अहाँकेँ किएक बताउ?जल्दीसँ एहि फार्मक अनुसार टाका पठाउ।हमर समय बरबाद नहि करू।हमरा आरो काज करबाक अछि।”

आखिर मनेजर की करितथि? हुनकर आग्रहकेँ मानि एक करोड़ टाका फार्ममे देल गेल खातामे पठा देलखिन।

मदनजी प्रसन्न मुद्रामे अपन घर लौटि रहल छलाह। भविष्यक तरह-तरक सपनासभ मोनमे घुमि रहल छलनि। चिंतो होनि जे एतेक टाका हुनका लग आबि जेतनि तखन ओ की करताह? से सभ सोचैत ओ घर पहुँचि गेलाह। फ्रीज खोलि एक गिलास ठंढा पानि पीलाह आ अखबार पढ़ए लगलाह कि फेर शंकरक फोन आबि गेलनि।

“अहाँक टाका आबि गेल अछि। जल्दीए एकरा योजनामे लगा देल जाएत। मुदा एकटा बहुत फएदाबला योजना आइए शुरू भेलैक अछि। अपनेक आज्ञा होअए तँ तकर जानकारी सेहो दी।”

“अबस्स दी। अहाँ सन हमर शुभचिंतक के अछि? सभ अपना-आपमे मगन अछि। हमरा तँ जखनसँ अहाँ भेटलहुँ,मोनमे बड़का उसास भेल अछि।”

“हमर सभक काजे समाज सेवा छैक। हम तँ अपना जोकर धन कमा चुकल छी। हमरा किछु नहि चाही,बस अपने सभक आशीर्वादटा चाही। ताही लेल हम बूढ़ सभकेँ प्राथमिकता दैत छिऐक। कारण अपने भने सभ तरहेँ संपन्न छी,संतानो छथि ,मुदा एहिठाम छी तँ असगरे। तेहनमे हमरो सभक किछु कर्तव्य तँ बनिते अछि ने।”

“आइओ-काल्हि अहाँ सन-सन लोक होइत छैक से जानि हम बहुत प्रसन्न छी। कहू,कहू नव योजनामे की छैक?हमरासभ लेल ओहिमे की सुविधा देल गेल छैक।”

"असलमे ई साठि सालसँ ऊपर सेवानिवृत्त अधिकारी लोकनिक लेल विशेष योजना आनल गेल छैक।"

"एकर की विशेषता छैक?"

"विशेषता बुझबैक तँ अपने एकरा लपकि लेबैक।"

"से की?"

"अपने यदि दू करोड़ टाका लगा देबैक ने तँ अपनेकेँ जीवन भरि दिव्यकूंज संस्था दिस सँ देखभाल कएल जाएत। रहनाइ,खेनाइ,घुमनाइ सभ मोफतमे।ऊपरसँ टाका अहाँक दोबर भइए जाएत ओहो दूइए सालमे।ततबे नहि शुरूमे दस गोटेकेँ मोफतमे विश्वभ्रमण सेहो कराओल जाएत ।फ्लैट भेटबाक संभावना सेहो रहबे करत।तेँ हम अहाँकेँ तुरंत फोन केलहुँ जाहिसँ ई अवसर हाथसँ निकलि ने जाए।"

"बहुत नीक बात।हमरा की करबाक छैक से कहू।एहन ने होअए जे देरी भए जाइ। हमही हुसि जाइ।"

"हमरापर भरोसा केलहुँ अछि तखन अहीं कोना हुसि जेबैक?"

"से तँ सत्ते।अहाँक बहुत उपकार अछि।कहुना कए काज भए जाएत तखन हम चैनसँ जीबि सकब।जल्दीसँ कहू जे कतए टाका पठेबाक छैक।"

"आब तँ आब पुरान ग्राहक भए गेलिऐक ने। बेसी किछु करबाक काज नहि। कंपनीसँ एकटा लिंक आओत।ओहिपर टिक कए देबैक आ रकम भरि देबैक।बस काज भए जेतैक।"

"बहुत बढ़िआँ।"

तुरंते हुनकर ह्वात्सअपपर एकटा लिंक अएलनि। ओ ओकरा टिक केलनि,दू करोड़ रकम भरि देलखिन।बस खेल खतम। हुनकर खातासँ सभटा टाका साफ भए गेलनि।संगे मोबाइल फोनो बंद भए गेलनि। ओ सोचलथि जे फोनेमे किछु खरापी आबि गेल होएत। जलखै केलाह,चाह पीलाह,दबाइ खेलाह आ सुति रहलाह। एक घंटाक बाद जखन निन्न टुटलनि तखनहु फोन बंदे छलनि। मोनमे कनी चिंता भेलनि जरूर ,मुदा हुनका शंकरनपर ततेक विश्वास रहनि जे ओ किछु करबाक प्रयोजन नहि बुझेलनि। किछु दिन बहुत चेनसँ समय बीतलनि। आब बैंकक झंझटि नहि छलनि।टाकासभ निवेशित भए गेल रहनि। गुजर जोगर पेनसन भेटिए जानि।बीच-बिचमे शंकरन हुनका आश्वस्तो करैत रहनि –

"अहाँक निवेशित धन बहुत तेजीसँ बढ़ि रहल अछि। जल्दीए सुभ समाचार भेटत।"

मदनजी बहुत आनन्दित भए जाथि। साल भरिक बाद अचानक हुनकर पत्नीकेँ पेटमे दर्द होमए लगलनि।डाक्टरसभ जाँच-पड़तालक बाद हुनकर पेटमे कैंसर हेबाक बात कहलक। हुनकर इलाजक लेल बहुत टाकाक काज पड़लनि।

"चिंताक कोन बात? हमर टाकासभ तँ आब ततेक बेसी भए गेल अछि जे इलाजक खर्चामे कोनो समस्या नहि होएत।"

मदनजी शंकरनकेँ फोन केलखिन।मुदा ओकर फोन बंद छल। भेलनि जे व्यस्त हेताह,अपने फोन वापस करताह।मुदा ओ कथी लेल उत्तर देतनि। ओ शंकरनकेँ बेर-बेर फोन करए लगलाह। मुदा व्यर्थ।आब तँ ओ बहुत तनाओमे आबि गेलाह।

“आब की कएल जाए? ओ फोन किएक नहि उठा रहल छथि?”

जखन शंकरनकेँ संपर्क नहिए भेलनि तखन हुनका शङ्का भेलनि। ओ बैंक गेलाह।ओहिठाम हुनकर खाता खलास भए गेल छलनि। आब की ?

मनेजरकेँ सभटा बात कहलखिन।ओ तुरंत कहलकनि-

“हम तँ अहाँकेँ पहिने कहने रही। मुदा अहाँ ध्यान नहि देलहुँ?हमसभ आब किछु नहि कए सकैत छी। तुरंत कहने रहितहुँ तखन तँ साइत ओकर भुगतान रोकि सकैत छलहुँ ।सरकार एहि लेल फोन नंबर सेहो जारी केने अछि। मुदा आब तँ बहुत विलंब भए गेल अछि। अहाँ साइबर अपराध थाना जाउ। ओहिठाम सभटा बात कहबैक।ओएहसभ किछु करत।ओना आनलाइन किंवा फोनोपर सिकाइति कए सकैत छी। बैंकक सूचनापट्टपर सभ जानकारी देल गेल अछि। अहाँ ओकरा नीकसँ पढ़ि लिअ।”

मदनजीक चिंता आसमान ठेकि गेलनि।पत्नीकेँ कैंसर बिमारी भए गेल छलनि। तुरंत इलाज करेबाक छलनि। ताहि लेल बहुत टाका चाहिअनि। मुदा आब तँ तेसरे झंझटि भए गेल छनि।मुदा कइए की सकैत छलाह?इलाजो जरूरी छल,ताहि लेल धन बहुत जरूरी छल। मुदा थाना गेनाइओ जरूरी छल। ओ बैंकक सूचनापट्टपर देल गेल सूचना नीकसँ पढ़लनि। फेर माथापर हाथ दए तहि बैसि गेलथि। ओ ओहिठाम बेंचपर बैसले-बैसल बेहोस भए गेलथि। हुनका बेहोस देखि ओतए उपस्थित आन लोकसभ चिकरल। ओहिठाम कार्यरत

कर्मचारीसभ दौड़ल।मनेजर डाक्टरकेँ बजओलथि।पुलिसकेँ सेहो फोन कए देलथि। तुरंत डाक्टर आएल।पुलिस सेहो आबि गेल। डाक्टर दबाइ देलकनि। थोड़बे कालमे हुनका होस आबि गेलनि।सामनेमे लोकसभकेँ एकत्रित देखि ओ परेसान बुझेलथि। तखन मनेजर हुनका अपन कोठरीमे लेने गेलथि। ओतहि साइबर अपराध पुलिस सेहो आबि गेल छल।किछु प्रारंभिक पूछ-ताछक बाद ओ सभ हुनका थाना लेने चलि गेलनि।संगमे बैंकक मनेजर सेहो रहथि।

मदनजी पुलिस संगे साइबर थाना पहुँचलाह। ओहिठाम साइबर अपराधमे ठगाएल लोकसभक भीड़ लागल छल। सभक खिस्सा फराक-फराक,मुदा सभक हाल एक रंगाहे।ककरो बैंक खातासँ टाका निकलि गेल छलैक।ककरो डेविट कार्डसँ लाखोक सामान कीनि लेल गेल छलैक तँ ककरो केवाइसी आद्यतन करबाक नामपर लिंक पठा कए फोन हैक कए लेल गेल छलैक। एक गोटेक नामपर तँ पचीस लाखक कर्ज धए देने रहैक जखन कि ओ एक्को रूपया नहि लेने रहैक। बैंकक कर्मचारीक सेहो एहन-एहन घटनासभमे सामिल हेबाक उदाहरणसभ भेटि रहल छल। सभक सिकाइति साइबर अपराध थानामे लिखल जा रहल छल।आनलाइन किंवा फोनक माध्यमसँ भेटल सिकाइतिसभक सेहो जाँच भए रहल छल।

मदनजीकेँ ई जानि कए हुलास भेलनि जे एहन लोकसभमे सँ किछु गोटेक हराएल धन पुलिसक सहयोगसँ भेटि चुकल छल। किछु अपराधीसभ पकड़लो गेल छल। मुदा मदनजीक समस्या तँ कनी आर विकट छलनि।हुनकर पत्नीकेँ कैंसर भए गेल छलनि। एहन हालतिमे

ओ थाना-पुलिसक चक्कर नहि लगा सकैत छलाह। दरोगाजी हुनकर समस्या बुझलखिन। हुनकर सिकाइति जल्दी सँ लिखि लेल गेलनि।आब मदनजी थानासँ बाहर होमहि बला छलाह कि एकटा वयोवृद्ध कलपैत थाना पहुँचलाह। ओ दरोगाजीक कोठरीमे पहुँचतहि कानए लगलाह।

“की भेल?एना किएक कानि रहल छी?”

“हम तँ बरबाद भए गेलहुँ।एहि बएसमे हमर प्रतिष्ठा माटिमे मिलि गेल।”

“से की?”

“रातिमे साढ़े दस बजे एकटा वीडिओ फोन आएल छल। ओहिमे एकटा परिचितक नाम उचरि रहल छल। ओकर नाम देखि हम फोन उठा लेलिऐक,कि देखै छी एकटा नंग-धरंग महिला। किछु बुझेबे नहि करए।थोड़बे कालक बाद फेर ओही नंबरसँ ह्वात्सपपर एकटा वीडिओ आएल जाहिमे हमरा कोनो महिलाक संगे विभत्स अवस्थामे देखाओल गेल छल। हम ओकरा देखितहि परेसान भए गेलहुँ। मोनमे तरह-तरहक डर होमए लागल। बच्चासभ देखत तँ की कहत? जान-पहिचानक लोकसभ की कहत? ताबतमे ओकर फोन आएल।एहि बेर ओ धमकी दए रहल छल-

“नीकसँ सुनि लिअ।यदि तुरंत एक लाख रूपया नहि पठाएब तँ ई वीडियो भायरल भए जाएत।सोचिऔ जे तकर बाद की होएत? अहाँक प्रतिष्ठा माटिमे मिलि जाएत।परिवारक लोक की सोचत?समाजमे अहाँक की हाल रहत?”

“मुदा हम तँ किछु केलहुँ नहि।तखन...।”

“केलहुँ नहि तँ वीडियो ओहिना बनि गेल। जे केलहुँ तकर प्रमाण सामने अछि।”

हम की करितहुँ।तुरंत ओकरा एक लाख टाका पठा देलिऐक। मुदा ओ शांत नहि भेल। थोड़बे कालक बाद ओहूसँ बेसी घिनौन विडियो हमरा फोनपर पठाओलक।एहि बेर ओ पाँच लाखक मांग कए देलक।की करितहुँ।प्रतिष्ठाक सबाल छल। ओकर बात मानि सेहो पठा देलिऐक। मुदा ई क्रम चलिते रहल। एहि तरहेँ हम पचीसलाख टाका ओकर पठा चुकलहुँ। जखन ओ तखनहु संतुष्ट नहि भेल आ हमर बैंक खातामे आर किछु नहि रहि गेल तखन हम हारि कए ई बात अपन पड़ोसीकेँ कहलिऐक।ओएह हमरा थाना पठओलनि।आब अहीं कहू जे हम की करू?”

दरोगाजी ओकरा अपन कोठरीमे बैसओलथि,ओकरा पानि पिओलथि,फेर ओकरासँ लिखित सिकाइत लेलथि आ कहलखिन-

“अहाँकेँ डरेबाक नहि चाहैत छल। बढ़िआँ तँ होइत जे ओकर फोन उठेबे नहि करितहुँ। ओ सभ आधुनिक तकनीकसँ लैस रहैत अछि , आर्टिफिसिअल इन्टेलीजेंसक दुरुपयोग कए लोकक कृतिम वीडियो बना कए ब्लैकमेल करैत अछि। ताहिसँ बचबाक सर्वोत्तम उपाय थिक जे अज्ञात नंबरसँ आएल फोन उठेबे नहि करी। ह्वात्सअपक सेटिंगमे जा कए अज्ञात नंबरसँ आएल फोन,वीडियोकेँ बंद कए दी। मुदा आब तँ से गलतीसभ भए चुकल अछि। हमसभ प्रयास करब जे अपराधीसभ पकड़ल जाए अहाँक टाका वापस भए जाए।मुदा एहिमे समय लागत

कारण ओ सभ बहुत सातिर होइत अछि आ अपन वचाओक बहुत जोगार केने रहैत अछि।"

दरोगाजीक गप्प सुनि मदनजी बहुत चिंतित भए गेलथि। दरोगाजी हुनकासँ बतिआइते छलाह कि एकटा अधबयसू थाना पहुँचलाह। हुनकर हाथमे लैपटाप छलनि। ओ दरोगाजीकेँ देखितहि चिकरि उठलाह-

"जुलुम भए गेल दरोगाजी। केओ हमर लैपटापसँ सभटा डाटा उड़ा लेलक।ततबे नहि,फेसबुक खाता हैक कए लेलक। आब हमर फेसबुक खातापर सँ तरह-तरहक बातसभ लिखल जा रहल अछि।हम जे कहिओ नहि सोचने रही से सभ भए रहल अछि। हमर मित्रलोकनिकेँ टाका पठेबाक आग्रह कएल जा रहल छनि। कोना जान बाँचत से नहि फुरा रहल अछि।"

दरोगाजी हुनकोसँ सिकाइति लिखबा लेलक आश्वासन देलकनि-

"जल्दीए एकर समाधान होएत?"

"मुदा एना भेलैक कोना?"

"की कहू?बजितो लाज भए रहल अछि।हम दूपहर रातिमे पोर्नसाइटपर सर्फिंग करैत रही।ओहीकालमे एकटा लिंकपर क्लिक करा गेल। तकर बाद अचानक लैपटाप बंद भए गेल। जखन ओ खुजल तँ ओकर सभ किछु बदलि चुकल छल।"

एहि तरहेँ रहि-रहि कए तरह-तरहक लोकसभ अबिते जा रहल छल। मुदा मदन हड़बड़ीमे रहथि। पत्नी असगरे रहथिन।ओ थानासँ

निकलि गेलाह।मदनजी घर वापस अएलाह।पत्नीक इलाजक लेल अपन घर बन्हक राखि देलनि। हुनकर इलाज मुम्बईमे भेलनि। साल भरिक अथक प्रयासक बादो हुनकर जान नहि बचलनि। पत्नीक मृत्युक बाद मदनजी नितांत असगर भए गेलथि। थोड़े दिन तँ बच्चासभ फोन करैत रहलनि,संगे चलबाक आग्रह सेहो केलकनि। मुदा क्रमशः सभ अपन-अपन काजमे लागि गेल। मदनजी कहुना कए समय बिता रहल छलाह।

एकदिन मदनजी उदास अपन ओसारापर बैसल छलाह।हुनकर पत्नीक काल्हि बरखी छलनि। देखिते-देखिते एकसाल समय बीति गेल। मुदा अखन धरि पुलिस किछु नहि कए सकल।इएहसभ मदनजी सोचिए रहल छलाह किहुनकर फोनक घंटी बाजल-

“मदन बाबू। बधाइ होअए।”

“की भेलैक?”

“अपराधी पकड़ल गेल। अहाँक अधिकांश टाकासभ सेहो वापस भए गेल। अहाँ थाना आबि कए हमरा संगे न्यायालय चली जाहिसँ अहाँकेँ टाकासभ वापस कएल जा सकए,संगे पकड़ल गेल अपराधीसभकेँ दंडित कएल जा सकए।”

“हम आब टाका लइए कए की करब?हमर पत्नी चलि गेलीह। हुनकर इलाज हम नीकसँ नहि करा सकलहुँ।”

“से तँ बड़ अफसोचक बात। मुदा अपराधीसभकेँ दंडित करबाक लेल अहाँक मदति जरूरी अछि।अन्यथा ओ सभ आरो लोकसभकेँ तंग करत।”

"तखन अहीं कहू जे की करी?"

"अहाँ थाना आउ।हम संगे न्यायालयमे लए जाएब।ओहिठाम अहाँक आ आर-आर एहन लोकसभक गबाही हेतैक। तखने अपराधीकेँ सजा भेटि सकत।"

मदनजी मानि गेलखिन।दोसर दिन दरोगाजीक संगे ओ न्यायालय पहुँचलाह। अपराधीसभ विदेशी गैंगक सदस्य छल। ओहिमे कैकटा बहुत पढ़ल लिखल लोकसभ सेहो सामिल छल जे जल्दी धनीक बनबाक लेल एहन काज कए रहल छल। एकटा अपराधी तँ अपन गर्लफ्रेंडक लेल महग मोबाइल कीनबाक लेल एहन काजसभ कए रहल छल। न्ययालय द्वारा उचित कारबाइक बाद ओकरासभकेँ दंडित कएल गेल।सभक सामान टाका वापस कएल गेल। संगे जज साहेब आदेश देलनि जे यथासंभव इंटरनेटक माध्यमसँ भए रहल साइबर अपराधसँ बचबाक लेल लोकसभकेँ प्रशिक्षित कएल जाए जाहिसँ एहन घटनासभ आगू नहि होअए।

मदनजीकेँ बुड़ल धन वापस भेटि गेल छलनि। ओ ओहि टाकासँ अपन गाममे वृद्धलोकनिक लेल कल्याणकेन्द्रक स्थापना केलनि। ओहिमे इलाकाक बूढ़सभ सामिल होइत छलाह।हुनकासभकेँ साइबर अपराधसँ बचबाक तरीका सभक जनतब देल जाइत छलनि-

"अज्ञात मोबाइल फोनक उत्तर नहि देल जाए। कोनो लिंकपर टिक नहि कएल जाए।केओ फोन काल कए उचित-अनुचित कहैत अछि तँ तुरंत साइबर हेल्प लाइन नंबर पर सिकाइति लिखाओल जाए।"

प्रशिक्षणक ई क्रम बहुत दिन धरि चलैत रहल।आब इलाकाक बूढ़सभ निश्चिन्त भावसँ समय बितबैत छलाह। कल्याण केन्द्रपर सभ गोटे भोर-साँझ आपसमे गप्प-सप्प करथि। एक-दोसरक दुख-सुखक बारेमे बतिआथि। आब केओ अपनाकेँ असगर नहि बूझथि,ने हुनकासभकेँ मोबाइल फोनसँ सटल रहबाक काज होनि। कोनो जरुरी फोन आबि गेल तखन बता लेथि ,बस एतबेटा।आब ओहि इलाकाक बूढ़सभ बहुत आनन्दमे समय बिता रहल छलाह।

२३।३।२०२५

अंतिम इच्छा

गाममे लोकसभ आब ओना गप्प-सप्प करैत नहि देखाइत छथि। सभ अपन-अपन दरबाजा धेने रहैत छथि। ककरो पुछबै जे गाम -घरक की समाचार? उत्तरमे कहि देत-" बड़ बढ़िआँ ।" इहो पुछबाक प्रयोजन नहि जे अहाँ कोना छी ?" माने लोग एक-दोसरसँ साफे कटि गेल अछि । ताहि हालतिमे गाममे एकसर रामलोचन रहि रहल छथि आ अड़लो छथि जे जीब की मरब मुदा रहब गामे मे । गामक हवा-पानिमे जेना हुनका अनेरे टानिक भेटि जाइत छनि । मुदा समय-साल तँ सभक बदलिते अछि । हुनको संगे सएह भेल । बएस बढ़बाक संगे कतेको प्रकारक बिमारीसभ धए लेलकनि । धीया-पुतासभ बाहरे रहैत छथिन । गाममे इलाजक किछु सुविधा नहि छैक । गामसँ फटकी जँ डाक्टर छथिहो तँ हुनका बजाओत के? हे डाक्टर देखिए लेथिन मुदा दबाइ के आनत? आ जँ दबाइ आबिओ गेल तँ हुनका समय-समयपर देत के? घरमे किओ दोसर नहि अछि । एसगरे एतेक दिन निबाहि लेलनि । मुदा आब?

रामलोचनक समय बहुत सुखद छलनि । भरल-पुरल परिवार रहनि। बेटा-बेटी,पोता-पोती,नाति-नातिन सभ मनोरथ भगवान पुरने छलखिन । मुदा समयक स्वभाव छैक ओ बदलैत रहैत छैक , एकरंग नहि रहैत छैक । सएह हिनको संगे भेलनि । बेटा नौकरी करए दिल्ली चलि गेलखिन । हुनका पाछा लागल पुतहु आ पोता-पोती सेहो चलि गेलखिन । बेटीक बिआह भए गेलनि । जमाए मुम्बइमे बड़का अफसर

छथिन । ओतहि मकानो छनि । सभ गोटे बिआहक बादे जे गेलाह से ओतहि छथि । तखन गाममे रहि गेलाह रामलोचन आ बड़गामबाली माने हुनकर श्रीमतीजी । दुनूगोटे तैओ समय बिता लैत छलाह । खेती-बाड़ीसभ बटाइ दए देलखिन । माल-जालसभ क्रमशः हटा लेलनि । अपना किछु पेंसन भेटैत छलनि । हेडमास्टर रहथि । सेवानिवृत्तिक बाद गाममे सात कोठरीक मकान बनओलथि । थोड़ बहुत धीआ-पुतासभकेँ सेहो देलखिन। सोचलथि जे अपना लेल पेंसन तँ अछिए । बेर-कुबेर बच्चासभ सम्हारि लेत ।

सेवानिवृत्तिक बाद चारिसाल भए गेल । समय ठीके-ठाक बीति रहल छल । एकाएक बड़गामबालीकेँ हृदयाघात भेलनि । आघात ततेक जोर रहैक जे जाबत ओ किछु बुझितथि ,दरबाजापरसँ आङन जैतथि ताबे बड़गामबाली ओसारापर चौकी धेने टगि गेलखिन । आङनसँ किओ हाक देलकनि-

"बाबी खसि पड़लखिन ।"

रामलोचन दतमनि कए रहल छलाह ,आङन दिस दौड़लाह। मुदा जाबे ओ आङन पहुँचलाह ताबे तँ सभ खेल खतम छल । बूढ़ी बिदा भए गेलखिन । हुनकर ई हालति देखि रामलोचन ठोह पाड़ि कए कानए लगलाह । हुनका पहिल बेर भेलनि जे सही माने मे अनाथ भए गेलहुँ । जेना सभ किछु एकहि क्षणमे समाप्त भए गेलनि । कनीके कालमे ई बात सौंसे गाममे पसरि गेल। लोकक करमान लागि गेल । बेटा विदेशमे छलखिन। बेटी-जमाए मुम्बइमे रहथि । सभकेँ फोन कएल गेलनि। साँझसँ प्रात आ प्रातसँ साँझ भए गेल । गामक लोकसभक धैर्य जबाब

दए रहल छल । पलटू मिसर स्वयं किछु नहि बाजथि । लोकसभक कहब जे मुरदाक एना गाममे रहब ठीक नहि अछि । एकर अंतिम संस्कारमे देरी उचित नहि अछि । बात तँ उचित छलैक। एहिसँ पहिने एना कहिओ नहि भेल रहैक । मुदा पलटू मिसर किछु नहि बाजथि । हुनका रहि-रहि कए अपन पत्नीकसंग भेल गप्प मोन पड़ैत छलनि।

"हम जे मरी तँ हमरा आगि बउए देथि, से देखब । तखने हमरा मुक्ति होएत ।"

"एहनो किओ बजैत अछि । अखन अहाँके बएसे की भेल अछि । हम तँ अहाँसँ सात वर्षक पैघ छी।"

" बएससँ की होइत छैक । मृत्युतँ कखनो ककरो भए सकैत अछि ।"

पलटू मिसर बातकेँ कहुना कए टारि देलखिन । मुदा आइ ओ समय आबि गेल छल । कतबो फोन केलथि ओमहरसँ बेटा एतबे कहथिन जे हुनका कंपनीसँ छुट्टी नहि भेटि रहल छनि । फेर एतेक फटकीसँ ओ तुरंत आबिओ नहि सकैत छथि । तें काजकेँ आगा बढ़ाओल जाए ।"

बेटी-जमाए सेहो नहि आबि सकलखिन । ओ सभ किछु दिन पहिने युरोप भ्रमण पर गेल रहथि । बीचेमे कोना अबितथि?एहि तरहें जखन दू दिन बीतल तँ गामक लोकसभ पलटू मिसरकेँ पुछलकनि-

"बाबा एना कतेक दिन लहास सड़ैत रखबनि । किछु उपाय करिऔक?"

"की करिऐक से तँ कहू?"

" मोह छोड़ू । हिनका अग्निकेँ समर्पित करू । "

"ठीक छैक । हम स्वयं हिनका आगि देबनि ।"

पलटू मिसर गौंआसभक संगे श्मशान पहुँचलाह । चारूकात लोक “राम नाम सत्य है ।" क नारा लगबैत छल ।

पलटू मिसर अपने श्राद्धक सभटा विध-विधान संपन्न केलनि । द्वादशाहक बाद रातिमे सुतल रहथि । मोसकिलसँ आँखि लागल रहनि कि ककरो कानबाक अबाज सुनेलनि ।

"केछी? एना किएक कानि रहल छी?"

"हम छी बड़गामबाली ।"

"एना किएक कानि रहल छी?"

“बौआ लग जाएब ।"

"मुदा अहाँ तँ मरि गेल छी । फेर कतए सँ आबि गेलहुँ?"

फेर ओ ओहिना कानए लगलथि । ताबे हमर निन्न टुटि गेल । देखैत छी जे बउआ आबि गेल छथि ।

गाम अबितहि ओ चोट्टे माएक सारा पर चलि गेल । ओहिठाम चुपचाप ठाढ़ रहए ,किछु फुरेबेक नहि करैक । मोन ग्लानिसँ भरल रहैक जे माए मरि गेल आ ओ आबि नहि सकल । माएक अंतिम इच्छा नहि पूरा कए सकल । ओ बड़ीकाल धरि ओहिना एकटक माएक साराकेँ देखैत रहि गेल ।

जे हेबाक छल से तँ भइए गेल छल । आब ओ गाममे रहिए कए की करितथि? छुट्टी लगचिआ गेलनि। आपस जेबाक तैयारीमे लागि गेलाह । अंतिम समयमे माएक इच्छा पूरा नहि हेबाक मोनमे अपराधबोध

रहबे करनि । तेँ सोचलथि जे बाबूजीकेँ अपने संगे नेने चली । मुदा रामलोचन हरगिज तैयार नहि भेलखिन ।

"हम गाम छोड़ि कतहि नहि जाएब आ जौं जेबो करब तँ जीबि नहि सकब । तेँ हमरा एहिना छोड़ि दिअ । "

हारि कए बेटा पुतहु आपस विदेश चलि गेलखिन । थोड़े दिनक बाद बेटी जमाए अएलखिन । मास दिन जाबे ओ सभ गाममे रहलखिन रामलोचन फेर हरिआ गेलाह । बेटी बहुत सेवा केलखिन । दिन-राति हुनके सँ गप्प-सप्प करैत रहथि। समय कोना बीतल से पतो नहि चललनि । आखिर हुनको छुट्टी बीति गेलनि। आपस जाए काल बेटी बहुत जोर देलखिन जे ओ हुनकेसभक संगे मुम्बइ चलथि । बेटी - जमाएक बात काटब जखन बहुत मोसकिल भए गेलनि तँ मानि गेलखिन आ हुनकासभक संगे बिदा हेबाक तैयारी करए लगलाह । एमहर सभ जेबाक तैयारीमे लागल छल कि अचानक ओ कतहु चलि गेलाह । एमहर मोटा-चोटा बान्हल छल। सभ बाट ताकि रहल छल जे ओ आब अएताह ताब । मुदा ओ कतहु निपत्ता भए गेलाह । ताबे हुनकर भातिज हरि अएलखिन ।

"काका तँ कलममे बंबइ गाछ तर बैसल हाकरोस कए रहल छथि । हम बहुत कहलिअनि जे एना असगरमे किएक बैसल छी । मुदा टस सँ मस नहि भेलाह ।"

ई बात सुन कए हुनकर बेटी आ जमाए ओहि गाछ लग पहुँचलाह । ओतए रामलोचन गाछकेँ पकड़ने बैसल छलाह । लगैक जेना ओ ध्यान कए रहल छथि । थोड़ेक काल तँ हुनकर बेटी-जमाए

जस-के-तस ठाढ़ रहि जाइत गेलाह । मुदा जखन बड़ी काल धरि रामलोचन ओहिना रहि गेलाह तँ हुनकासभकेँ चिंता भेलनि । हुनकर बेटी लगीचमे जा कए हुनका हिलओलथि की रामलोचन ठामहि टगि गेलाह । रामलोचन नहि रहलाह । सौंसे गाममे ई बात पसरि गेल ।

सालभरिसँ बेसी भए गेल । हुनकर पहिल बरखी सेहो भए गेलनि । मुदा अखनो जँ किओ ओहि गाछ लगमे जाइत अछि तँ ओकरा सुनाइ पड़ैत छैकः

" हम कतहु नहि जाएब । हमर स्थान इएह अछि ।”

प्रेरणा

रंजन तीन भाइमे सभसँ जेठ रहथि। हुनकर पिता लकबाग्रस्त छलाह। गामपर खेतो-पथार बहुत कम छलनि। रंजनक बिआह से कमे बएसमे भए गेल रहनि।एतेकटा परिवारक गुजर केना होएत? से चिंता हुनका दिन-राति परेसान केने रहनि। आखिर ओ एकदिन बिना ककरो कहने नेपाल चलि गेलाह। ओहि ठाम हुनकर बहिनोइ ठाकुरजी बहुत पहिनेसँ काज कए रहल छलखिन।ठाकुरजी कमे समयमे बहुत धन कमओलाह।गाम-सासुर सभ ठाम खूब यश छलनि। गाममे अठ्ठारह कोठरीक मकना बनओलनि। पचीस बीघा जमीन सेहो कीनलनि।सासुरमे सेहो जमीन कीनलनि। ततबे नहि,दरभंगा सहरमे सेहो कैकटा जमीन कीनि लेलनि।मकान सेहो बनओलनि। जखन ठाकुरजी सासुर अबैत छलाह तखन हुनका चारू कातसँ लोक घेरने रहैत छलनि। जकरा जे काज होइक से ओ पूरा कए देथिन। ककरो खाली हाथे वापस नहि करथिन।स्वाभाविक छल जे ठाकुरजी गामसँ सासुर धरि बहुत लोकप्रिय भए गेलथि।

सभकेँ जखन मदति केबे केलखिन तखन अपन सारकेँ किएक नहि करितथिन। तेँ जखने रंजन हुनका लग पहुँचलाह,हुनका अपने संगे राखि लेलखिन। रंजन सेहो बहुत प्रसन्न रहथि जे चलू तुरंत काज भेटि गेल। आब परिवार नीकसँ जीबि लेत। पहिल दिन तँ ओ विश्राम केलनि। दोसर दिन साँझमे ठाकुरजी हुनका अपना संगे लेने चलि गेलखिन।

शुरूमे तँ ओ थोड़े काल कारसँ गेलाह। तकर बाद तरह-तरहक सबारी सभ बदलल जाए। ओ सभ अनेक बेर सबारी बदलि कए एकटा जंगलक बीचमे पहुँचि गेलाह। ओहि जंगलक बीचमे बहुत नीक झोपड़ी बनल छल। झोपड़ी बाहरे सँ छल,भीतर किछु आर छल। ओकरे बीचसँ तहखानाक रस्ता निकलैत छल।रंजन ठाकुरजीक संगे आँखि मुनि कए चलैत रहल। मुदा घंटा भरि चललाक बाद जखन ओ तहखाना समाप्त भेल तँ ओ सभ एकटा देबाल लग पहुँचि गेल रहथि। ओहि ठाम कैकटा नकाबपोशसभ एक-दोसरक हाथमे सामानसभसँ भरल बोरा पकड़ा रहल छल। रंजनक एहि काजमे आइ पहिल दिन छलनि।तेँ हुनका हल्लुके झोरा देल गेलनि।बेरा-बेरी सभक आँखिपर पट्टी बान्हि देल गेलैक। तकर बाद रंजन केना कतए गेलाह,किछु नहि देखलनि।बस,अबाज सुनथि आ ओही संकेतक आधारपर आगू बढ़ल जाथि।असलमे केओ ककरोसँ किछु आर गप्प कइए नहि रहल छल।राति भरि ई कारोबार चलैत रहल।फरीछ होमएसँ पूर्व हुनकर आँखिपर सँ पट्टी खोलि देल गेलनि। सामनेमे ठाकुरजी हँसि रहल छलखिन। ओ तँ विचित्र प्रकारक वस्त्र पहिरने छलाह। सभसँ छगुन्ता रंजनकेँ हुनकर जेबीमे छोटसन पेसतौल देखि कए भेलनि।ठाकुरजी एहि बातसँ कनी परेसान बुझेलाह आ मौका पबितहि ओहि पिस्तौलकेँ नुकेबाक प्रयास केलनि। मुदा रंजन सेहो तेज आदमी रहथि। ओ पिस्तौल देखि कए चौंकि गेलाह। किछु बजितथि ताहिसँ पहिने ठाकुरजी हुनकर मुँहपर हाथ राखि देलखिन।

“एहिठाम बाजब मना छैक। कोन ठेकान जे कतए के धपाएल होअए?”

बहुत मोसकिलसँ रंजन दुपहरिआमे थाकल-झमारल ठाकुरजीक डेरापर पहुँचलाह।ठाकुरजी स्वयं पाछूए कतहु रहि गेलखिन।कहलखिन-

“जे किछु देखलहुँ तकर कतहु चर्च नहि करब।“

जाइत-जाइत एकटा मोट लिफाफा पकड़ा देलखिन।

“एकरा राखू।ई अहाँक आजुक कमाइ अछि।”

रंजन चुपचाप ओ लिफाफा राखि लेलनि। डेरा पहुँचितहि ओ सभसँ एहिने एकान्तमे लिफाफा खोललाह।लिफाफा पाँचसएक नोटसँ भरल छल।ओ ओकरा गनए लगैत छथि।

“बाप रे बाप। एकदिनक कामइ एतेक। पचास हजार।

ओ बेर-बेर रुपया गनैत रहलाह।प्रसन्नताक तँ अंते नहि छलनि। मुदा थोड़बे कालक बाद किछु-किछु सोचाए लगलनि।

“जखन हमरा एतेक आमदनी भेल तखन आन लोकसभकेँ कतेक भेल हेतैक?”

“एतेक टाका ,सेहो एक्के दिनमे?असंभव बात लागि रहल अछि।जरूर किछु गड़बड़ अछि।”

“ई सभ सोचबाक कोन काज छैक?गरीबकेँ टाका भेटैक,ताहिसँ नीक की भए सकैत अछि?मानलहुँ जे एहि काजमे खतरा छैक,मुदा यदि किछुओ दिन रहि जाएब तँ हमर गरीबी सभ दिनक लेल

समाप्त भए जाएत।फेर खतरा कथीमे नहि छैक?साँसो लैत छी ताहूमे तँ खतरा छैहे।”

“मुदा एतेक टाका कथीक थिक?कहीं किछु अनुचित तँ नहि भए रहल अछि।”

रंजनक मोनमे तरह-तरहक बात सभ घुमि रहल छलनि। ओ थाकल रहबे करथि।ओछाओनपर सुति रहलाह।बड़ीकालक बाद ‘खट’क अबाज भेल। हुनकर निन्न टुटलनि तँ देखलनि जे ठाकुरजी सामनेमे ठाढ़ छथि।

“एक्के दिनमे थाकि गेलहुँ?”

“थाकल नहि छी।मुदा,,,।”

“मुदा की?”

“हमरा तँ ई काज बहुत गड़बड़ लागि रहल अछि।आखिर अहाँसभ हमर आँखिमे पट्टी किएक बान्हि देलहुँ?अहाँसभ चुपचाप राति भरि की करैत रहिऐक?”

“एतेक मोट आमदनी भेल से किएक नहि सुझाइत अछि।किछुओ दिन एहिठाम ठहरि जाएब तँ भाग्ये खुजि जाएत।”

“ठाकुरजी,भाग्य टाकासँ नहि खुजैत छैक।”

“हम सोचि लेलहुँ।हमरा एहन भाग्य नहि चाही।हम चललहुँ।”-से बाजि ओ रुपयाक गड्डी फेकि देलनि,अंगा पहिरलनि आ वापस बिदा भए गेलाह।ठाकुरजी ओकर बात सुनि छगुन्तामे छलाह। ओ कहलखिन-

"बुझि गेलहुँ जे अहाँ बुते ई काज नहि होएत।मुदा एतेक धरफरा किएक गेलहुँ?हम अहाँक दोसरे काज धरा देब।गाम जा कए की करब?बच्चा सभ परेसानीमे अछि। ओकरसभक पालन-पोषण कोना होएत?"

"आएल तँ सएह सोचि कए रही।मुदा एहि ठाम तँ बहुत झंझटि बुझा रहल अछि।यदि संभव होअए तँ हमरा कोनो सोझ काज पकड़ा दिअ।"

"अहाँ रुकू।हम प्रयास कए रहल छी।"

तकर बाद रंजन फेर कहिओ ओहि काजमे ठाकुरजीक संगे नहि गेलाह।किछु दिन बेरोजगार रहि गेलाह।आखिर ठाकुरजी हुनका कपड़ाक दोकानमे नौकरी लगा देलखिन। ओ भोरसँ साँझ धरि ओहिठाम काज करथि। साँझमे अपन डेरा वापस होथि।अपने भोजन बनाबथि सुति रहथि। एहिठाम हुनकर जिनगी चेनसँ बीति रहल छलनि। थोड़े दिनक बाद ओ अपन परिवारोकैँ आनि लेलनि। हुनकर चारू बच्चा आ पत्नी जेना-तेना शांतिसँ गुजर कए रहल छलाह। बच्चासभ इसकूल जा रहल छल। कहिओ काल छुट्टी भेलापर ओ सभ लगपासमे घुमबाक लेल सेहो चलि जाथि। मुदा ई सुखक समय बहुत दिन धरि नहि रहल।अचानक एकदिन दुपहरिआमे दोकानेपर बैसले-बैसल टगि गेलाह। जाबे हुनका अस्पताल लए जाइत,ताबे तँ ओ एहि दुनिआसँ जा चुकल छलाह।देखिते-देखिते रंजनक परिवार अनाथ भए गेल। हुनका लोकनिक कोनो आर्थिक आधार नहि रहि गेलनि।बच्चासभ छोट-छोट छल।सभक भविष्य संकटमे पड़ि गेलनि। आखिर ओ सभ ओहिठाम

बैसल की खइतथि?कोना गुजर करितथि? ओ सभ अपन गाम लौटि गेलथि। गामो मे कोनो मदति केनिहार नहि छलनि।सासुसे विधबा पुतहुकेँ दिन-राति गारि पढ़ैत छलखिन-

“तूँही हमर बेटाकेँ खा गेलैँ।राक्षसी छैं।तौँ फराके रहै।”जे फुरानि से कहैत रहथिन। ओ तँ ओहिना दुखी छलीह।ऊपरसँ सासुक फइझतिसँ जीनाइ मोसकिल भए गेलनि।जेना-तेना ओहीठाम एकटा खोपड़ी बान्हलनि ।बच्चासभ दिन-राति मेहनति करए,माछ मारए,खेतमे काज करए,संगे-संग अपन पढ़ाइ सेहो करए।

साल भरिक भीतरे जेठका बेटा आइए प्रथमे श्रेणीसँ पास केलक आ दिल्ली चलि जाइत रहल। ओहि ठाम ओ शुरूमे ट्यूशन करैत रहल ,संगे आगूक पढ़ाइ सेहो करैत रहल। थोड़बे दिनक बाद अपन दूटा भाएकेँ सेहो दिल्ली बजा लेलक।

क्रमशः सभ भाए दिल्ली चलि गेल। ओहि ठाम ओ सभ काजो करए पढ़ाइ सेहो करैत रहल।ओ सभ निरंतर विकास करैत रहल। पाँच-सात सालक भीतरे सभ भाए नीकसँ व्यवस्थित भए गेल।केओ कंपनी सेक्रेटरी,तँ केओ चार्टर्ड काउन्टेन्ट बनि गेल।सभकेँ नीक-नीक कनिआसभसँ संपन्न परिवारसभमे बिआह भेलैक। सभ भाए मिलि कए गाममे बड़काटा घर बनओलक।दिल्लीमे सेहो अपन-अपन फ्लैट कीनि लेलक।देखिते-देखिते ओहि परिवारक नक्शा बदलि गेल। आइ ओ सभ गाममे किछु कहबैत अछि। जखन कि ठाकुरजी अपने कमे समयमे मरि गेलाह।हुनकर बेटासे पढ़ि नहि सकलनि। गामक घर भाएसभ दफानि लेलकनि।जथा-पात बाँटि लेलकनि।हुनकर मृत्युक बाद आब हुनकर

परिवार बहुत कष्टमे पड़ि गेलनि।आखिर रंजनेक धिआ-पुतासभ हुनकासभकेँ दिल्ली बजा लेलखिन आ काजो धरा देलखिन जाहिसँ ओहोसभ दिल्लीएमे गुजर कए रहल छथि।

रंजन अपने भने नहि रहलाह,मुदा हुनकर संतानसभ ओहि इलाकामे उदाहरण बनि गेल छथि।लोकसभ अपन बच्चासभकेँ हुनकरसभक उपलब्धिसँ प्रेरणा लेबाक हेतु उत्साहित करैत छथि।

३।३।२०२५

श्वेताक संघर्ष

श्वेता शुरूएसँ पढाइमे बहुत तेज रहथि। सभ दिन किलासमे प्रथम स्थान आनथि। हुनकर माता-पिता एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रहथि। ओ सभ बहुत यत्नपूर्वक हुनका पढ़बैत रहलथि। दरभंगासँ एमए प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलथि। तकर बाद हुनकर बिआह गामे लग गौरवसँ संपन्न भेलनि।थोड़बे दिनक बाद हुनका शिक्षकक नौकरी लेल चयन भए गेलनि।मुदा हुनकर सासु-ससुर श्वेताकेँ नौकरी नहि करए देलखिन। गौरव सेहो हुनके लोकनिक संग देलखिन। करूणा हुनका लोकनिक बात मानि चुप रहि गेलीह। मुदा घरमे सदिखन खटपट होइते रहैत छलनि। हुनकर सासु, पुबारिगामबाली कखनो संतुष्ट होएबे नहि करथि। हुनकर काजमे किछु-ने-किछु त्रुटि निकालि देथि।

“हम जे कहैत छी ,अहाँ तकर ठीक उल्टा करैत छी। कनीको माथा अछिए नहि कि कतहु आर ध्यान रहैत अछि?”-पुबारिगामबाली चिचिआ उटलखिन।

“हम कोनो बैसल छी। देखैत नहि छथिन जे भोरेसँ काजमे लागल छी।दस बाजि गेल,मुदा अखन धरि दतमनि धरि नहि केलहुँ अछि। हिनकेसभक निमेरामे लागल छी। तैओ हिनका तामसे भए रहल छनि। ”-श्वेता उत्तर देलखिन।

“गलती अहाँक नहि अछि। हमरेसभक कर्म फुटि गेल जे एहन खसल लोकसभसँ कुटमैती केलहुँ।केहन-केहन कथा अबैत छल। मुदा

हमरासभक भाग्य तँ जड़ल छल। तेँ ई भेल। हम हुनका बेरि-बेरि कहिअनि जे ई कथा ठीक नहि बुझा रहल अछि। एकर माए बहुत बजबैका छैक। मुदा ओ ध्यान नहि देलखिन। आब भोगैत जाथु।"

श्वेताक लेल ई कोनो नव बात नहि छलनि। हुनकर सासु पुबारिगामबाली बस गौरवक कार्यालय जेबाक बाट तकैत रहैत छलीह। जखन गौरव गेल कि ओ श्वेताक विरुद्ध बजनाइ शुरू कए देथि। करुणो की करितथि? एकरे नियति मानि सहैत रहथि। सामान्यतः हुनका उत्तर नहि देथि। मुदा ओहि दिन नहि सहल गेलनि। सभदिन मोन एक्के रंग नहि रहैत छैक। ओहि दिन रातिएसँ देह बोखराह छलनि। सक्क नहि लागनि। तैओ ओ काजमे लागि गेल रहथि। भेलनि जे यदि काज नहि करब तखन तँ सासु आर तंग करतीह। एहिसँ नीक जे काजेमे लागि जाइ। ओ जल्दीसँ डोलो खा लेलीह आ काजमे लागि गेलीह। मुदा कतबो प्रयास करथि काजमे सक्क नहि लागि रहल छलनि। कखनहु काज करथि,कखनहु जा कए कोठरीमे बैसि जाथि। ताही बातसँ सासु तमसा गेल रहथिन।

श्वेताक संगे हुनर सासुक एहन व्यवहार कोनो नव बात नहि छल। ओ हुनका संगे एहिना करिते रहैत छलीह। हुनका सदिखन श्वेतामे किछु ने किछु गलती भेटिए जानि। बस शुरू भए जाथि। एक बेर जखन शुरू भए जाथि तँ चुप हेबाक नामे नहि लेथि। ई नहि सोचाइन जे ई सभ सुनि रहल अछि तकरापर की असर भए रहल छैक?ओ कोनो पाथरक नहि बनल अछि जे कतबो चोट करब ओकरापर असरि नहि हेतैक। आखिर बेसी आघात-प्रतिघात केलासँ पाथरो टूटि जाइत छैक,छिन्न-

भिन्न भए जाइत छैक। मनुक्ख तँ भावुक प्राणी होइत अछि।शब्दसँ प्रभावित होइत अछि।नीक व्यवहारसँ जहिना ओ उत्साहित होइत अछि,कटु व्यवहार ओकर जीवनो लए सकैत अछि।

श्वेता हुनकर बातसभ सुनैत-सुनैत बहुत दुखी भए जाथि। कैक बेर घर बंद कए घंटो कनैत रहि जाथि। कैक दिन उपासे रहि जाथि। मुदा गौरवकेँ किछु नहि कहथिन। कारण ओहो माए दिस भए जाथि।हिनके उपदेश देनाइ शुरू कए देथि। श्वेताक माता-पिताकेँ सभटा बात बुझल छलनि। ओ सभ बहुत गरीब छलाह। कहुना कए अपन गुजर करथि। एहि स्थितिमे नहि रहथि जे श्वेताकेँ मामिलामे हाथ देथि। बस एतबे सोचथि –“शुरूमे कनी-मनी दिक्कति ककरा ने होइत छैक। क्रमशः सभ किछु ठीक भए जेतनि। सुखी संपन्न सासुर छैक।भविष्य उज्ज्वल होएबे करतैक। मुदा से भेलैक नहि। श्वेताकेँ हुनकर सासु कहिओ उचित सम्मान नहि देथि। कहिओ अपनत्वक भाव नहि राखथि। सदिखन एही प्रयासमे रहितथि जे कहुना गौरव श्वेताक बात नहि मानथि,ओकर कान दिन राति भरैत रहितथि।”

गौरव छलाह तँ सज्जन मुदा दब्बू। माएक सामनेमे मुँह खोलबाक,किछु कहबाक साहस नहि होनि। एहि परिस्थितिमे श्वेताक समस्या बढ़िते गेलनि। ओ नितान्त एसगरि भए गेलथि। की करथि किछु फुरेबे नहि करनि।एकदिन तँ मोन ततेक आजिज भए गेलनि जे अचानक बड़ी जोरसँ चिकरए लागलथि। चारूकातसँ लोकसभ एकत्रित भए गेलैक। संयोगसँ गौरव ओही समयमे आफिससँ वापस आबि गेल रहथि। हुनका बुझेबे नहि करनि जे की भेलैक? पुबारिगामबाली तरह-

तरहक बातसभ कहए लगलखिन ।ओकर कहबाक माने जे करूणा हुनका अनेरे बदनाम कए रहल छथिन। ओ तँ दिन-राति ओकर ध्यान रखैत छथि।माएक बात सुनि गौरव करुणेपर चिकरए लागलथि ।श्वेताकेँ से बहुत खराप लगलनि। हुनका गौरवसँ एहन व्यवहारक उम्मीद नहि रहनि। मुदा गौरव श्वेताक खिलाफे मे बजैत रहि गेलाह।परिणाम भेल जे श्वेता ठामहि बेहोस भए गेलथि। ओहि समय ओ गर्भिणी छलीह। की भेलेक की नहि जे हुनका असमयमे पेटमे दर्द होमए लगलनि। श्वेता संग गौरव तुरंत अस्पताल बिदा भेलाह । मुदा रस्तेमे हुनका गर्भपात भए गेलनि।

एहि घटनाक बाद कैक सप्ताह धरि श्वेता किछु बाजथि नहि। दिन-राति गुमसुम रहथि। एकसरि होइतहि कानए लगितथि। होनि जे किछुओ दिन लेल नैहर चलि जाइ। सेहो सासु नहि मानलखिन। एहि तरहेँ श्वेताक जीवन सासुक निर्दयताक कारण नरक बनि गेलनि।जीनाइ व्यर्थ लागि रहल छलनि।

श्वेताक सासुरक जीवन कष्टमय भए गेल रहनि।तथापि ओ अपन माता-पिताक इज्जतिक सम्मान करैत अपना भरि मर्यादामे रहबाक प्रयास करथि। कतबो कष्ट होनि मुदा जखन पिता फोन करथिन तँ कहतथि-

“हम बहुत सुखी छी बाबू। अहाँ कथुक चिंता नहि करू। हमरा एहिठाम बहुत मान-दान होइत अछि।गौरव तँ सदिखन लागले रहैत छथि। अहाँ अपन ध्यान राखब।”

“मुदा तूँ अबैत किएक नहि छह?”

“मोन तँ होइते रहैत अछि। मुदा एहिठामक हालति देखि जेबाक साहस नहि होइत अछि। सासुक मोन बेसी काल खरापे रहैत छनि। हमर ससुर सेहो बेसी काल दुखिते रहैत छथि। एहनमे कोना छोड़ि दिअनु?”

“अच्छा कोनो बात नहि। अपन ध्यान रखियह। तूँ खुस रहह सेएह हमरा लोकनिक कामना अछि। मौका हेतैक तँ हमहीसभ आबि जाएब।तोरासँ भेंट कए लेब।”

श्वेता किछु उत्तर दितथिन ताहिसँ पहिनहि हुनकर सासु पहुँचि गेलखिन। श्वेताकेँ फोनपर गप्प करैत चिकरए लगलखिन। श्वेता जल्दीसँ फोन बंद कए लेलनि जाहिसँ हुनकर पिताजीकेँ किछु अनट ने सुना जानि।

तकर बाद जे पुबारिगामबाली चिचिएनाइ शुरू केलनि से चुप्पे नहि होथि। बड़ी काल धरि अंट-संट बजैत रहि गेलथि। श्वेता सभकिछु सहैत रहि गेलथि। मुदा जखन हुनकर पिताक नाम लए उचित-अनुचित बाजए लगलखिन तखन श्वेताकेँ नहि रहए गेलनि। ओ तामसे आगि भए गेलीह।

“यदि हमर बाबूक खिलाफ एक्को शब्द बजलहुँ तँ नीक नहि होएत।”

“तोहर ई साहस। हमर बातकेँ सबाल-जबाब करबैं।”

पुबारिगामबाली आर जोर-सोरसँ श्वेताक पिताकेँ फज्झति करए लगलखिन। आब श्वेताकेँ नहि रहल गेलनि। ओ चोटाएल साँप जकाँ सासुपर कुदि गेलथि,ओकर गट्टा पकड़लथि आ हाथ उठओने

छलीह कि गौरव आबि गेलथि। अपन माएपर श्वेताकेँ एना हाथ उठबैत देखि गौरवक तामसक अंते नहि छल। ओ श्वेताकेँ तरातर कैक चमेटा लगा देलखिन।गौरवक व्यवहारसँ श्वेता बहुत आहत भए गेल छलीह। गौरवेसँ किछु उम्मीद बाँचल छलनि। मुदा जखन ओहो बिना बुझने श्वेतापर हाथ उठा देलथि तखन आब बाँचिए की गेल? श्वेता तकर बाद कैक साँझ धरि खेलनि नहि,अनशन कए देलनि। समाचार जेना-तेना हुनकर नैहर धरि पहुँचलनि। हुनकर माता-पिता दौड़ल ओतए पहुँचलाह। मुदा ई की? हुनका केओ घरक भीतर नहि आबए देलकनि। ओ बाहरसँ चिचाइत रहलाह। श्वेता अपन कोठरीसँ हुनकासभकेँ ठाढ़ देखलखिन। हुनकर स्थिति देखि श्वेता बहुत दुखी भए गेलथि। बुझेबे नहि करनि जे की करथि?

श्वेताक माता-पिता बड़ीकाल धरि बाहरे ठाढ़ रहि गेलाह। सामने घरमे हल्ला सुनाइत रहलनि,करूणाक करुण क्रन्दन सुनाइत रहलनि। ओ सभ सोचिओ नहि सकल रहथि जे हुनकासभक बेटीक सासुरमे एहन अनादर हेतनि। एतेक भेलाक बादो ओ सभ किछु नहि बजलाह। मोनमे डर होनि जे बेटीकेँ कहीं आर परेसानी नहि भए जानि। तेँ चुपचाप ओहिठामसँ चलि जाइत रहलाह। करूणा खिड़की लग ठाढ़ि भेल हुनका लोकनिकेँ वापस जाइत देखैत रहि गेलीह। कष्टसँ मोन व्याकुल भए गेल रहनि। होनि जे की करी कि नहि। माता-पिताक सद्यः अपमान असह्य लागि रहल छलनि। तथापि,भावी संतानक मोहमे सभकिछु सहि गेलथि।

किछु दिनक बाद श्वेताकेँ पुत्रक जन्म भेलनि। बच्चा अनमन माएपर गेल छल। ओकरा देखि श्वेताक मोनक सभटा संताप हरण भए गेलनि। भेलनि जे गौरव आब बहुत सुखी रहताह,हुनको मान-दान करथिन।सासुओक विचार बदलि जेतनि। एहन संतान पाबि के नहि सुखी होएत? मुदा श्वेताक कल्पना सच नहि भेलनि। पुत्र जन्मक बाद तँ हुनकर सासु आर परेसान करए लगलखिन।असलमे हुनका असुरक्षा भाव घेरि लेलकनि। होनि जे पुत्रक जन्मक बाद गौरव कहीं हुनकासँ फटकी ने भए जाथि। ओमहर श्वेताक माता-पिता बहुत प्रसन्न रहथि।

"आब कोनो चिंता नहि।जखन नाति भए गेल तखन कोन बात।आब हमर बेटीक भविष्य सुरक्षित अछि।"-श्वेताक पिता बाजथि।हुनका लोकनिक इच्छा रहनि जे नातिकेँ देखी,ओकरा आशीर्वाद दिऐक। मुदा श्वेताक सासु तकर स्वीकृति नहि देलखिन। एहि बातसँ श्वेता बहुत दुखी भेए गेलथि। ओ आब किछु बरदास करबाक लेल तैयार नहि रहथि। ओ निश्चय कए लेने रहथि जे आब एही पार कि ओहीपार। भोरे सभ किछु ओहिना भए रहल छल। गौरव तैयार भए काजपर चलि गेलाह। श्वेताक सासु ससुरक संगे मंदिर पूजा करबाक लेल चलि गेल रहथिन। श्वेता एकांतक फएदा उठबैत अपन नवजात शिशुक संगे घर छोड़ि देलनि। कनीके फटकी एकटा आटो ठाढ़ छल। ओ आटो पकड़ि मधुबनी टीसन चलि गेलथि। ओहिठाम दिल्लीक ट्रेन लागल रहैक। ओहि ट्रेनमे जेना-तेना पैसि गेलथि। संयोगसँ ट्रेनमे जगह भेटि गेलनि,टिकटो बनि गेलनि। श्वेता दिल्ली पहुँचि गेलथि। ओ दिल्लीमे ककरो मदति नहि लेलनि। अपन प्रयाससँ ट्युशन शुरू केलनि।

संगे आएएएसक परीक्षाक तैयारी सेहो करैत रहलीह। पहिल बेर फेल कए गेलीह,दोसरो बेर सफल नहि भेलीह। मुदा ओ लागल रहलीह। तेसर प्रयासमे ओ आइएएस परीक्षामे तेसर स्थान प्राप्त केलीह।हुनकर सफलताक समाचार चारूकात पसरि गेल। के के ने बधाइ देलकनि। हुनकर माता-पिताक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल।साल भरिक बाद श्वेता पटनामे पदस्थापित भेलीह। गौरव अपन माता-पिताक संग हुनकासँ भेंट करए पहुँचलथि।हुनकर सासुकँ तँ लाजे बाजल नहि होनि।गौरव सेहो बहुत लज्जित रहथि। मुदा श्वेता कहलखिन-

“अहाँसभ हमरा लेल अखनहु आदरणीय छी। ने ओहन हालति होइतैक ने हम आइ आइएएस करितहुँ। अहाँसभ अपन मोनमे ग्लानि नहि करू।खुसी-खुसी हमर संगे रहू। अपन पौत्रक देख-रेख करू।हमहूँ निचेन भए अपन काज कए सकब।”

३१।०८।२०१४

विश्वासघात

रातिमे जखन हमरा निन्न टूटल तँ लागल जेना आसमानसँ किछु हरहरा कए खसि रहल अछि। हम खिड़कीसँ बाहर तकैत छी। कतहु किछु नहि देखा रहल अछि । चारूकात अन्हार गुज्ज छल। किछु नहि देखाइत छल। ताबतमे बिजलौका चमकल आ बड़ी जोरक अबाज भेल। लगैत छल जेना लगे पासमे कतहु ठनका खसल अछि। तकर बाद बहुत जोर वर्षा होमए लागल। खिड़की बाटे पानि कोठरीक भीतर आबि रहल छल। हम तुरंत खिड़कीक छिटकनी बंद कए देलिऐक । माहौल तेहन भयाओन छलैक जे निन्न होएबे नहि करए। बड़ीकाल धरि ओछाओनपर पड़ल रहलहुँ । ओसारापर प्रकाश देखाएल । उत्सुकता भेल जे ई इजोत कतएसँ आबि रहल अछि। तुरंत बाहर भेलहुँ । बगलबला कोठरीक केबार खुजल छल। बिजल जरि रहल छल। मुदा पलंग खाली छल। रश्मि कहाँ गेलि? भेल जे शौचालय गेल होएत। हम ओहिना ओसारेपर ठाढ़े रहि गेलहुँ। मुदा जखन बड़ीकाल धरि कोनो अबाज नहि भेल तँ मोन आशंकासँ भरि गेल। कोठरीमे वापस जाइत छी। चारूकात तकैत छी। मुदा रश्मि कतहु नहि देखाइत अछि? एहन मौसममे ओ कतए गेलि? मोन चिंतासँ भरि गेल। किछु फुरेबे नहि करए जे की करी?बाहर मौसम आर खरापे भेल जा रहल छल। वर्षा रुकबाक नामे नहि लए रहल छल। कोठरीसँ बाहर होइत छी। ओसारापर पानिक झटक आबि रहल छल। तथापि,ओतहि ठाढ़ रहि जाइत छी। किंकर्तव्यविमूढ़ हम ओहिठाम राखल कुर्सीपर बैसि जाइत छी।

चिंतित,दुखी आ विचारमग्न। एकमात्र संतान रश्मिक एहन मौसममे एना एकाएक कतहु चलि गेलासँ हमर जे हाल भेल से सोचल जा सकैत छल। मुदा कएल की जाए? आखिर एना भेल किएक? प्रश्न-प्रतिप्रश्न अपनेसँ कए रहल छी।

हम ओहिना कुर्सीपर बैसल रहलहुँ । सामनेमे दूर-दूर धरि ककरो घर नहि छल। कनीके फटकी कलममे एकाएक इजोत भेल। जेना केओ टौर्च बारि रहल हो। टार्चक प्रकाश सोझे हमर मुँहपर पड़ल । आँखि चौंधिआ गेल।

“ई के अछि? एना हमरा आँखिपर प्रकाश किएक फेकि रहल अछि? ई चाहैत की अछि? एहन मौसममे ई कलममे की कए रहल अछि?”

एहि तरहक अनेक प्रश्न हमरा मोनमे आबि रहल छल। कखनहु होअए जे ओ प्रकाश हमरे दिस ससरि रहल अछि। कखनहु ठीक एकर उल्टा बुझाइत । मौसम से अपन तांडव केनहि छल। मोनमे भेल जे जा कए देखिएक जे बात की अछि? कलममे ई इजोतक श्रोत के अछि?मुदा साहस नहि भेल। हम ठामहि रहि गेलहुँ । थोड़े कालक बाद रहि रहि कए फेर टार्चक ओएह भुकभुकी । भय आ चिंतासँ सौंसे देह रोंआ भुलकि गेल छल। मोन भेल जे जोरसँ चिकरी। मुदा अबाज खतम। लाख प्रयास करी बाजले नहि होअए।

“हे भगवान! ई की भए रहल अछि?”

हम ओहि कुर्सीपर बैसले रहि गेलहुँ । सोचैत रहि गेलहुँ । टार्चक प्रकाश आब बंद भए गेल छल। वर्षा सेहो बंद भए गेल छल। मुदा

अखनहु चारूकात अन्हार गुज्ज । कतहु किछु देखा नहि रहल छल। आखिर रश्मि गेल कतए? कहीं ओएह तँ कलममे टार्च जरा रहल छलि? यदि से सत्य होइ तखन तँ आर चिंताक बात।

हम राति भरि अहुरिआ कटैत रहि गेल रही। थोड़े काल वर्षा रुकल छल। मोन भेल जे बाहर निकली। जा कए देखिएक जे बात की अछि। कनी आगू गेबो केलहुँ। मुदा फेर वर्षा जोरसँ शुरू भए गेल। एहनमे कतए जा सकितहुँ। वापस ओसारापर आबि गेलहुँ । छटपटाइत कुर्सीपर बैसल रहि गेलहुँ । रश्मि घुरि नहि आएलि। हम कैक बेर ओकर पलंग धरि जाइ आ वापस कुर्सीपर बैसि जाइ। मोन मानबे नहि करए जे ओ एहनो करति। बेर-बेर ओकर पलंगक सिरमासँ सटले टांगल ओकर नेनाक फोटो दिस देखी । छठिहारक दिन ओ माएक कोरामे पड़ल छलि। हम बगलेमे ठाढ़ छलहुँ,अतीव प्रसन्न। तकर बाद सालक-साल हमरासभकेँ दोसर संतान नहि भेल। एही बीच एक बेर हम काजसँ बाहर गेल रही। रश्मिक माएकेँ रद्द-दस्त होमए लगलैक। पड़ोसी अपना भरि बहुत मदति केलकैक। हमरो सूचना ओएह देलक। हम तुरंत वापसी यात्रा शुरू केलहुँ । मुदा जाबे वापस आबी-आबी ताबे ओ साफ भए गेल रहथि। ओ दिन आ आइक बीचमे बीस साल समय बीति गेल। कहि नहि हम कोन तरहेँ रश्मिक पालन-पोषण केलहुँ । की-की सपना देखैत रहलहुँ । रश्मि पैघ होएत,रश्मि बड़का हाकिम बनति,रश्मिक बिआह कोनो उच्च अधिकारीसँ करबैक ,आदि,आदि। हम जखन रश्मिक बर ताकि रहल छलहुँ तखन ओ कहिओ ई नहि कहलक जे ई आ ओ। मुदा

जे कोनो प्रस्ताव अबैक ओ किछु-ने-किछु त्रुटि निकालि कए रद्द कए दैत छलि। तखन हमरा मोनमे चिंता होअए लागल।

“बात की अछि? कहीं एकरा कतहु...?”

मुदा रश्मि कहिओ किछु स्पष्ट नहि कहलक । सभदिन हमरा टरकबैत रहि गेलि। हम ओकरापर विश्वास करैत रहि गेलहुँ। ओहि राति जखन ओ अकस्मात चंपत भए गेलि तँ हमरा असीम कष्ट भेल। जेना हमर सभटा स्वप्न नष्ट भए गेल। यदि ओकरा ककरो संगे जएबेक रहेक तँ हमरा कहितए। हम सभटा ओरिआन कए दितिऐक। अपना भरि उत्सव मनबितहुँ । कहिआसँ ओकर बिआहक हेतु उपहार सभक जोगार केने रही। सभ मास किछु-ने-किछु कीनी। मोनेमे सोची जे बेटीक बाप छी। एक्के बेर सामानसभक ओरिआन करब मोसकिल होएत। तेँ जेना-जेना पार लागैत गेल,कीनैत गेलहुँ । मुदा सभकिछु धैले रहि गेल। रश्मि ओहि राति गेलि से गेलि। ओकर बाद कतेको राति ओहिना वर्षा भेलैक। ओहने भयाओन दृश्य सभ उपस्थित होइत रहल। हम ओहिना ओसारापर जा कए कुर्सीपर बैसि जाइ। की पता ओमहरसँ फेर केओ टार्च मारए? फेरसँ हमरा देहपर ओहि टार्चक प्रकाश पड़ि जाए। मुदा से कहाँ भेल? ओ प्रकाश दोबारा नहि देखाएल। नहि जरल ओ टार्च फेरसँ। हम राति-राति भरि जगैत रहि गेलहुँ,छटपटाइत रहि गेलहुँ। मोनमे होअए-“ ओ पुछतीह तँ हम की उत्तर देबनि?

“पहिने हम ओहि लोक पहुँचब तखन ने? हमर जिनगी तँ जे ना पहाड़ भए गेल अछि।”

एहि तरहेँ सालक-साल बीति गेल। रश्मि घुरि नहि आएलि। ओकर किछु अता-पता नहि चलि सकल।

हमर मोन तहिआसँ कहिओ शांत नहि भेल। हम ई बात नीकसँ बूझि गेलहुँ जे जाबे रश्मि भेटि नहि जाएत हमर मोन एहिना उद्वग्न रहत,बेचैन रहत,शांत तँ भइए नहि सकैत अछि। रश्मिकेँ बिसरि जाएब असंभव अछि। अनकर बात रहितैक तँ साइत किछु संभवो होइत। मुदा रश्मि,हुनकर हमरा लग धरोहर छलि। ओ की सोचि एहि दुनिआसँ गेल हेतीह? “इएह ने जे हम भने जा रहल छी,मुदा एकर पिता तँ छैहे।”आँखि मुनैत-मुनैत ओ हमरापर उम्मीद रखने हेतीह । हम हुनका की कहबनि? कोन मुँहे हम स्वर्गोमे हुनकासँ भेंट कए सकब? के बूझत हमर ई दारुण दुख?

हमर दुखक अंते नहि भए रहल छल। रश्मिक कतहु कोनो जनतब नहि भेटि रहल छल। जकरे पुछितिऐक,मुँह दुसि दैत छल। मुदा हम हारि नहि मानलहुँ । जेना-तेना कए हम एकटा साइकिल कीनलहुँ । ओहि साइकिलसँ सहरे-सहर घुमैत रहलहुँ । हम सालक-साल ओहि साइकिलसँ घुमि-घुमि रश्मिकेँ तकैत रहि गेलहुँ। लोकसभ हमरा साइकिलपर एना बौआइति देखि बाजि उठैत छल-

""देखिऔ बतहाकेँ।"

"बात की छैक? ई एना किएक बौआ रहल छै? माथा खराप छै की? "

"नहि, नहि। एकर बेटी कतहु चलि गेल छै। ओकरे ताकि रहल छै? "

"मुदा ओ गेलैक कतए? "

"से की जाने गेलिऐक? "

"मुदा एकर हालति तँ बहुत खराप लगैत छैक। कहीं किछु भए ने जाइ।"

लोकसभकेँ बतिआइत देखि हम सहटि कए ओमहरे चलि जाइ। साइकिलकेँ रोकि दिऐक। मुदा हमरा लगीच अबैत देखि लोकसभ कात भए जाइत। किछु नहि बजैत।

हम की करितहुँ? अपने सन मुँह लेने फेरसँ साइकिलपर बिदा भए जाइ।

ई बात हम बुझिऐक जे एना साइकिलपर घुमलासँ रश्मि नहि भेटि सकति। ओ कोनो हेराएल थोड़े अछि जे भेटि जाएत?

"से अहाँ कोना जनैत छी? "

"की पता ओकर अपहरण भए गेल होइक? "

"की पता ओकरा संगे किछु अनट भए रहल होइक? "

मुदा हम कइए की सकैत छी? बेटीक बाप छी। अपन एकमात्र संतानक कल्याण हेतु सभदिन प्रयासमे लागल रहल छी। मुदा घटनाक्रम एहन रस्ता पकड़त से के सोचि सकैत छल?

एकदिन एहिना साइकिलसँ पटनासँ गाम दिस बिदा रही। मोनमे भेल रहए जे गामे वापस चली। की पता ओतहि किछु जानकारी भेटए। सहर-सहर बौएलासँ तँ किछु भेल नहि। गंगापूलसँ उतरले रही कि किछु गोटेकेँ सड़कक बामा कात दिस एकत्रित देखलिऐक।

पत्रकारसभ फोटो घिचि रहल छल। पुलिस सेहो पहुँचि गेल छल। हम पुछलिएक-

“बात की छैक?”

“कोनो लड़कीक लास पड़ल छैक। उत्सुकता भेल । आगू बढ़ि कए देखैत छी।”

लासक अंग-भंग भेल छल। हम ओकर मुँह दिस देखिते चिकरि उठैत छी-

“ई तँ रश्मि अछि।”

हमरा एना चिकड़ैत देखि पुलिस पकड़ि लेलक।

“एना किएक चिकरि रहल छी?”

“ई तँ हमर बेटी रश्मि अछि।”

पुलिस हमरा अपने संगे थाना लेने चलि गेल। ओहि लासकेँ सेहो थाना लेने चलि गेल। लासक पहिचान भए गेल छल। दोसर दिन अखबारक मुख्यपृष्टपर सामाचार छपल छल-

“अज्ञातप्रेमी द्वारा लिभ इन पार्टनरक हत्या...।”

15.8.2023

किडनीक चोर

भोलाबाबू दिल्लीमे एकटा प्राइभेट कंपनीमे काज करैत छलाह। हुनकासभकेँ दूटा बच्चा भेलनि। दुर्भाग्यवश असमयमे ओ सभ चलि जाइत रहलनि। एहि घटनासँ ओ सभ बहुत दुखी भए गेलथि। बहुत दिन धरि परेसान रहथि। कोनो काजमे मन नहि लागनि। घरमे पत्नी,कवितासे दिन-राति हाकरोस करैत रहथिन। बादमे ओ अपन एकटा भागिनकेँ अपना संगे रखलनि। ओकरा संगमे आबि गेलासँ हुनकासभकेँ किछु उसास भेलनि।ओकरा नीकसँ पढ़ा-लिखा देलखिन। किछु दिनक बाद ओकरा मुम्बईमे बैंकमे नौकरी लागि गेलैक। ओकर जिनगीक सबाल छलैक। कोना रोकितथिन? आखिर ओ नौकरी करए मुम्बई चलि गेल। आब ओ दुनू बेकती नितान्त असगर भए गेलथि । शुरूमे गामसँ केओ-ने-केओ अबिते रहैत छलनि। जकरा जे संभव होइक ओ मतदिओ केलखिन। कतेक गोटेकेँ अपना ओहिठाम राखि कए नौकरी लगबा देलखिन। मुदा आब केओ नहि अबैत छनि।

भोलाबाबूक साठि सालक बाद कंपनीक काजसँ सेवानिवृत्ति भए गेलनि। आब की करताह?कोना समय बिततनि? कंपनीक मालिक हुनकर परिस्थितिसँ अवगत रहथि। हुनकर काज आ व्यवहारसँ सेहो ओ बहुत संतुष्ट रहथि। ओ भालाबाबूक बहुत आदर करथि।कोनो विशेष बात होइक तखन हुनकर परामर्श अबस्स लेथि।अस्तु,साठि सालक बादो कंपनीक मालिक हुनका रखने रहलथि। बीच-बीचमे भोलाबाबू

कैक बेर काज छोड़ए चाहलनि। मुदा मालिक मना कए दैत छलखिन।एहि तरहेँ सेवानिवृत्तिक दस साल बाद धरि ओ काज करैत रहलाह। मुदा आब मोन नहि लागनि। आखिर एकदिन मालिककेँ जवाब दए देलखिन-

“आब हमरा फुरसति देल जाए। ”

“से किएक?”

“आब मोन नहि लगैत अछि। देहमे सक्को नहि लगैत अछि।”

“जतबे पार लागए ततबे करू, मुदा काज नहि छोड़ू। एहिठाम रहब तँ समय बीति जाएत।घरमे बैसल की करब?”

अपना भरि मालिक बहुत बुझेलखिन। मुदा ओ अड़ि गेलथि। काज छोड़ि देलथि। थोड़ेक दिन तँ बहुत नीक लगलनि। जखन जे मोन होनि से करथि। जखन मंदिर जेबाक मोन होनि तखन मंदिर चलि जाथि। जखन बजार घुमबाक मोन होनि तखन ओमहरे चलि जाथि। एकदिन सड़कपर जाइत काल एकटा मोटर साइकिलबला सँ टक्कर भए गेलनि। ओ माथे भरे बीच सड़कपर खसलाह। आस-पास जा रहल लोकसभ दौड़ल।हुनका अस्पताल उठा कए लए गेलनि।अस्पतालमे इलाजक बाद हुनकर जान तँ बाँचि गेलनि,मुदा माथामे लागल भीतरिआ चोटक कारण हुनकर स्मृति कमजोर होमए गेलनि। क्रमशः ई बिमारी बढ़िते गेलनि।एहने हालतिमे एकदिन ओ घरसँ निकलि गेलखिन आ वापस नहि आबि सकलखिन।

सब दिन जकाँ कविता भोरुका चाह बना कए भोलाबाबूक प्रतीक्षा कए रहल छलीह।मुदा हुनका देरी भेल जानि। चाहकेँ झाँपि कए

राखि देलखिन। हुनका घर लौटबामे विलंब होइत देखि मोनमे तरह-तरहक बात सभ आबए लगलनि-

"रातिमे तँ घरेमे रहथि। कैक बेर खोँखी करैत देखिअनि। ओ भोरे टहलए चलि जाइत छलाह। आइओ तहिना चलि गेल हेताह।आब अबिते हेताह।"-मुदा जखन दस बाजि गेलैक आ तखनहु ओ घुरि नहि अएलाह तँ कविताकेँ चिंता भेलनि।

"अखन धरि कतए छथि? कहीं किछु गड़बड़ तँ नहि भए गेलनि।"

एगारह बाजल,बारह बाजल, दू बाजल,भोजनोक बेर बीति गेल। तैओ ओ वापस नहि अएलाह। आब तँ कविताक हालति खराप होमए लगलनि। चिंतासँ होनि जे माथ फाटि जाएत। मुदा कहथिन ककरा? केओ लगमे नहि रहनि।अपने चलल होनि नहि। छओ माससँ ठेहुन जाम भए गेल छनि। दिन-राति ठेहुनमे दर्द करैत रहैत छनि। ओएह बैदजीसँ दबाइ आनि दैत छलखिन । मुदा कोनो खास फएदा नहि भेलनि। आखिर ओहनो हालतिमे हुनका तकबाक लेल कविता बिदा भेलीह। कनीके आगू गेलथि कि हुनकर ठेहुन जाम भए गेलनि। ओ सड़कक कातमे ठामहि बैसि गेलीह, ओतए बैसले-बैसल ठोह पारि कए कानए लगलीह।हुनका एना कनैत देखि सामनेसँ जा रहल पुलिसबला अपन जीप ठाढ़ केलक । जीपमे सँ पुलिस हुनका लग उतरल । पुलिसकेँ देखितहि ओ आर जोर-सोरसँ कानए लगलीह।

"अहाँ एना किएक कानि रहल छी? बात की छैक?"

पुलिसक बात सुनिओ कए ओ कनैत रहि गेलीह। किछु बाजि नहि सकलीह।

“-जखन अहाँ किछु बजबे नहि करबैक तखन हमसभ कोना मदति कए सकब? की भेल,केओ किछु कहलक,कि घरमे चोरी भए गेल,कि केओ दुखित छथि? किछु तँ बजिऔक?”

“से सभ किछु नहि भेल।”

“तखन?”

“हमर पति भोरे टहलए गेलथि,मुदा अखन धरि घर वापस नहि अएलथि।”

“हुनकर फोटो अछि अहाँ लगमे?”

“फोटो तँ संगमे नहि अछि।घर गेलासँ भेटि सकैत अछि।”

“कोनो फोन छनि हुनका लगमे?”

“हुनकर फोन तँ घरेमे छलनि।”

“कोनो बात नहि।अहाँ हमरासभक संगे घर चलू। ओतए हुनकर फोटो लेब। तखने किछु प्रयासो कएल जा सकत।“

कविता पुलिस जीपमे बैसि जाइत छथि। ओहिठामसँ सटले हुनकर घर छलनि। थोड़बे कालमे जीप हुनकर घरक आगूमे ठाढ़ भए गेल।कविता संगे पुलिस हुनकर किरायाक घरमे प्रवेश करैत अछि।एक्केटा कोठरीमे चारूकात सामानसभ भरल छल। ओछाओनटा बाँचल छल। सामनेमे ओसारापर भानस होइत छल। ओसारापर भानसक ओरिआन छल।ओकरे दोसर भागमे अतिथिक लेल दूटा कुरसी राखल छल।घरक हालति देखि कए पुलिस चिंतामे पड़ि गेल।घरक

परिस्थिति तँ गड़बड़ रहबे करैक,ऊपरसँ ई परेसानी आबि गेलैक।पुलिसो चिंतित भए गेल। ओ कवितासँ लिखित सिकाइति देबाक आग्रह केलकनि। हुनर फोटो लेलकनि आ थाना चलि गेल।कविताक लिखित सिकाइतिपर पुलिसमे भोलाबाबूक गुमसुदगीक मामिला दर्ज कए लेल गेल। कविता नित्य भोर-साँझ थाना फोन करथि। मुदा भोलाबाबूक किछु पता पुलिसकेँ नहि चलि सकलैक। ओ एसगरि घरमे हाकरोस करैत रहलीह। मुदा केओ किछु नहि कहि सकलनि।

ओहि दिन घरसँ निकललाक बाद भोलाबाबू नित्यप्रतिक आदतिक अनुसार गुलाब पार्क जा रहल छलाह। मुदा रस्ता भुतला गेलनि। ओ बड़ीकाल धरि अपने घरक चारूकात चक्कर लगबैत रहि गेलाह। ने घर वापस गेल होनि ने पार्कक रस्ता भेटनि। एहि तरहेँ बहुत समय बीति गेल। ओ कखनहु घर दिस बिदा होथि ,कनी काल आगू बढ़ति,फेर वापस पार्क दिस लौटि जाथि। सड़कक कातमे ठाढ़ दूगोटे हुनका एहि तरहेँ बौआइति देखैथ रहनि। ओ सभ बुझि गेल जे हिनकर मानसिक हालति ठीक नहि छनि। मौकाक फएदा उठबैत ओ दुनूगोटे हुनका लग सहटि कए आएल। लगमे आबि कए कहैत छनि-

“गोर लगैत छी बाबा ।”

भोला बाबू ओकरसभक मुँह बकर-बकर तकैत रहि गेलखिन। किछु जवाब नहि देलखिन।ओ सभ कहलकनि-

“बाबा केमहर जा रहल छी अपने?”

“घर जा रहल छी मुदा रस्ते नहि भेटि रहल अछि।”

“अहाँक घरक की पता अछि?”

“से तँ मोन नहि अछि।”

“घरक किछू हुलिआ दए सकैत छी की?”

भोलाबाबू ओकरसभक मुँह बकर-बकर देखैत रहि गेलखिन।किछु उत्तर नहि देलखिन।

“ओ सभ भालाबाबूक हालतिक फएदा उठबैत हुनका संग कए लेलकनि-

“हमरा संगे चलू।हमसभ अहाँकेँ घर पहुँचा देब।”

भोलाबाबू ओकर बात मानि ओकरा संगे बिदा भेलाह। थोड़े कालक बाद ओ सभ हुनकर नाक लग रुमाल राखि देलकनि। तकर बाद जे ओ बेहोस भेलाह से भेले रहि गेलाह। फेर होस नहि भेलनि। दुनूगोटे हुनका ओही अलतिमे एकटा अस्पताल लए गेल। अस्पतालमे पहिनेसँ सभटा जोगार कएल छल। डाक्टरसभ शल्यक्रिया कए हुनकर देहसँ दुनू किडनी निकालि लेलकनि। तकर बाद ओहने हालतिमे अस्पतालमे हुनका छोड़ि कए ओ सभ निपत्ता भए गेल। दू-तीन दिन धरि ओ ओही अस्पतालमे पड़ल रहलाह।अंततोगत्वा,ओतहि हुनकर मृत्यु भए गेलनि। भोलाबाबूक किछु अता-पता नहि रहनि। केओ जानकार नहि रहनि। हुनकर लासकेँ शवगृहमे राखि देल गेल।

एकदिन अचानक भोलाबाबूक फोनक घंटी बाजल। हुनकर मोबाइल फोन घरेमे रहि गेल रहनि। ओकरा कविता नित्य भोरे चार्ज कए देथि। की पता,केओ फोन करए। से सही साबित भेलनि। आखिर एकदिन ओहिमे ककरो फोन आएल।

“हम थानासँ बाजि रहल छी।”

"की बात?"

"अस्पतालक शवगृहमे एकटा लास पड़ल छैक। ओकर हुलिआ अनमन भोलाबाबू सन लागि रहल अछि। अहाँ अस्पताल चलितहुँ तँ लासक पहिचान भए जाइत।"

पुलिसक बात सुनितहि ओ भोकारि पारि कए कानए लगलीह।हुनका एना कनैत देखि लगपासक लोकसभ ओहिठाम एकत्रित भए गेल। लोकसभ हुनका बुझेबाक बहुत प्रयास केलक,मुदा ओ कनिते रहि गेलीह। थोड़े कालमे ओतए पुलिसक जीप आएल।पुलिसबलासभ जेना-तेना हुनका जीपमे बैसओलक आ अस्पताल दिस बिदा भए गेल।

शवगृहमे राखल-राखल ओ लास बहुत विकृत भए गेल छल। ओकरा कहुना चिन्हल नहि जा सकैत छल।कविता बेरि-बेरि ओकरा देखैत रहलीह। अचानक हुनकर ध्यान हाथक आंगुरपर गेलनि। ओहि आंगुरक नह बीचसँ फाटल छल। से देखितहि ओ चिचिआ उठलीह-

"ओएह छथिन।"

एतबा बाजि ओ अचानक लासपरसँ कपड़ा उठा देलखिन। लासक हालति देखि ओ चिचिआ उटलथि-

"हिनकर तँ अँतरी-भोतरी निकालि लेने छनि।"

शवगृहक प्रभारी हाँइ-हाँइ लासकेँ झाँपि देलक। पुलिससँ किछु बतिआएल आ कविताकेँ शवगृहसँ बाहर कए देलकनि। ओ चिचिआइत रहि गेलथि। पुलिस एतबे बाजल-

“रच्छ मनाउ जे पुलिसक तत्परतासँ हुनकर लास भेटि गेलनि। दलालसभ ओकरो सौदा कए लेने छल।कनीको आर देरी होइत तँ ओहो चलि जाइत।रहल आर बात से हमसभ किडनी चोरीक केस दर्ज कए लेलहुँ अछि,जाँच चलि रहल अछि।”

१५।०८।२०२४

गाछ फेर हरिआ गेल

"रे सुतले रहबही । भोर भए गेलैक । मालिक अबिते हेथिन।"

"तोरो चैन नहि छौ । हमसभ कोनो माल-जाल नहि छी जे केओ हाँकि देत। गाछ भए कए जन्म लेने छी। ने कतहु जेबाक अछि, ने किछु करबाक अछि। तखन अनेरे भोरे उठि कए की हेतैक? भने पड़ल छी।"

"इएह तँ तोहर गड़बड़ी छौ । तें तूँ अखन धरि एतनीटा छैं ।"

"तूँही कोन ताड़क गाछ भए गेलह अछि। कनी पैघ की छह जे होइत रहैत छह जे की करी की नहि।

"पानिक बाल्टी लेने मालिक आबि रहल छथि। संचमंच भए जाह। हुनकर स्वागत करहुन।"

"केना स्वागत करबनि? हमसभ कोन जोकर छी? ने बाजि सकै छी,ने किछु दए सकै छी।"

"हद भए गेल। जेना हमसभ आपसमे गप्प करैत छी तहिना हुनको संगे कए सकैत छह।"

"माने?"

"जखन ओ लगमे अओथुन तँ मूरी हिला दिअहुन। कते नीक लोक छथिन। सभदिन हमरासभकेँ पानि दैत छथि, खाद दैत छथि, हमरसभक जड़ि कोरिआ दैत छथि। ततबे नहि हालो-चाल पुछैत रहैत छथि।"

“से तूँ कोना बुझैत छहक जे ओ की बाजि रहल छथि।”

“तोरो कहिओ बुद्धि नहि भेलह। भाषा नहि बुझबै ने, मुदा हुनकर भाव तँ बुझाइते छैक। असली तँ सएह भेलैक ने।”

“केना ओ अपनासभक लग अबिते मुस्काइत छथि, केना हल्लुक बात करैत छथि, केना एकटक अपनसभक फूल-पात दिस तकैत रहैत छथि। आ से कोनो एकदिन नहि, निरंतर । हम तँ हुनकासँ बहुत प्रभावित छी।”

बड़का नेबो गाछक बात सुनि कए छोटका नेबोक गाछ जोरसँ हँसि देलक। ओकरा एना हँसैत देखि बड़का नेबो छगुन्तामे पड़ि गेल। मोने-मोन सोचैत रहए-

“हमर पड़ोसी बहुत मूर्ख बुझा रहल अछि। मुदा करबैक की? सभक अपन-अपन स्वभाव होइत छैक चाहे आदमी होअए कि जानबर, कि गाछ-वृक्ष ।”

हम पानिक डोल लेने जखन नेबो गाछ लग पहुँचलहुँ तखन बुझाएल जेना कि ओ सभ आनन्दमे मग्न छल , नृत्य कए रहल होअए । ओकरासभकेँ हमर आगमनक अंदाज भए गेल रहैक । हमरा तँ ओकरसभक छिज्जा बुझल रहए। ओ सभ नित्य हमरा देखितहि उत्सव मनेबाक भावमे आबि जाइत छल। आइओ जखन हम पानिक डोल लेने पहुँचलहुँ तखन ओकरासभकेँ नृत्यक मुद्रामे देखलहुँ । मुदा ओ सभ जखन अपन ओहि भाव-भंगिमामे विभोर रहि गेल,हमर आगमनक किछु ध्यान नहि केलक,तखन हमरा कनी छगुन्ता लागल आ से स्वाभाविके। किएक तँ आन दिन हमरा देखितहि ओ सभ संचमंच भए जाइत छल जेना कि हमरा सलामी देबए जा रहल होअए । निस्सन्देह ओ सभ बाजए

नहि किछु,हमरा टोकबो नहि करए,मुदा ओकरसभक मौनेमे सभ किछु स्पष्ट भए जाइत छलैक। ओकरसभक सिनेह देखि हम चकित रहि जाइत छलहुँ । जल्दीसँ ओकरासभक जड़िमे पानि ढारैत छलहुँ। कहिओ काल कोरिआ सेहो दिऐक।

ओहि दिन हमर हाथमे खुरपी देखि बड़का नेबो बजैत अछि-

“बाबा कनी स्थिरे चलेबै, कहीं एहन ने होअए जे हमर जड़िए कटि जाए।”

“दुर्र बताह नहितन! तोरा माने जे हमरा कोनो अकिल नहि अछि की? हम एहिठाम आएल छी तोहर मदति करए ने कि तोरा खतम करए। तोहरसभक खूब विकास होअए,तूँसभ खूब फूलह,फरह सएह हमर लक्ष्य अछि ने ।”

“से तँ हमसभ बुझिते छी।”

“तखन किएक डराइत छह?”

“की कहू। आइ भोरे बहुत भयाओन दृश्य देखबामे आएल । तखनहिसँ मोन कोनादनि कए रहल अछि ।”

“से की?”

“कहैत छी। पहिने हमरासभक जड़िमे पानि ढारि लिअ, जाहिसँ कनी पुष्ट भए जाएब । फेर अपन मोनक बात कहब।”

हम ओकर आग्रहकेँ बुझलिऐक। तुरंत दुनू नेबो गाछक जड़िमे पानि ढारए लगलहुँ । पानि पड़ितहि ओ सभ तँ जेना आनन्दमए भए गेल।

“आब कहह जे की बात भेलैक?”

हमरा से कहतहि दुनू नेबो एक्के संगे बाजए लागल। पहिने तँ कनी काल हम सुनैत रहि गेलहुँ । बुझेबे नहि करए जे बात की छैक? ई सभ आइ

एतेक तनाओमे किएक अछि? बिना रुकने एक्के बेर बजैत चलि जा रहल अछि । भेल जे कनीकालमे अपने ठीक भए जाएत। मुदा जखन ओसभ ओहिना करैत रहल तखन हमरा तामस भेल-

“एना किएक केने छह? लगैत अछि जेना तोरासभकेँ आपसमे उपराउज भेल छह।

“से की रहतैक मालिक, मुदा बाते तेहने छैक।”

“जखन कहबह तखन ने बुझबैक ।”

बड़का नेबो चुप भए गेल । छोटकाकेँ इसारा देलकैक-

“अच्छा तूहीं बाज । बाते तेहने छैक, बाते तेहने छैक, बजैत रहलासँ की फएदा?”

“आइ भोरे-भोर ट्रकबला लोहाक छर लदने एमहर आएल छल । बगलमे जे मकान बनि रहल अछि तकरे ओहिठाम जेबाक रहैक । ओहिमे छरक अतिरिक्त सीमेंटक बोरासभ सेहो छलैक। किछु लकड़ीसभ सेहो छलैक। ट्रकबला गाड़ी रोकलक आ सामानसभ खसबाक उपक्रम कइए रहल छल कि जमीनबला चिचिएलैक-

“ई की कए रहल छह? एहिठाम थोड़बे सामानसभ खसेबाक छलैक? ”

“तखन?”

“पहिने ने पुछबाक चाही।”

सभटा बात तोहर मनेजरकेँ कहल गेल छैक।

“मुदा ओ तँ किछु नहि कहलाह। अबैत काल बस एकटा पुरजी थम्हा देलाह। ओहिमे अहाँक पता लिखल अछि, आर किछु नहि।”

“से हम की कए सकैत छी? तूँ ट्रककेँ जमीनक सामने आनह। हम ओतहि आबि रहल छी।”

“औ बाबू! तकर बाद तँ ओ ट्रककेँ तेना आगू-पाछू करए लागल जे हमरासभकेँ तँ भेल जे गेल छी । दुनूगोटे भोकारि पारि कए कानए लगलहुँ । तखने आगू दिससँ एकटा कार तेजूसँ आएल । ट्रकबला तुरंत ब्रेक लगओलक। यदि ओ से नहि करैत तखन दुनूगोटे आपसी टक्करमे नष्ट भए जाइत । आखिर ट्रकबला बगलसँ निकलबाक रस्ता धेलक। हमरसभक जानमे-जान आएल ।”

“समस्या तँ ठीके गंभीर रहैक । रस्ता कातमे रहलासँ इएह दिक्कति छैक । मुदा कएल की जाए?”

“घेरेबा दए दिऔक मालिक।”-बड़का नेबो बाजल ।

“कोनो ई हमर अपन जगह अछि। सार्वजनिक स्थान छैक। जखने घेर-बेर करबैक सभ हमरेपर आक्रमण कए देत।”

“सएह कहू। ई जगह अहाँक नहि अछि?”

“नै हौ।”

“हमसभ तँ बुझी जे अहाँक अपन जगह अछि।”

“आब तँ भगवाने मालिक छथि।”

“एतेक चिंता नहि करह। हम छी ने। जे संभव होएत से करब आ करिते छी।”

हम फूलसभमे पानि देलहुँ । थोड़े काल ओतहि ठाढ़ रहलहुँ । जा धरि हम ओहिठाम रही,ओकरासभसँ किछु-किछु पुछैत रहलहुँ । मुदा पानि भेलाक बाद ओ सभ अपनामे मगन छल। हमहूँ ओहिठामसँ वापस चलि

अबैत रहलहुँ । हम कनीके आगू गेल होएब कि छोटका नेबो हाक देलक-

“मालिक खुरपी अनलिऐक आ ओहिना चलि जेबैक? कोरिएबैक नहि?”

ओकर बात सुनि कए खुरपीपर ध्यान गेल । हम चोट्टे घुमलहुँ ।

“बात तँ ठीके कहि रहल छह। आब आइ तँ पानि दए देलिऐक। एक-दू दिनक बाद कोरिआ देबह। तखनहि खाधो दए देबह । आइ बहुत नीक रौद निकलल छैक । तूँ सभ आनन्द करह। हमहूँ सहरसँ घुमने अबैत छी।”

“ठीक छैक ।”-छोटका नेबो बाजल। बड़का नेबो झुमि-झुमि कए ओकर बातक संस्तुति केलक। हम घर वापस आबि गेलहुँ । घरमे सोफापर बैसल समाचार सुनि रहल छलहुँ । अचानक आइ सरकारी छुट्टीक घोषणा भेलैक। मोनमे बहुत सुविधा बुजाएल । आरामसँ ओतहि सोफापर पड़ि गेलहुँ । सोफापर पड़ले-पड़ल नेबोगाछक इतिहास मोन पड़ि गेल। केना एकदिन नरसरीसँ हम दूटा गाछ कीनने रही। दुनू एक्के आकार-प्रकारक छल। नरसरीबला बहुत प्रशंसा केने रहए-

“ई गाछ बरमसिआ अछि। कहिओ नेबोक दिक्कति नहि होअत। सभदिन अपने गाछक नेबो खाएब, सुगंधसँ गम-गम करैत ।”

हम घर आबि कए दुनू नेबोकेँ सामनेक खाली जगहपर रोपि देलिऐक। तकर बाद दिन-राति ओकर सेवा करैत रहलहुँ । धीरे-धीरे दुनू नेबो बढ़ए लागल। जेना-जेना समय बीतल,तेना-तेना पुबारि कातक नेबो बेसी पैघ होइत गेल,पछबारि कातक नेबो ओकर आधा देखाइत छल। हम दुनूगाछमे पानि दिऐक,दुनू गाछमे खाध दिऐक,दुनूकेँ कोरिआबी,मुदा

दुनूक विकास दू रंग होइक आ से क्रम सभदिन बनल रहि गेलैक । संभवतः गाछ-गाछक अदिष्टक फरक ,किंवा ओहिठामक माटिक गुणमे फरक रहल होएत। एहि तरहेँ दू साल समय बीति गेल।
दुनू नेबो जबान होमए लागल। मुदा अखनहु दुनूक विकासक गति पूर्ववते छल। बड़का नेबो बेस चतरि गेल छल। छोटको बढ़ल ,मुदा ओकर आधा । किछु दिनक बाद हम जखन छोटका नेबोकेँ ध्यानसँ देखलहुँ तखन एकटा छोटसन नेबोक मज्जर देखाएल । मोनमे कतेक खुसी भेल से नहि कहि सकैत छी।ओहि दिन छोटका नेबो लग बहुत काल ठाढ़ रहि गेलहुँ । ओकरा बहुत दुलार केलहुँ, ओकर डारि सभकेँ नहूँ-नहूँ हिलबैत रहलहुँ । बड़ीकाल धरि ओकर टहनीसभकेँ देखैत रहि गेलहुँ । छोटका नेबो हमरा प्रसन्न देखि बहुत गौरावान्वित छल।
“देखलिऐक ने। आखिर छोटके जितल ।”
“सही कहि रहल छह।”
लगीचेमे बड़का नेबो सभटा बात सुनि रहल छल। ओकर मोनमे बहुत ग्लानि भेलैक। छोटका नेबोक बात ओकर मोनमे गड़ि गेलैक । एकर बात तँ ओ जान लगा देलक। छओ मासक बाद तकर परिणाम देखबामे आएल । बड़का नेबोक सौंसे गाछ मज्जरसँ भरि गेल । छोटको नेबो पाछू नहि रहल । ओहो अपना भरि फुलाएल,ओहूमे छोट-छोट बतिआसभ देखाएल। हम तँ आनन्द रही । खूब उत्सहासँ दुनू नेबो गाछक सेवा करए लगलहुँ । पानि-खाध दैत रहलहुँ । तीनमासक बाद दुनूगाछमे नेबो झबड़ि गेल छल। आब फुरेबे नहि करए जे की करी? एतेक नेबो की कएल जाएत? हमसभ कतेक नेबो खा सकब? भात,दालिमे टटका

नेबोक सुगंधित रस पड़ितहि भोजनक स्वाद बदलि जाइत छल। मासक-मास खूब नेबो खाइत रहलहुँ, पानिमे ओकर रस गारि कए पीबैत रहलहुँ । तथापि,ओतेक नेबोक की होइत? जकरा-तकरा बटैत रहलहुँ। थोड़बे दिनक बाद दुनूगाछ फेर फुलाए लागल । ई क्रम साल भरि चलिते रहल ।हम बहुत खुस रही जे हमर मेहनति सफल रहल ।

“मालिक तँ एतेक सेवा कए रहल छथि तथापि हमरा ताकति नहि लागि रहल अछि।”

“से किएक?”

“किछु नहि बुझा रहल अछि। जहिना तोरा जड़िमे खाध-पानि दैत छथुन तहिना हमरो जड़िमे सभ किछु पड़ैत अछि। मुदा कहि नहि की भेल? हमरा तँ जेना किछु अरधैते नहि अछि। ऊपरसँ बामा कातक पातसभ सेहो पिअर भेल जा रहल अछि।”

“की कहिअह? हमरा तँ लगैत अछि जेना तोरा नजरि लागि गेलह। मालिक छथि सज्जन । सभकँ नेबो बँटैत रहलखिन। की पता ककरो कुदृष्टि पड़ि गेल होएत? ”

“की करी किछु नहि बुझा रहल अछि।”

“चिंता किएक करैत छह। जे अपना हाथमे अछिए नहि तकर कोन? मालिके किछु करथिन।”

दुनू नेबोक गाछ आपसमे बतिआइत रहए । संयोगसँ हम ताबे गाछ लग आबि गेल रही। बड़का नेबोक चिंताक अनुमान भेल । कारण कतबो टोकिऐक ओकरा बकार निकलने नहि करैक। जरूर इकरा किछु दुख छैक। -हम मोने-मोन सोचलहुँ । बड़का नेबोपर बहुत ध्यान देबए लगलहुँ

। कृषि वैज्ञानिकक परामर्शसँ दबाइ सेहो देलिऐक। पानि-खाध तँ दैते रहलिऐक। मुदा ओकर हालति गड़बड़ाइते गेलैक । क्रमशः आरो पातसभ पिअर होइत गेलैक। फूलसभ झड़ि गेलैक। किछु नेबो तँ छोटेटा अमे पिअर भए खसि पड़ल । आखिर कएल की जाए? नेबो गाछसभ लग जाइ तँ छोटका तँ ओहिना हरिआएल रहैत छल,मुदा बड़काकेँ तँ जेना पाण्डुरोग धए लेने रहैक। केओ कहलक जे एकर जड़िमे घुन लागि गेलैक अछि। ओकर दबाइ दिऔक। सेहो केलहुँ। मुदा परिणाम आर उल्टे भेल। जेहो पात हरिआएल छल,सेहो पिअर भए खसए लागल। देखिते-देखिते बड़का नेबोक गाछ पत्रहीन भए गेल । ओकर उदासीक की वर्णन करू? जखन कखनहु पानि लए नेबो गाछ लग जाइ तँ बड़का नेबो जेना सकदम भए जाइत । ओ अविरल अश्रुप्रवाहसँ हमर मोनकेँ दुखी कए दैत छल। हम ओकर हाल-चाल पुछिते रहिऐक। मुदा ओ सदिखन गुम-सुम रहए। छोटका नेबो जरूर अपना भरि हमर संग दिअए। प्रसन्नतापूर्वक संवाद करबाक चेष्टो करए।मुदा जकर पड़ोसी दिन-राति परेसान रहतै तकरोपर किछु-ने-किछु असरि पड़बे करतै। सएह होइक।

मोन पड़ैत अछि जखन पड़ोसीक मकान बननाइ शुरू भेल रहए तखन हम ओकरासभसँ कतेक झंझटि केने रही। किएक? ओकर लोहाक छरसभ नेबो गाछ लग खसा दैक जाहिसँ ओकर कैकटा डारिसभ टूटि जाइत छल। हमरा होअए जेना हमर अपने हाथ टूटि गेल होअए,जेना हमरा कैक लाठी मारने होअए। हम कैक बेर ओकरासभकेँ आराधना करिऐक जे हमर नेबोसभकेँ बकसि दिअए। एक बेर तँ हमर पड़ोसी

दौड़ल रहैक,चिचिआ उठल रहैक,नहि तँ सौंसे ट्रक रोड़ी नेबो गाछेपर खसा देने रहैत । गेल छल गाछसभ । मुदा बाँचि गेल। हम पड़ोसीकेँ बहुत धन्यवाद देने रहिऐक। की करितहुँ? ओकर टुटलाहा डारिसभकेँ जौरसँ बान्हि-छेकि देलिऐक जाहिसँ ओसभ फेरसँ जुटि सकए। छोटका नेबोक तँ दुर्गति भए गेल छल।

एहि तरहेँ ट्रकक-ट्रक सामान मासक-मास अबिते रहल । ओहि बीच हम कैक बेर पड़ोसीकेँ कहैत रहलिऐक। ओकर ठीकेदार नीक लोक छल। हमर दुख बुझैत छल। बजबिऐक तँ हमर बात सुनबो करए। मुदा ओहो लाचार छल। जनसभ अपना सुविधाक हेतु गड़बड़ कए दैक। बहुत मोसकिलसँ छोटका नेबो बाँचि सकल। मुदा ओकर अंग-भंग तँ भइए गेलैक । तथापि ओ बाँचि गेल। मुदा ओ मामिला जखन शांत भेल तखन दोसरे समस्या शुरू भए गेल । बड़का नेबोक हेतु की,की नहि केलहुँ । मुदा ओकर हालति गड़बड़ाइते गेलैक । आब तँ जखन ओकरा लग जाइ तँ ओ बाजबो नहि करए। एकदिन बहुत मोसकिलसँ कनी फरफराएल- “माफ करब मालिक! हमर अहाँक एतबे जोग छल। जन्म-जन्म अहाँक उपकार नहि बिसरि सकब,सभ दिन मोन रहत अहाँक मधुर व्यवहार। हमरासभक प्रतिए अहाँक हार्दिक प्रेम निश्चित रूपसँ कष्ट देने होएत। मुदा की करबैक? ई समय छैक। एकर प्रहारसँ के बाँचल? राजा,रंक ,फकीर सभ एकर अधीन अछि। हमरा विश्वास अछि जे अगिलो जन्म हमरा अहाँक संग रहबे करत। हम फेर एतहि उगि जाएब । कोनो-ने-कोनो रूपमे अहींक सानिध्यमे रहब।” से कहि ओ हाँफए लागल । ओकरा आब बाजलो नहि होइक । ओ चुप भेल से चुपे रहि गेल। सभ

दिनक हेतु शांत भए गेल। तकर बाद ओकर डारिसभ सुखा गेलैक। सौंसे गाछ उजाड़ भए गेलैक।

बड़का नेबोक ई हाल देखि हमरा मोनमे वैराग्य उत्पन्न होमए लागल। सएह कहू की सोचैत रही आ की भेल। एखन एकर बएसे की भेल छल। मात्र चारि सालक छल ई नेबोक गाछ। कहाँदन तीसो सालसँ बेसी जीबैत अछि नेबोक गाछ। मुदा एकर ई गति देखि मोनमे अपार कष्ट भेल। छोटको नेबोमे पानि देनाइ छोड़ि देलहुँ । किछु दिनक बाद अपने मोनमे भेल जे गेल से गेल। जे बाँचल अछि तकरा तँ बचाउ। ककरो चलि गेलासँ ई जीवन ठहरि नहि जाइत अछि। जीवनमे आवागमन तँ चलिते रहैत अछि। गीताक अमरता संदेश मोनमे अबैत रहल। हम फेरसँ साहस केलहुँ। छोटका नेबोसँ बतिएलहुँ । हमरा लगमे देखि ओ बाजि उठल-

“चिंता नहि करू मालिक। हम छी ने। सभ दिन अहाँक संग देब । तीले-तीले बहब।”

“सत्ते?”

ओ तुरंत हमर पैरपर खसि पड़ल। हम आश्चर्यचकित रही। ई की भेल,केना भेल। असलमे चारूकात अन्हड़ उठि गेल छल। संभवतः प्रकृति छोटका नेबो संग सहमतिमे आबि गेल छल। जीवन अपन गतिसँ एक बेर फेर आगू ससरि रहल छल।

आनन्दसँ हमर आँखिसँ आश्रुपात भए रहल छल। हम दौड़ि कए घर गेलहुँ,डोल भरि पानि अनलहुँ ,छोटका नेबोमे पानि देलहुँ । हमर मोन एक बेर फेर हरिआ गेल छल। फेर चारूकात आशाक संचार भए गेल

छल। हम छोटका नेबोक डारिसभकेँ हिला-डोला कए दुलार करैत रहलहुँ। ओहो मस्त छल। गीत गाबि रहल छल। जीवन जीति गेल छल। सगरो सृजनक विध्वंशपर विजयक शंखनाद भए रहल छल।

३१।०१।२०२४

नरक भरल छैक

चन्नु अपना समयक बहुत शक्तिशाली नेता छल। पाँच बेर लगातार एमएलएक चुनाओ जितैत रहल।ओ कैक बेर दल बदलैत रहल।सदिखन जितएबलाक संगे रहए। मंत्री सेहो बनल। अंतिम समय धरि ओ मंत्री पदपर रहए। अचानक एकदिन ओकर मोन खराप भेलैक।छातीमे दर्द होमए लगलैक।लोकसभ तुरंत अस्पताल लए गेलैक।मुदा अस्पताल जाइत-जाइत ओकरा फेर बहुत जोरसँ हृदयाघात भेलैक आ अस्पताल पहुँचएसँ पहिने ओकर मृत्यु भए गेलैक। ओहि समयमे ओकर एकमात्र पुत्र अमेरिकामे रहैक। ओकरा समाद देल गेलैक। ओ जेना-तेना तीन दिनमे वापस आएल।ताधरि चन्नुक लास सुरक्षित कएल गेलैक।अमेरिका सँ ओकर पुत्रक वापसीक बादे चन्नुक अंतिम संस्कार कएल गेल।

चन्नुक अचानक मृत्युक समाचार इलाकामे पसरि गेल।हुनकर चेला-चपाटीसभ शोक-सभाक आयोजन केलक।शोकसभाक कार्यक्रम प्रारंभ भेल।ओहिठाम उपस्थित लोकसभ दू मिनटक मौन रखलक। मौनक बीचेमे लोकसभ आपसमे फुसुर-फुसुर कए रहल छल-

"बहुत फसादी छल चन्नु ।"

"भने गेल।पृथ्वीक भार हल्लुक भेल।"

"गेल से गेल। मुदा हमर तँ गला काटि कए गेल।"

"से कोना?"

“बेटाक नौकरी लेल खेत बेचि कए पाँच लाख रुपया देने रहिऐक। जखन पुछिऐक,आइ-काल्हि करैत रहल।मुदा बिना काज केने चलि जाइत रहल। आब कि होएत?खेतो बिकाएल,टको गेल आ बेटाकेँ नौकरी से नहि भेलैक।एकरा तँ नर्कोमे चैन नहि भेटतैक।”

“अहाँक की गेल। हमरा तँ सत्यानाश केने गेल।”

“से की?”

“इसकुलक ठीकेदारी हमरे नामे चलि रहल छलैक,मुदा कहिओ हमरा एक्को टाका नहि देलक,ने ओ इसकुल बनओलकैक।सभटा टाका पचा गेलैक।आब हमरा नामे वारंट घुमि रहल अछि।पछिला तारिख पर कहने रहए जे हम सभ किछु सम्हारि लेब।अहाँ अनेरे परेसान नहि होउ।आब की खाक सम्हारत।अपने चलि जाइत रहल।दरोगा पाछू पड़ल अछि।दस हजार तुरंत चाही नहि तँ जहल जाए पड़त।”

एहि तरहेँ लोकसभ तरह-तरहक बात कए रहल छल।सभ चिंतित छल,परेसान छल।ककरो कोनो रस्ता नहि देखा रहल छलैक।सभकेँ ठकि कए चन्नु चलि जाइत रहल।

”ओमहर यमपुरीसँ आएल यमदूतसभ चन्नुक प्राण घिचि तँ लेलक मुदा ओकरा राखए कतए?कतहु जोगारे नहि भए रहल छलैक।यमलोकसँ संपर्क भइए नहि रहल छलैक।वारंबार नेटवर्क व्यस्त होएबाक समाद आबि रहल छलैक। की करए किछु फुरेबे नहि करैक। चन्नुक आत्मा व्याकुल छल। ओकरा यमदूत टांगे भरे उल्टा पकड़ने छलैक।माथ नीचाँ आ पैर ऊपर ।हाथ-पैर से गछाड़ि देने

रहैक।एहनोमे यमदूत सभकेँ डर होइक जे ओ कहीं भागि ने जाए। आखिर मंत्री रहल अछि। ओकर जान-पहिचान बहुत हेतैक। केओ ओकरा लेल उच्च कोटिक सिफारिस लगा सकैत छल। तेँ यमदूत सभकेँ चन्नुक आत्माकेँ जल्दी सँ जल्दी गंतव्य धरि पहुँचेबाक रहैक।ततबे नहि, मामिलाकेँ यथासाध्य गोपनीय रखबाक रहैक। मुदा ओकरा यमलोकसँ अनुमति नहि भेटि रहल छलैक। ओकर यमफोनपर वारंबार एतबे लिखल आबि जाइक-

"प्रतीक्षा करू।चन्नु बहुत पाप केने अछि।एकरा जोकर नरक भेटिए नहि रहल छैक।ओहुना नरक ठसाठस भरल छैक।पैरो राखबाक जगह नहि रहि गेल छैक।नरकक जनसंख्या ततेक बेसी भए गेल छैक जे ओकर सीमान स्वर्गसँ मिलि गेल छैक।तेँ कैकटा धूर्त नरकबासी सभ नरकक सीमान टपि कए स्वर्ग दिस चलि गेल अछि आ ओतए तरह-तरहक परेसानी कए रहल अछि। तेँ नरकपर काँटेदार तार लगाओल जा रहल अछि।चन्नु सन-सन पापीक लेल नव नरक बनेबाक योजना सेहो विचाराधीन अछि।मुदा ओहिमे किछु समय तँ लागबे करत।"

यमदूतसभ मोबाइलपर आएल समाद पढ़ि दुखी भए गेल। ओ सभ चन्नुक आत्माकेँ टंगने-टंगने थाकि गेल छल,हाँफि रहल छल।आखिर ओ सभ चन्नुकेँ संटिंग वार्डमे पटकि देलक।चन्नू यमलोकक संटिंग वार्डमे कैक दिन पड़ल रहल।ओतए कोनो प्रकारक सुविधा नहि रहैक।ओ घामे-पसीने भिजि गेल छल।पिआससँ कंठ सुखा रहल छलैक। ओ बेर-बेर हाक दए रहल छल-

“केओ छी?केओ छी?हम पिआसे परेसान छी,भूखो लागल अछि,मोन बेचेन अछि,मदति करू।हम मंत्री रहल छी।मुदा एहिठाम केओ पुछनाहर नहि अछि।”

केओ सुननाहर नहि छलैक।संटिंग वार्डमे एक्केटा पंखा रहैक। केना-ने-केना ओहो पंखा चोरी भए गेलैक। चन्नुक सचिव लखनक आत्मा यमलोकक संटिंग वार्डमे मनेजर छल। ओ हेराफेरीमे पारंगत छल। जे ओकर सेवा केलक तकरा पंखा लगा दैक,सुतबाक लेल खाटो दए दैक,नहि तँ संटिंग वार्डमे नीचाँमे फर्सपर अखरे मे बिना कोनो ओछाओनकँ पड़ल रहू,गर्मीमे सड़ैत रहू।

चन्नु आखिर छल अनुभवी लोक। ओ किछु जोगारमे लागि गेल। संटिंग वार्डमे कैकटा भटकैत आत्मा सभ देखेलैक। मुदा ओकरा लग केओ ठहरबे नहि करैक। ओ जाबे किछु बजितए ताबे ओ सभ निपत्ता भए जाइक।संयोगसँ एकटा आत्मा साइकिल लदने जा रहल छल। साइकिल पंचर भए गेल रहैक। ओकरा चन्नु पकड़लक।

“भाइ। किछु मदति करह। हम बहुत कष्टमे छी।”

“हम तोरा जनैत छी।तूँ सरकारमे मंत्री रहल छह।तकरे फल भोगि रहल छह। तोहर पाप ततेक अछि जे ताहि जोकर नरक बनले नहि छैक।जे नरकसभ छैक सेहो भरि चुकल छैक। तँ तोरा संटिंग वार्डमे राखि देने छह।”

“एहिठाम तँ बहुत कष्ट छैक।ई तँ नर्कोसँ खराप छैक।”

“से तूँ की जाने गेलहक?नरक केहन होइत छैक । जखन जेबहक तखन ने बुझेतह। अखन तँ तू रस्ते मे छह।”

“ई पक्का छैक जे हमरा नर्के भेटत?ओतए जेबासँ बचबाक कोनो जोगार नहि भए सकैत छैक कि?”

“से हम केना कहि सकैत छी?ई बात तँ यमदूते कहि सकैत छह।”

“ओ सभ तँ बड़ बदमास बुझाइत अछि। किछु बजिते नहि अछि। संटिंग वार्डमे पटकि देलक ।अपने फोनपर लागल अछि।”

“ओहो की करतैक? ओकरा जखन यमराज किछु स्पष्ट करथिन तखने ने आगू बढ़त।सुनैत छी जे सभटा नरक भरि चुकल अछि,कतहु पैरो राखबाक जगह नहि अछि।।तँ आत्मासभ संटिंग वार्डमे जहि-तहि पड़ल अछि।”

“मुदा हमरा तँ केओ नहि देखा रहल अछि। लगैत अछि जेना हम एतए एसगरे पड़ल छी।चारूकात भम्ह पड़ि रहल अछि।”

“एहि ठाम सभटा गोलमाल छैक। एहिठाम देखबाक लेल यमचश्मा लगबए पड़ैत छैक। मुदा ओ चश्माकेँ दलालसभ बथानेसँ निपत्ता कए दैत छैक।”

“तखन. . .?”

“तखन की हेतैक।यमचश्मा बिना सभ आन्हर भेल घुमि रहल अछि।केओ ककरो देखि नहि पाबि रहल अछि।”

“ई तँ नर्कोमे महानरक अछि।”

“बेसी फटर-फटर नहि करह।दलाल घुमि रहल अछि।यदि ओकरा पता चलि गेलैक तँ एतहि सड़ैत रहि जाएब।ऊपरसँ नीचाँ धरि ओकर सेटिंग छैक।”

"एतहु दलाल छैक?"

"एहि ठाम बेसी लोकसभ अपनेसभक ओहि ठामसँ आएल छैक। एकरा सभक लेल उपयुक्त नरक छइहे नहि। तैँ संटिंग वार्डमे पड़ल अछि।"

ओहि दिन संटिंग वार्डमे साँझमे दलाल सभक पार्टी रहैक। ओ सभ भरि छाक दारू पिलक आ हंगामा करए लागल। सभ एक-दोसरकेँ गरिआ रहल छल।दारूक दुर्गंध लगितहि चन्नुकेँ पुरान दिन मोन पड़ि गेलैक। ओ तँ विदेशी दारू पिबैत छल सेहो मोफतमे। ओ पीबाक लेल छटपट कए रहल छल,मुदा केओ ओकरा कटिआ धरि जाए नहि दैक। ओ जहाँ आगू पैर बढ़बितए कि लखन किछु करामात कए दैक।चन्नु पाछुए भरे धराम दए खसि पड़ैत छल।ओमहर संटिंग वार्डमे झगड़ा बढ़ले जाइत छल। केओ ककरो सुनबाक लेल तैयार नहि छल,सभ पीने बुत्त छल। आखिर चन्नु मंत्री रहि चुकल छल। ओकरा अपनापर अखनहु बहुत गुमान रहैक।ओ दलालसभपर जोरसँ चिकरि उठल।हल्ला सुनि कए यमदूतसभक ध्यान ओकरापर गेलैक। मुदा ओसभ किछु कए नहि पाबि रहल छल। ओहोसभ दारू पिबि कए लस्त भए रहल छल।

ओ सभ चन्नुकेँ जेना-तेना पकड़लक आ संटिंग वार्डसँ जोरसँ नीचाँ फेकि देलक।चन्नु सोझे अपन गाममे अपन दनानपर खसल।ताधरि तँ ओकर अंतिम संस्कार भए चुकल छल।शोक सभा सेहो समाप्त भए चुकल छल।ओकर बेटा उतरी पहिरने ओसारापर बैसल छल। महापात्र ओकरा क्रिया-कर्म करेबाक व्योंतमे छलाह। चन्नुक निकट संबंधीसभ जिज्ञासा

कए वापस जा चुकल छलाह। अचानक चन्नुक बेटा चिचिआ उठल- “बाबू!बाबू!”

आङ्नसँ लोकसभ दौड़ल। सभ चिंतामे छल।

“की भेलह?की भेलह?”

“बाबू दनानपर घुमि रहल छथि।”

“कहाँ केओ छैक?तोरा भ्रम भए रहल छह।”

“हद भए गेल।हम तँ हुनका सामनेमे पैर उल्टओने घुमैत देखि रहल छिअनि। हुनकर डाँरमे जौरी बान्हल छनि,तीन-चारिटा मुस्टंड आगू-पाछू घेरने छनि।”

“बहुत चिंताक बात।अखन किछु दिन बचिए कए रहबाक हेतह।तूँ हनुमान चालीसा पढ़ल करह।माथ तरमे लोहा राखि लएह।”

ओमहर चन्नु नीचाँ खसल कि यमलोकसँ यमदूत सभक मोबाइलपर समाद अएलैक-

“चन्नु कहाँ गेल?ओकरा यमलोकमे बजाहटि छैक।”

“ओकरा तँ यमदूतसभ नीचाँ खसा देलैक।”

“से किएक?”

“संटिंग वार्डोमे ओ बहुत परेसानी कए रहल छल।”

“अखन ओ अछि कतए?”

“अपन डीहपर हंगामा कए रहल अछि।”

यमलोकक दूरबीनपर सभटा साफे देखा रहल छल।चन्नुकेँ आब देह तँ छल नहि। ओ भूत बनि गेल छल।ऊपरसँ यमदूतसभ से

पगहा मजगुतीसँ बन्हने रहैक ।ओकरा सक-बक नहि चलि रहल छलैक।

एतबहिमे यमदूतक मोबाइलपर यमलोकसँ समाद आएल-

“चन्नुकेँ कही जे जकर जे बइमानी केने छैक से वापस करए। संगे बेनामी संपत्तिसभ जे एकत्रित केने अछि से सरकारकेँ वापस कए दैक।”

“ओ से केना करत?आब ओकरा देह तँ छैक नहि। ओकर तँ श्राद्ध भए रहल छैक।आइ एकादशाह छै।”

“ओकरा कही जे अपन बेटाकेँ सपना दैक।सभ चोरीक मालक जानकारी दैक आ कहैक जे जकर जे चीज छैक,जकरासँ जे किछु लेने छैक से सभ वापस कए दैक। तकर बादे यमलोकमे ओकर केस खुजतैक,ओकर मामिलापर विचार कएल जेतैक जे ओकरा कोन नरकमे राखल जाएत कि ओ एहिना संटींगे वार्डमे रहि जाएत।”

यमदूतसभ चन्नुक जौरी जोरसँ घिचि देलकैक।ओ आब त्रिशंकु जकाँ लटकि रहल छल।एतबेमे ओकर सामनेसँ आत्मासभक हुजुम जा रहल छल। ओहिमे सँ किछु गोटे चन्नुकेँ कसि कए पकड़लक आ पिटनाइ शुरू कए देलक।यमदूतसभ अबाक छल। बुझेबे नहि करैक जे बात की छैक?अपना भरि थोड़-थाम लगेबान प्रयास केलक।मुदा ओ सभ की करितए?हाथ बाझल रहैक।चन्नुकेँ कनीको ढील नहि देबए चाहलक।कखन ओ ससरि जाइत कोन ठेकान?ओमहर चन्नुक परेसानी बढ़िते जाइक। ओ भूख सँ छटपटा रहल छल।

जखन ओ बहुत परेसानीमे पड़ि गेल तँ एकटा यमदूत ओकर कानमे कहलकैक-

“तोरा बचबाक एक्केटा रस्ता अछि।”

“जल्दी कहू।हम सभ किछु करबाक लेल तैयार छी।”

यमदूतसभ जोरसँ ठहाका पारि देलक। फेर बाजल-

“तूँ अपन बेटाकैँ कहक जे चोरीक मालसभ वापस कए दैक।सरकारक बैमानीक टाका गरीब-गुरबामे बाँटि दैक। तखने तोरा संटिंग वार्डसँ पिंड छुटतह।”

चन्नु अपन बेटाकैँ सपना देलकैक।अपन पत्नीकैँ सेहो सभ बात कहलकैक। मुदा केओ ओकरापर ध्यान नहि देलकैक।माए-बेटा आपसमे गप्प करए-

“अपने तँ ओ मरबे कएल।हमरोसभक जिनगी नरक करए चाहैत अछि।सभ किछु यदि बाँटिए देबैक तखन हमसभ कोना जिअब?”

ओ सभ किछु वापस नहि केलकैक। महापात्रसँ सभ किछु किरायापर लए ओ कहुना कए श्राद्ध कए देलकैक। परिणामतः चन्नुकैँ नरकमे के कहए ओकर संटिंग वार्डोमे जगह नहि भेटलैक। ओ अपन घरक सामनेक पीपरक गाछपर भूत बनि कए चिचिआइत रहि गेल। ओमहर यमदूतसभक मोबाइलपर एतबे समाद अबैत रहलेक-

“फिलहाल चन्नु पीपरक गाछेपर रहत। नरकमे जगह नहि छैक। नरक भरि चुकल छैक।”

१६।०२।२०२५

भ्रम?

दुपहर रातिमे सुमित बड़ी जोरसँ चिकरल। ओकरा एना अचानक चिकरैत देखि बगलमे सुतल

ओकर पत्नी मेधाक निन्न टूटि गेलनि। ओ उठि कए बैसि जाइत छथ,चारूकात देखैत छथि। किछु गड़बड़ नहि देकाइत छनि। मुदा सुमित डराएल लागि रहल छथि। ओ हुनका पुछैत छथिन-

“की भेल?”

“बाबूकेँ देखलिअनि। हुनका संगे आर केकटा लोकसभ छनि।”

“ हद भए गेल। अहाँकेँ भ्रम भेल अछि।”

“भ्रम?ओ तँ अखनहु एतहि छथि। अहाँक बात बहुत ध्यानसँ सुनि रहल छथि।”

“बेसी कबाइत नहि पढ़ू । कोनो नीक डाक्टरसँ देखाउ। मामिला गड़बड़ बुझा रहल अछि।”

एहि तहरेँ दुनू बेकतीक विवाद करैत देखि सुमितक पिता अरविंद जोरसँ ठहाका पाड़लाह। हुनका सामनेमे सद्यः ठाढ़ भेल एना ठहाका पाड़ैत देखि सुमित सरिपहुँ डरा गेलाह।

“अहाँ अनेरे डरा रहल छी। हम अहाँक पिता छी । हमरासँ डरेबाक कोन बात?”

“मुदा अहाँ तँ मरि चुकल छी।”

"मरि गेल रही जरूर,मुदा .... ।"

"मुदा तेँ की?"

"तकर बाद बहुत किछु भेल।"

"कि बात करैत छी? अहाँकेँ तँ हमसभ गोटे श्मशानमे जरा चुकल छी। अहाँ तकर बाद की कए सकैत छी?"

"तमसाउ जुनि। हमर बातपर ध्यान दिअ।"

"कहू ,की कहए चाहैत छी?"

निस्संदेह हमर देह अहाँसभ जरा देलहुँ ,मुदा हम अखनो छी,ओहिना अतृप्त,असंतुष्ट। हमरा देह नहि अछि,मुदा हमर मोन सदिखन एतहि बौआइति रहैत अछि,व्याकुल,व्यथित आ दुविधाग्रस्त।"

"से किएक? अहाँ भूत भए गेलहुँ की?हमसभ तँ अहाँक कतेक नीकसँ श्राद्ध केने रही। जबार नोतने रही। महापात्रकेँ सभकिछु दान देने रहिअनि। कुर्सी, पलंग, मच्छरदानी, टार्च, मोबाइल, अढ़िआ ,तसला, लोटा, गिलास, सभ तरहक अन्न दान केने रही। तैओ अहाँक ई गति भेल?"

अरविंद आकाश दिस देखैत रहि गेलाह । किछु बाजि नहि सकलाह।बजबो की करितथि? हुनका चुप देखि सुमित पुछलखिन-

"अहाँ किछु बाजि नहि रहल छी।"

"की बाजू?की-की बाजू?की बाँचल अछि जे बाजू?आब बजलासँ होएबे की करत?"

"बजबै नहि तँ लोक बुझत कोना?"

"हम कोनो अपने मरलहुँ थोड़े,मारल गेलहुँ।"

“के मारलक अहाँकेँ?हमसभ तँ ओतहि रही। अहाँकेँ आँखि बंद होइत देखिए कए हाँइ-हाँइ तुलसी चौरापर लए गेल रही। गोदानक ओरिआन करओने रही। बैतरनीक हेतु सेहो प्रयासमे लागल रही कि अहाँ आँखि उल्टा देने रहिऐक।”

“बात किछु आर रहैक।”

“माने?”

“हम ओतेक मेहनतिसँ तीनमहला घर बनओने रही। तूँसभ हमरा रहिते ओकरा कबजा कए लेलह। ततबे नहि,,,।”

“मकान तँ हमरेसभ लेल ने बनओने रहिऐक। तखन कबजाक कोन बात भेलैक?”

“तोरासभ लेल तँ ऊपरका तल छलहे।हम अपना हेतु नीचाँबला रखने रही । तूँ सभ ओकरे नहि छोड़लह। ततबे नहि,,,।”

“की ततबे नहि,ततबे नहि कए रहल छी। जे बजबाक अछि से खोलि कए बाजू।”

“सिरमा तरमे नुका कए हुनकर मनटिक्का रखने रही । हुनकर चलि गेलाक बाद नित्य भोरे उठि कए ओकरा देखी। एहिसँ हुनकासँ भेंट हेबाक बोध होइत छल,लगैत छल जेना ओ हमरा सामनेमे सजलि-धजलि मनटिक्का पहिरने ठाढ़ि छथि,कहि रहल छथि-

“चलू,चलू अपन ठाम चलै छी।”

“ई की कहि रहल छी? की ई हमर गाम नहि अछि? ”

“ई थिक माया। मोहवश हमसभ एकरा अपन बुझैत रहलहुँ।”

“जिनगी भरिक कमाइसँ हम ई घर बनेलहुँ । ताहूमे अहाँकेँ ससम्मान नहि राखि सकलहुँ।”

“से छल हमरा-अहाँक दुर्भाग्य,मुदा ताहिसँ की?ई सभ चारि घड़ीक छैक। असली घर तँ हमसभ आब जा रहल छी। देरी नहि करू। हम अहाँक बाट कहिआसँ ताकि रहल छी।”

“मुदा अहाँसभ सेहो नहि रहए देलहुँ । एकदिन भोरे उठलहुँ,हुनकर स्मृतिसँ जुड़बाक एकमात्र माध्यम ओहि मनटिक्काकेँ ताकए लगलहुँ,सौंसे ओछाओन उकटि देलहुँ,मुदा कतहु ओ नहि देखाएल। बात एतबे नहि छल,,,।”

“बाजि लिअ,किछु छोड़ू नहि। जाहिसँ बो अहाँक आत्मा संतुष्ट होअए से कइए लिअ।”

“निर्लज्ज,चाण्डाल नहितन। एना बाजि रहल छी जेना कि हमही दोषी होइ,हम अहाँसभक किछु हरि लेने होइ।”

“बात चिबा किएक रहल छी। साफ-साफ किएक नहि बजैतछी? ”

“बाजलो होअए ने? अपन घरक बात की बाजू? लोकलाजो किछु होइत अछि।”

“सभ फूसि। अहाँ फुसि,अहाँक सभ बात फूसि।”

“उल्टे चोर कोतबालकेँ डाँटए।”

“माने? ”

"इलाज आ सेवाक बिना ओ चलि जाइत रहलीह।चलि गेलीह से कोनो बात नहि। कहिओ-ने-कहिओ सभ जएबे करत। मुदा अहाँसभ तँ हुनका अछैते अरुदे मारि देलिअनि।"

"से कोना? "

"समयपर भोजन नहि भेटनि। रहि-रहि कए मेधा हुनका फज्झति करनि। जे से कहि दनि। अहाँ चुपचाप सुनैत रही। ओ साँझक-साँझ सहैत रहथि । अहाँसभक लेल धनि सन। यदि हम टोकारा दी तकर बाद तँ भगवाने मालिक।"

"एतेक पुरान बातसभ अहाँ पकड़ि कए रखने छी,सुआति अखनो धरि भटकि रहल छी।"

"हम भटकि नहि रहल छी। अहाँसभकेँ अपना संगे लए जेबाक हेतु आएल छी। हुनका एक बेर अहाँसभसँ भेंट करबाक हार्दिक इच्छा छनि। हम बहुत बुझओलिअनि, कहलिअनि ओ बात सभ बिसरू। मुदा हुनकर आत्मा तँ जेना अहींसभमे अँटकल छनि। बस एतबे रट लगओने रहैत छथि जे बस एक बेर बच्चासँ भेंट होअए,से जेना होअए। आब अहींसभ कहू जे एहन हालतिमे हम की करू? हम तँ कहब जे जल्दी तैयार भए जाउ,चलू हमरा संगे।देरी जुनि करू।"

"अहाँ दुष्टतापर अड़ल छी। मरिओ कए अपने संतानसँ बदला लेबएमे लागल छी। यदि हमसभ बुझितहुँ जे अहाँक इएह गति हेबाक छल तखन हम श्राद्धमे एतेक खर्च कदापि नहि करितहुँ। गया जा कए कहुना कए पिण्डदान कए दितहुँ। से तँ जे भेल से भेल मुदा आब अहीं कहू जे अखन हम अहाँक संगे कोना जा सकैत छी? हमर बएसे की भेल

अछि? हमरा कतेक काज करबाक अछि। मकानमे तेसर तल बनाएब बाँकी अछि। बच्चासभक पढ़ाइ बाँकी अछि। हमरा सभक लेल अहाँकेँ एहन सोचाइत कोना अछि?”

“इएह थिक माया। अहाँसँ पुछि कए ब्रह्माक घड़ी ने ने चलत? ककर कखन समय आबि जाएत तकर कोन ठेकान?तँ एक बेर हुनकासँ भेंट कए लिअनु । साइत हुनकर आत्मा शांत भए जानि।”

“ई असंभव थिक।”

“संभव-असंभव तँ मोनपर निर्भर करैत अछि। इच्छा भेलासँ सभ किछु संभव भए जाइत अछि। अहाँ नहि जेबनि तँ ओ बहुत दुखी भए जेतीह। असलमे,,,।”

“असलमे की?”

“ओ एहि बातसँ बहुत दुखी छथि जे अहाँ दुनू बेकती मिलि कए सोभितक अधिकार मारि लेलिअनि। हुनका पैतृक संपत्तिसँ दफा कए देलिअन।ओ एहि बातसँ बहुत परेसान छथि।”

“किएक ने से सभ बाजब अहाँ। सभदिन हुनके करैत रहलहुँ। हुनका पढ़ओलिअनि। ओ हाकिम बनि कए दिल्लीमे ऐश-मौज केलाह। अपन बच्चासभकेँ नीक-नीक शिक्षा देलाह। कहिओ हमरा लेल सोचलनि? कहिओ फुरेलनि जे हमरो बच्चा अछि? ओ सभ गाममे बरबाद भए रहल अछि?”

“ओ की ने केलनि? अपन पेट काटि कए सभ मास मनीआर्डर करैत रहलाह हमरा नामे। हुनका नीकसँ बुझल रहनि जे अहाँ ओहि टाकाक उपयोग तँ करिते छी,ओही नामपर आरो कर्जा केने रहैत छी।

जहिआ कहिओ ओ एक्को दिन लेल गाम अएलाह,अहाँक कर्जा सधबैत रहलाह। कहिओ निचेनसँ गाममे नहि रहि सकलाह।”

“अखनहु कतेक दरेग अछि हुनका लेल। हम तँ अहाँक बेटा छीहे नहि। अहाँ सभ दिन दू रंग करैत रहलहुँ । हम गाम धेने रहलहुँ। अहाँ सभक देख-रेख केलहुँ । ओ पढ़लाह,लिखलाह,सभ दिन सुखमे रहलाह। हमरा की भेटल?आब गामोपर संकट बुझा रहल अछि। एहिसँ बहुत नीक होइत जे हमहूँ अहाँसभकेँ छोड़ि सहर चलि गेल रहतहुँ,खूब टाका कमैतहुँ,जे मोन होइत से करितहुँ।”

“से मना के केलक? जखन इसकूल पठाबी तँ लफुआसभक संगे बौआइति रही,बाधे-बाध घुमैत रही, साँझमे जखन इसकुलमे छुट्टी होइक तखन वापस आबी,थाकि जेबाक नाटक करी। हमसभ की जाने गेलहुँ जे अहाँ एतेक छल कए रहल छी? अपनेसँ,हमरोसभसँ ।”

“सभ अहींसभक चलते भेल। घरक की हालति रहैत छल से बिसरा गेल की? एहनमे केओ इसकुल केना जाइत? पेटमे अन्न नहि,किताब नहि, समयपर इसकुलक फीस नहि। मास्टरसभक छौकी पड़ैत-पड़ैत देहमे ठेला भए गेल। एनामे पढ़ाइ केना होइत?”

“ओहो तँ एहनेमे पढ़ि गेल । सभदिन इनाम भेटलैक,नीक परिणाम भेलैक । जल्दीए नौकरी सेहो लागि गेलैक । एहिमे हमर कोन योगदान छल ?हम तँ दुनू गोटेक हेतु एक्के रंग व्यवस्था केलहुँ। एक्के इसकुलमे नाम लेखेलहुँ। ओ सभदिन औअलि आबैत रहल आ अहाँ बरोबरि असफल अइत रही। मैट्रिक पास करब अहाँकेँ मोसकिल भए

गेल। जकर जे अदिष्ट छल से भेल । माए-बाप मात्र जन्म दैत अछि,लोक अपन भाग्य लिखा कए अनैत अछि। ”

“किछु-ने-किछु तँ अहाँ कहबे करब। मुदा हम तँ भुक्तभोगी छी । बिलटत तँ हमर बच्चासभ। हुनका की बिगड़तनि। ओ तँ अपन शुरूएमे सहर धेलनि,सभकिछु बना लेलनि। हम कहिआ ने कहलहुँ जे गामपरहक जे किछु अछि से हमरा नामे कए दिअ,मुदा अहाँ नहि मानलहुँ। अपन बातपर अड़ल रहि गेलहुँ। ”

“अहीं कहू जे एना केना होअए दितिऐक?”

“मुदा से भेलैक। अहाँ नहिओ चाहलिऐक तखनो भेलैक।”

“हम तँ अपना भरि बहुत प्रयास केलहुँ जे न्याय होइक। ओ राति-राति भरि अपन औंठाकेँ ऊपर रखने रहैत छलीह। मोनमे डर भए गेल रहनि जे अहाँ हुनकर औंठा निसान बना लेबनि। परिणाम भेल जे साल भरि ओ नीकसँ सुति नहि सकलीह आ दुखित पड़ि गेलीह। बिमारी तेहन जरिएलनि जे चलिए जाइत रहलीह। कतेक जुलुम भेल हुनका संगे?”

“झूठ,साफे झूठ। अहाँ दुनू बेकती हमर दुश्मन जकाँ केलहुँ। आर तँ आर अहाँ माएकेँ आगि पर्यन्त नहि देबए देलहुँ। अड़ि गेलहुँ जे जेठका आगि देतैक तखनहि पैठ हेतनि। आब लिअ। की भेलनि? भूत भेल बौआ रहल छथि।”

“आगि अहीं दितिऐक तँ की भए जाइत?”

"हम कर्त्ता होइतहुँ। एहिठामक संपत्ति स्वतः हमर भए जाइत। एकटा अनावश्यक विवाद सभदिन हेतु स्वतः समाप्त भए जाइत। बेरपर सौंसे समाज हमरा पक्षमे ठाढ़ भए जाइत।"

"अहाँसभ दिन मूर्खे रहि गेलहुँ। आगि देलासँ किछु फरक नहि पड़ैत। ओकर कानूनी अधिकार जहिना पहिने छलैक,ओहिना रहितैक आ से अखनहु छैक।"

"बड़ चललहुँ अछि कानून पढ़बए। ई गाम छैक। एहिठाम कानून-फानून नहि चलैत छैक। जकर लाठी तकर महीष। एक्कोटा गबाह नहि भेटतनि। व्यर्थमे जान गमओताह। जतए छथि ततए सुखी रहथु। बिसरि जाथु गाम आ गाम संपत्तिकेँ। एहीमे हुनकर सभक कल्याण छनि।"

-से बाजि सुमित बड़ी जोरसँ पलंगपर लात मारलाह। निन्न टूटि गेलनि। कतहु केओ नहि छल। सभटा हुनकर भ्रम छलनि। सामने मेधा बैसल छलखिन। सुमित आश्वस्त भेलाह। मुदा ई की? दरबज्जापर कार ठाढ़ भेल।। हुनकर सहोदर भाए सोभित कारसँ उतरि रहल छलाह। हुनका देखितहि सुमित सचमुचकेँ परेसान भए गेलथि। सुमित मेधाकेँ बजबैत छथि। जल्दीसँ अपन मकानक द्वारि बंद करैत छथि आ पाछा बाटे कपिलेश्वर बिदा भए जाइत छथि।

१।३।२०२४

मोड़

कुश अपन माता-पिताक असगर संतान रहथि। हुनका सभकेँ हार्दिक इच्छा रहनि जे ओ बड़का आदमी बनथि,खूब टाका कमाथि,दुनिआमे नाम करथि। ताहि हेतु ओ सभ हुनका दिन-राति प्रेरित करैत रहैत छलखिन,उत्साहित करैत रहथिन। अपना भरि हुनकर पढ़ाइमे सभटा सुविधा सेहो देलखिन। हुनका लोकनिक बात कुशक मोनमे गरि गेल रहनि। ओ दिन-राति एतबे सोचथि जे अपन माता-पिताक सपना केना साकार कए सकताह। ताहि हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहथि। गाममे रहथि कि सहरमे, बस एतबे बातपर ध्यान रहनि। आर कतए की होइत अछि तकर हुनका कोनो मतलब नहि रहैत छलनि। एक बेर तँ एही गुनधुनमे लहेरिआसराय टाबरक मोड़पर बससँ दुर्घटना होइत-होइत बँचि गेलथि,नहि तँ हुनकर सभटा सपना सपने रहि जइतनि। भेलैक ई जे कुश साइकिलसँ किताबक दोकानपर जा रहल छलाह। माथामे किछु आर घुमि रहल छलनि। साइकिल आगू बढ़ि रहल छल। मोड़पर सामनेसँ अचानक बस आबि गेल। ई तँ वाहनचालकक बुधिआरी छल जे ओ एकाँएक ब्रेक लगा देलक आ कुश बाँचि गेलाह। एहन छोट-मोट बातसभ होइते रहैत छल। मुदा हुनका लेल धनिसन। ओ तँ दिन-राति किताबक दुनिआमे मस्त रहैत छलाह। समय-समयपर इसकुल-कालेजमे सांस्कृतिक कार्यक्रमसभ होइत रहैत छल। कुशक अबाज बहुत मधुर रहनि। संगीसभ कैक बेर कहबो करथिन-

"तोहर स्वर बहुत नीक छह। तोरा संगीत कार्यक्रमसभमे भाग लेबाक चाही।"

"ई सभ समयक बरबादी छैक। हम गामसँ एहिठाम पढ़ाइ करए आएल छी,ने की गीत गाबए। ओ काज तँ गाममे महिषबारो कए लैत अछि।"

खेलसभमे सेहो ओ कोनो रुचि नहि लेथि। बहुत भेल तँ कहिओ काल काली मंदिर चलि जाथि। ओतहु मातासँ एतबे गोहराबथि- "कृपा करू हे जगदम्बा!हमरा परीक्षामे खूब नीक नंबर आबए। हम आइइटी प्रवेश परीक्षामे सफल भए जाइ। हमरा जल्दीसँ अमेरिकामे नीक नौकरी लागि जाए।"

परिणाम भेल जे हुनकर व्यक्तित्व एकतरफा भए गेलनि। पढ़ाइक अतिरिक्त दुनिआमे किछु आओर होइत छैक छैक तकर हुनका किछु अंदाज नहि रहलनि।

ओ पढ़ाइमे सभदिन औअलि अबैत रहलाह। एहि बातसँ हुनकर माता-पिता बहुत खुस रहैत छलाह। हुनका लोकनिकेँ विश्वास छलनि जे कुश बड़का आदमी बनबे करताह। हुनकर सभटा मनोरथ ओ पूरा करबे करथिन। बस थोड़बे दिनक बात छैक। तकर बाद तँ हुनकर सभक जिनगी सुखमय भए जेतनि , दुखक समय सभ दिनक हेतु बिला जाएत।

आखिर कुश आइआइटीसँ इंजीनियर बनि गेलाह। पढ़ाइ समाप्त होएबासँ पहिने हुनका कैकटा नौकरी भेटि रहल छलनि। नीकसँ नीक कंपनी हुनका अपना ओहिठाम अवसर देबाक हेतु उत्सुक रहए,

अपनो देशमे आ विदेशोमे। ओ चाहितथि तँ बंगलोर,मुम्बई वा गुरग्राम कतहु नौकरी कए सकैत छलाह। मुदा विदेशक आकर्षण कही किंवा अतिमहत्वाकांक्षा कही, ओ अमेरिका जाएब पसिंद केलनि। अमेरिकाक कंपनीमे बहुत आकर्षक पैकेज भेटलनि। हुनकर माता-पिता चाहथि जे ओ अपने देशमे काज करथि जाहिसँ हुनकर सभक देख-रेख सेहो कए सकताह। मुदा ओ नहि मानलखिन , सभक बात काटि कए विदेश चलि जाइत रहलाह।

अमेरिकाक न्यूयार्क सहरमे हुनका काज भेटि गेलनि। शुरूमे रहबाक व्योंत कंपनी अपने दिससँ केने रहनि। मुदा ओ जल्दीए अपन बहुत नीक मकान कीनि लेलनि। काजमे ओ माहिर छलाह। कंपनीक मालिक हुनकासँ बहुत प्रसन्न रहए । जल्दीए हुनकर प्रोन्नति सेहो भए गेलनि । दरमाहा से बहुत बढ़ि गेलनि । कार्यालयमे काज समाप्त केलाक बाद ओ बेसी काल क्लबसभमे समय बीतबैत छलाह । डेरा वापस आबि कए करबे की करितथि? एसगर एतेकटा घरमे कोना मोन लगितनि ? घरमे तँ मात्र सुतबाक हेतु आबथि । भोर होइतहि ओ घरसँ बिदा भए जइतथि आ बहुत राति बीतलापर वापस अबितथि। एही क्रममे हुनका पीबाक आदति लागि गेलनि। कल्बमे कैकटा बिदेशी महिलासभसँ परिचय भेलनि। ओहिठामक उनमुक्त वातावरण,युवावस्थाक समय प्रचूर धनक आमदनी सभ मिलि कए हुनकामे विचित्र प्रकारक उन्माद उत्पन्न कए देलकनि। ओ अपन माता-पिताकेँ साफे बिसरि गेलाह। ओ सभ आस लगओने रहथि जे बौआ आब अओताह,तब अओताह,ई करताह,ओ करताह। मुदा ओ तँ आब संपर्को

नहि करथिन । कुशक हेतु हुनका लोकनिक लग बिआहक अनेक प्रस्तावसभ अबैत छलनि। ओ सभ तकरा सभकेँ हुनका अग्रेसित करैत रहैत छलाह। मुदा कुश सभ कथामे किछु ने किछु त्रुटि निकालि देथि। असलमे कुशकेँ बिआह करबामे कोनो रुचि रहबे नहि रहनि। ओ तँ मौज-मस्ती कइए रहल छलाह। अनेरे बिआहक झंझटिमे किएक परितथि?

कुशक समय किछु दिन तँ बहुत नीकसँ बीतल । दिनभरि कार्यालयमे आ रातिभरि क्लबमे । समय कोना बीति जानि से पतो नहि चलनि। एहि बीच हुनकर माता-पिताक कार दुर्घटनामे देहान्त भए गेलनि। केओ गौआँ हुनका खबरिओ केलखिन। मुदा कुश नहि जा सकलाह।नौकरीमे छुट्टी लेबाक अनुमति नहि भेटलनि। कैकटा दिक्कतिसभ बुझेलनि। ओमहर गौआँसभ हुनकर बाट तकैत रहल । जखन कुश नहिए पहुँचलाह तखन ओएहसभ हुनकर माता-पिताक अंतिम संस्कार कए देलनि। गया जा कए पण्डदान सेहो कए देलकनि। कुशक व्यवहारसँ गामक लोकसभ छगुन्तामे रहए।

“सएह कहू,एहनो हालतिमे कुश नहि आबि सकलाह। कतेक आश लगा कए हुनकर माता-पिता पालन केने रहथि। तकर अंतिम संस्कारोमे नहि अएलाह । ई तँ हद भए गेल। आब कोन उम्मीदसँ लोक संतानक पालन करत?”

जतेक मुँह,ततेक तरहक बात होइत रहल । मुदा कुश कोनो लगमे नहि रहथि जे कोनो बातक असरि होइतनि। ओ अपन दुनिआमे मस्त रहैत छलाह।

मौज-मस्तीमे दिन-राति लागल रहलासँ कुशक कार्यालयमे काज खराप होमए लगलनि। मनेजर कैक बेर चेतौनी देलकनि,मुदा ओ सुधरि नहि सकलाह । महिला मित्रसभक संगे घुमबाक हेतु पर्यटन स्थलसभ पर चलि जाथि। बिना पूर्वसूचनाकेँ कार्यालय नहि जाथि। बादमे तँ ओ ततेक पीबए लगलाह जे दिन-राति घरेमे पड़ल रहथि। खेनहु,नहि खेनहु तकरो कोनो ध्यान नहि रहनि। अंततोगत्वा, कंपनी हुनका नौकरीसँ निकालि देलकनि । नौकरी गेलाक एकमासक बाद जखन हुनका दरमाहा नहि भेटलनि तखन जेना झटका लगलनि। ओ बहुत प्रयास केलनि जे कंपनी दोबारा काजपर राखि लिअए। मुदा से भेलनि नहि। कैकठाम नौकरीक प्रयास केलनि,मुदा कतहु चुनाओ नहि भेलनि। आखिर अपने किछु काज शुरू केलनि।मुदा दिन-राति पीने बुत्त रहैत छलाह ,काज की करितथि?हुनकर छवि बहुत खराप भए गेल रहनि।सभ एतबे बजैत-

“ओ तँ महा पीबाक अछि। ओकरासँ फटकीए रही।”

केओ हुनका ओहिठाम जेबे नहि करए । हारि कए दोकानोक काज नहि चललनि । आब की करितथि? करजा बढ़ैत गेलनि। मकान पर्यन्त बन्हक पड़ि गेलनि। दिन-राति तनाओमे रहबाक कारणेँ स्वास्थ्य से खराप होइत गेलनि।

कुशक खराप हालति देखि हुनकर महिला मित्रसभ सेहो बेरा-बेरी संग छोड़ि देलकनि। करजा आ ताहिपर सूदि ततेक बढ़ि गेल रहनि जे ओकर भुगतान मोसकिल भए गेल । महाजनसभ दिन-राति तगेदा करनि। आखिर हुनका मकान बेचए पड़लनि। निसाँक आदति पूरा

करबाक हेतु किछु करबाक हेतु तैयार रहथि। मुदा आब किछु बाँचलो नहि रहनि। आब तँ हुनका जीवन पहाड़ लागि रहल छलनि। ओ निराशामे एकदिन मेट्रो टीसन पहुँचलाह । इच्छा रहनि जे ओ मेट्रोक आगू कुदि कए जान दए देताह। संयोग एहन भेलैक जे हिनका मेट्रो टीसन पहुँचबासँ कनीके पहिने मेट्रोरेल जा चुकल छल। अगिला मेट्रोरेल आधा घंटा बाद अबितैक,कारण रस्तामे बीचमे कतहु मेट्रो लाइन गड़बड़ भए गेल छल। ओ ओतहि राखल बेंचपर बैसि गेलाह। ओहिठाम कोनो यात्रीक झोरा छुटि गेल छलनि। ओहिमे एकटा किताब आ किछु कागजात राखल छल। मौका देखि ओ किताब पढ़ए लगलाह। ओहि किताबक पहिले पाँति पढ़ैत देरी जेना हुनका करेंट लागि गेलनि। ओकर शिर्षक छल,

"जीवन अनमोल अछि ।"

कहबी छैक जे कोनो-कोनो समयमे एहन घटना घटित होइत अछि जे मनुक्खक जीवनक दशा आ दिसा बदलि कए राखि दैत अछि। ओ किताब पढ़बामे कुशकैँ ततेक मोन लागि गेलनि जे ओ किछु कालक हेतु सभ किछु बिसरि गेलाह। किताब समाप्त कइए कए ओ उठलाह। तकर बाद ओ एक्को क्षण ओहिठाम नहि ठहरलाह । ओ झोरा लए तुरंत वापस भए गेलाह। ओ अपना भरि झोराक असली मालिकक पता लगेबाक बहुत प्रयास केलनि जाहिसँ ओकरा झोरा वापस कए सकथि। मुदा कतहु केओ नहि भेटलनि,ने केओ ओहि झोरापर अपन हक केलक । आखिर ईश्वरक इच्छा बूझि ओ मेट्रो टीसनसँ वापस बिदा भेलाह।

ओ टीसनसँ कनीके आगू बढ़ल रहथि कि एकटा बूढ़ भेटलनि। ओ बहुत परेसान लगैत छल। सामने ठाढ़ पुलिसकेँ किछु कहि रहल छल। कुश ओकर लगीच गेलाह तँ एतबा बात सुनबामे अएलनि-

" झोरामे हमर किछु जरूरी कागजात अछि , सेटा भेटि जाइत। आर कोनो चीजक चिंता नहि अछि ।" ओकर बात सुनि कुश बजलाह-

"केहन अछि अहाँक झोरा?"

"से किएक?"

"हमरा एकटा झोरा भेटल अछि। अहाँ चाही तँ से देखि सकैत छी।"

"देखाउ तँ।"

ओ झोरा निकालि कए ओहि बृद्धकेँ दैत छथि। झोरा देखितहि ओ चिकरि उठल-

"हँ,हँ, इएह अछि हमर झोरा ।"

पुलिसक सामनेमे कुश ओ झोरा हुनका सुनझा देलखिन। झोरा भेटि गेलासँ ओ बूढ़ बहुत प्रसन्न रहथि। ओ कुशकेँ बहुत धन्यवाद देलखिन । अपन सभ किछु दुरुस्त देखि ओ बहुत संतुष्ट रहथि। असलमे ओ अपन जरूरी कागजातक लेल बहुत चिंतित रहथि। से भेटि गेलासँ हुनका बहुत आफियत भेलनि। आब कोनो चिंताक बात नहि।-ओ बजलाह । ओ कुशकेँ किछु इनाम देबाक इच्छा व्यक्त केलनि।मुदा ओ साफे मना कए देलखिन आ कहलखिन-

"हमरा अपने बहुत भारी इनाम दए चुकल छी। आब किछु नहि चाही।"

“से कोना?हम तँ अहाँकेँ किछु नहि देलहुँ अछि।”

कुश हुनका ओहि किताब दिस इसारा कहैत कहलखिन-

“हमरा एहि किताबसँ बहुत किछु भेटि गेल। एहि किताबसँ हमर जान तँ बँचिए गेल,संगे जीवनमे आगू संघर्ष करबाक शक्ति सेहो भेटल अछि। आब हम जीबि लेब।”

कुशकक बात सुनि ओ बृद्ध बहुत चकित रहथि।हुनका बहुत आशीर्वाद देलखिन आ अपन गंतव्य दिस प्रस्थान कए गेलाह। जाइत-जाइत ओ सोचथि-

“एहनो लोक आजुक समयमे होइत अछि।”

उपरोक्त घटनाक्रमसँ कुशक जीवनमे नूतन आशाक संचार भेलनि। आब ओ निश्चय कए चुकल छलाह जे कोनो हालतिमे अपन जीवनक रक्षा करताह,प्रतिकूल परिस्थितिसँ हारि नहि मानताह आ अपन देश वापस जा कए फेरसँ नव जीवन शुरू करताह ।

मनुक्खक इच्छाशक्ति अनंत अछि। यदि सही मानेमे किछु करबाक मोनमे ठानि लेल जाए तँ ओ काज भइए कए रहत। सएह भेलनि कुशक संगे । ओ वापस अपन देश आबि गेलाह । तकर बाद तँ निसाँके छुबो नहि केलनि। कहि नहि निसाँक एतेक पुरान आदति हुनका एतेक आसानीसँ केना छुटि गेलनि? ओ सभसँ पहिने अपन गाम गेलाह । गाम अएलाक बाद ओ अपन पैतृक जमीनपर वैज्ञानिक तरीकासँ खेती करए लगलथि। तरह-तरहक आधुनिक तरीकासँ फसल उपजाबथि आ सहरमे नीक दामपर बेचथि। हुनकर देखा-देखी गामक आरो लोकसभ ओहिना खेती करए लागल । एहि तरहेँ ओ अपन हालति तँ बदलिए

लेलनि,गामोक हेतु प्रेरणाक श्रोत बनि गेलथि। सभ हुनका आदरक दृष्टिसँ देखि रहल छल। अपन डीहपर खूब सुंदर घर बनओलनि। ततबे नहि,अपन माता-पिताक स्मृतिमे एकटा ट्रस्ट बनओलनि जकर प्रमुख काज गाम-गाममे सुखा रहल पोखरि-इनारसभक जीर्णोद्धार करब छल।हुनकर एहि स्तुत्य प्रयाससँ इलाकाक फोखरि-इनारसभ फेरसँ अपन मौलिक स्थितिमे पहुँचि गेल।एहिसँ खेती-बारीमे सेहो बहुत सुविधा होमए लागल।आब गर्मीओमे गामसभमे पानिक अभाव नहि रहैत छल।

एतेक जखन भइए गेल तखन गौआँसभक इच्छाक आदर करैत गामक लगीच एकटा प्रतिष्ठित परिवारक कन्यासँ आदर्श बिआह सेहो केलनि। साल भरिक बाद हुनकर पत्नी एकटा कन्या रत्नक जन्म सेहो देलखिन। बेटीक जन्मसँ कुश बहुत हर्षित रहथि। छठिहारमे सौंसे गामकेँ भोज देलनि। कैक दिन धरि गीत-नाद होइत रहल। ओकर नाम ओ लक्ष्मी रखलनि। सभकेँ एतबे कहथिन-

" हमरा घरमे लक्ष्मी आबि गेलीह ,आब कोनो चिंता नहि।"

कुशक जीवनमे एहन सुखद मोड़ आबि जेतनि,से ओहो नहि सोचने रहथि। मुदा सकारात्मक सोच आ प्रबल इच्छाशक्तिसँ से संभव भेल। गामेमे रहि कए जे सुख ओ अखन पाबि रहल छलाह से हुनका विदेशमे कहिओ नहि भेटलनि। आब ओ सही मानेमे सुखी जीवन जीबि रहल छलाह।

२३।०२।२०२४

उत्तराधिकारी

रत्नेश्वर माता-पिताक एकमात्र संतान छलाह । तेँ ओ सभ हुनका लेल बहुत चिंतिति रहथि । जहाँ कनीक सर्दी होनि की दौरथि बैदजी लग । रत्नेश्वर छलाहो बहुत सर्दिआह । असलमे बहुत दिन धरि हुनका लोकनिकेँ संतान नहि भेलनि । पाँच साल लगातार बाबा वैद्यनाथ ओहिठाम कामर लए कए गेलाह । हुनकरसभक तपस्या सफल भेलनि। आखिर हुनकासभकेँ पुत्र रत्न प्राप्त भेलखिन । कहल नहि जा सकैत अछि जे एहि बातसँ ओ सभ कतेक प्रसन्न रहथि । छठिहारक दिन सौंसे गामकेँ सबजना नोत देल गेल । नाना प्रकारक मधुर बनाओल गेल । जे जतेक खाथि,संगे लेने जाथि । लोकसभ कहैक जे कैकसालक बाद एहन भोज भेल छल ।

रत्नेश्वरक जन्म भेलाक बाद हुनकर पिता संपूर्ण शक्तिसँ हुनकर शिक्षाक जोगार केलनि । ओ रहबो करथि बहुत तेजस्वी । दिन-राति मेहनति कए पढ़थि । सभदिन अपन किलासमे प्रथम स्थान आनथि । एहि तरहें बिना कोनो रुकाबटकेँ ओ पढ़ैत गेलाह,आगू बढ़ैत गेलाह । मैट्रिकक परीक्षामे बिहारमे दोसर स्थान भेलनि । तकर बाद पटनामे साइंस कालेजमे नाम लिखाओल गेलनि । साल भरिक बादे ओ आइआइटीमे परीक्षा पास कए गेलाह । ओतहु हुनकर परीक्षाफल उत्तम होइत रहलनि। आइआइटीक तेसर वर्षमे ओ पढ़िते रहथि कि माए बहुत

जोरसँ दुखित पड़लखिन। हुनकर अभिलाषा रहनि जे पुतहुक मुँह देखी। अपना भरि रत्नेश्वर एहि प्रस्तावकेँ टारैत रहलाह। मुदा जखन माए दुखित भए गेलखिन आ फेरसँ ओएह आग्रह केलखिन तँ ओ बात मानि लेलाह। एहि तरहें हुनका लेल कनिआ तकनाइ शुरू भेल।

संयोग एहन भेलैक जे एही बीचमे रत्नेश्वरक माए बहुत जोरसँ दुखित पड़ि गेलीह। बिमारीक किछु पते नहि चलनि। मुदा मोन कखनहु खनहन नहि लागनि। कखनहु किछु तँ कखनहु किछु परेसानी लगले रहनि। बीच-बीचमे यथासंभव इलाजो होइते रहलनि। मुदा स्थिति सुधरबाक बदलामे खराबे होइत गेलनि। एकदिन एहिना ओसारापर पड़ल रहनि की छातीमे बड़ी जोरसँ दर्द उठलनि। लगपासमे केओ नहि रहए। रत्नेश्वरक बाबू आमक गाछी गेल रहथि। बहुत जोरक अन्हर आबि गेल रहैक। भरि झोरा आम भेटलनि। लोकोसभ जकरा जे पार लगलैक,आम लुटलक। थोड़े कालक बाद जखन हवा शांत भेल,ओ आमक झोरा लेने घर वापस अएलाह। आङन पैसितहि अबाज देलनि-

"रत्नेश्वरक माए...! रत्नेश्वरक माए...!"

मुदा कोनो उत्तर नहि भेटलनि। ओ ओसारा दिस बढ़ैत छथि। देखैत छथि जे रत्नेश्वरक माए निचेष्ट ओसारापर पड़ल छथि। मुँह खुजल छनि,आँखि उनटि गेल छनि,देह ऐंठ गेल छनि। ओ आमक झोरा फेकैत छथि। हुनकर देहकेँ हिलबैत छथि। हुनकर सौंसे देह हिलि गेलनि। ओ बूझि गेलथि जे बूढ़ी नहि रहलीह। ओ जोरसँ चिकरैत छथि-

"औ लोकसभ दोड़ैत जाउ ...अनर्थ भए गेल... रत्नेश्वरक माए नहि रहलीह।"

हुनकर चिकरब सुनि लगपासमे अबैत-जाइत लोकसभ आङनमे एकत्रित होइत गेल । थोड़बे कालमे आङन लोकसँ भरि गेल । बूढ़ा हाकरोस कए रहल छलाह । रहि रहि कए अफसोच कए रहल छलाह जे ओ गाछी किएक गेलाह । यदि ओ आङनमे रहितथि तँ साइत एहन घटना नहि घटैत । मुदा आब ई सभ सोचि कए की होइत? जे हेबाक छल से भए गेल ।

रत्नेश्वर माएक श्राद्ध विधिवत संपन्न केलाह । तकर बाद बहुत दिन धरि माएक स्मरणमे मोन दुखी होइत रहलनि । बेर-बेर होनि जे ओकर बात मानि कए बिआह कए लेबाक चाहैत छल । आब तँ साल भरिक बादे किछु भए सकैत छल । तँ जहाँ साल भरि पूरा भेलनि,ओ अपन पिताकेँ सहमति देलखिन । एक पर एक कथा आबए लागल। मासे दिनक भीतरे हुनकर बिआह ठीक भए गेलनि । कनिआक पिता पटनामे प्रसिद्ध ओकील छलाह । हुनका एकहिटा बेटीए रहथिन । तेँ कालांतरमे रत्नेश्वरे हुनकर संपत्तिक उत्तराधिकारी होइतथि । कनिआ तँ पढ़ल-लिखल छलीहे,देखबामे सेहो बहुत पवित्र । तँ जहाँ ई कथाक प्रस्ताव आएल,रत्नेश्वरक पिता तुरंत अपन स्वीकृति दए देलखिन। रत्नेश्वरो सँ बादेमे कहलखिन । बिआह तँ करबेक छलनि । माएक बात मोनमे गड़ि गेल रहनि । ओहो मानि गेलखिन । वसंत पंचमीक दिन बिआह होएब तय भेल । बिआहक तैयारी शुरू भेल । दुनू पक्षक लोकसभ पूरा उत्साहमे रहथि ।

रत्नेश्वरक बिआह उमासँ खूब धुम-धामसँ संपन्न भेल । सभ गोटे एहि बिआहसँ बहुत प्रसन्न रहथि । बर-कनिआ सेहो बहुत संतुष्ट बुझाथि

। बिआहक मासे दिनक भीतर रत्नेश्वर आगूक पढ़ाइक हेतु विदेश चलि गेलाह । समस्या एतहिसँ शुरू भेल । रत्नेश्वरक सासुरक लोकसभ हुनकर एहि निर्णयसँ खुस नहि रहथि । मुदा जखन ओ कहलखिन जे थोड़बे दिनक बाद उमाकेँ अपना लग बजा लेताह तँ ओ सभ मानि गेलाह। उमा बहुत भारी मोनसँ हुनका विदेश जेबाक हेतु बिदा केलथि। अपना भरि बहुत बुझेबाक प्रयास केलखिन जे अहाँकेँ एतहु कोनो कमी नहि अछि। विदेश नहि जाउ। मुदा रत्नेश्वरक जोर देखी ओहो चुप्प भए गेलि।

रत्नेश्वर विदेश चलि गेलाह । शुरूमे ओ नित्य फोन करथि,चिठ्ठीपर चिठ्ठी लिखति। मुदा समय बितलाक संगे ई क्रम घटैत गेल। बादमे तँ ई हाल भए गेल जे मासक-मास हुनकर किछु अता-पता नहि लगैत छल। उमा व्याकुल रहए लगलीह। मुदा कइए की सकैत छलि? जखन साल भरि रत्नेश्वर दिससँ संपर्क करबाक कोनो प्रयास नहि कएल गेल तँ उमाक पिता लंदन स्थित भारतीय दूतावाससँ संपर्क केलाह। तखन जे जानकारी भेटलनि से सुनि ओ अबाक रहि गेलथि। बहुत मोसकिलसँ अपनाकेँ संयत राखि सकलाह। हुनका पता लगलनि जे रत्नेश्वर लंदनमे कोनो मेम साहेबसँ बिआह कए चुकल छथि। ओ विदेशक नागरिकता सेहो लए चुकल छथि । ओ दूतावासमे गलत सूचना देने रहथि जे हुनकर बिआह नहि भेल अछि।

जखन हुनकर ससुर स्थानीय राजदूतके सही बात कहलखिन तँ ओ बहुत दुखी भए गेलाह । मुदा ओहो किछु नहि कए सकलाह । कारण रत्नेश्वर आब भारतीय नहि रहि गेल रहथि। ओ विदेशी नागरिकता

स्वीकार कए लेने रहथि। ककरो स्वप्नहुमे उम्मीद नहि रहैक जे रत्नेश्वर एना करताह। मुदा सत्य आब सभक सामने छल। रत्नेश्वरक माता-पिता बहुत दुखी रहथि। उमाक स्थिति देखि ओ सभ अफसोच करथि। मुदा किछु कए नहि सकलथि। हारि कए उमा बीए केलथि , बीएड केलथि आ सरकारी इसकूलमे शिक्षक भए गेलीह।

संजोग एहन भेलैक जे बिआहक साल भरिक भीतरे उमाकेँ एकटा पुत्रक जन्म भेलनि। ओ ओकरे संगे दिन-राति समय बिताबए लगलीह। उमाक निरंतर प्रयाससँ हुनकर पुत्र खूब नीक पढ़ाइ केलक। पढ़ैत-पढ़ैत हाकिम बनि गेल। बेटाक उपलब्धिसँ उमा बहुत खुस रहैत छलि। ओ वारंबार अपना डेरापर उमाकेँ अपना संगे राखए चाहलक। इहो कहैत रहल जे आब ओकरा नौकरी करबाक कोनो प्रयोजन नहि छैक। मुदा उमा अपन नौकरी करैत रहलीह। अपन स्वाभिमानसँ समझौता नहि केलीह।

एकदिन भोरे उमाक मोबाइलपर अज्ञात नंबरसँ फोन आएल। ओ फोन उठा लैत छथि। फोनपर ओमहरसँ रत्नेश्वरक अबाज छल। ओ तुरंत हुनका चिन्हि जाइत छथि। एक मोन होनि जे फोन राखि देथि। आब एतेक दिनुका बाद हुनकासँ गप्प करबाक की अर्थ अछि?

ई बात रत्नेश बुझलथि। ओ वहुत नम्रतापूर्वक आग्रह करैथ छथि-

“फोन नहि काटब। हमरा किछु जरूरी गप्प करबाक अछि।”

उमा हुनकर फोन नहि कटैत छथि। रत्नेश आगू बजैत छथि-

"हमसभ पटनामे होटलमे ठहरल छी । गाम आबए चाहैत छी । तकर मूल कारण जे हमसभ अह संगे रहए चाहैत छी । हमरा दोसर बिआहमे कोनो संतान नहि अछि । यदि अहाँ मानि जाइ तँ हमरसभक संतान हमर अकूत संपत्तिक उत्तराधिकारी होअए । हमरोसभकेँ संतोष होएत जे एतेक मेहनतिसँ उपार्जित संपत्ति सही स्थानपर गेल । संगहि वृद्धावस्थामे संतानक सुख सेहो भेटि सकत । अहाँक विचार होएत तँ हमसभ पटनेमे घर लए लेब । ओतहि सभ गोटे संगे रहब ।"

"बहुत देरीसँ निन्न टुटल अछि । आब ई सभ करबाक कोनो अर्थ नहि अछि । अहाँ अपन संपत्ति अपने लग राखू ।"

हम अपन गलती मानि रहल छी । कम सँ कम हमरा अपन संतानक अधिकार तँ दिअ ।

"हम के छी अधिकार देबए बला? अहाँकेँ जहिओ ई विचार भेल जे हमर बेटा केना जीबि रहल अछि? ओकर शिक्षा केना भए रहल अछि? अहाँ तँ धनक मदमे विदेशी कनिआ संगे निसाँमे रही । आब कतबो किछु करब समय वापस आबि सकत? की हमर ओ कष्ट मिटा सकत जे हम रात-राति भरि जागि कए बितओलहुँ । सभ कष्ट सहिओ कए अपन संतानक भविष्य बनओलहुँ । आब धनक लोभमे हम अपन आत्म संम्मानकेँ बेचि लिअ? कदापि नहि । ई नहि भए सकैत अछि । रहल अहाँक बेटाक गप्प,ओकरा अपन उत्तराधिकारी बनेबाक बात ,तँ अहाँ स्वयं ओकरासँ गप्प कए लिअ। "

तकर बाद ओ फोन अपन पुत्रकेँ दैत छथि । मुदा ओ किन्नहु फोन नहि छुलथि । आखिर फोन कटि गेल । रत्नेश कतबो आग्रह

केलखिन ,उमा अपन बातपर अड़ल रहि गेलीह। हारि कए रत्नेश अपन विदेशी कनिआ संगे विदेश वापस भए गेलथि। हुनका सभटा धन-संपत्ति व्यर्थ लागि रहल छलनि। रस्ता भरि अपन करतूतिपर अफसोच करैत रहलाह।

31/8/2022

नीलिमाक सपना

नीलिमाक पड़ले-पड़ल बीतल बातसभ मोन पड़ि रहल छलनि। नीलिमाक पति एहि दुनिआसँ जाइत-जाइत कहने रहथिन-

"हम तँ जा रहल छी। बच्चासभक सभटा भार आब अहींपर अछि। ओकर सभक शिक्षा तँ भए गेलैक,मुदा लगैत अछि ओकरा सभकेँ नीकसँ व्यवस्थित होइत नहि देखि सकब। मयंक,निखिल आ चंद्रकलाक बिआह नीकसँ करबा देबैक जाहिसँ ओ सभ अपन-अपन जीवनमे सुखी रहए।"

साल भरिक बाद चंद्रकलाक बिआह एकटा प्राध्यापक वरसँ भेए गेलनि। प्राध्यापकजी सरकारी कालेजमे काज करैत छलाह। हुनकर परिवारो संपन्न आ इलाकामे प्रतिष्ठित छलनि। बिआह आदर्शे भेल छल। मुदा आइ-काल्हिक आदर्श बिआह आर जानमारा होइत अछि । सएह एतहु भए रहल छल। दुनू भाए आ नीलिमा स्वयं वरकेँ संतुष्ट करबाक हेतु कोनो प्रयास बाँकी नहि रखलनि । वरक विदाइमे की नहि देलखिन । मुदा द्विरागमनक मासे दिनक भीतर जे चंद्रकला नैहर वापस आबि गेलि। प्राध्यापकजी सासुर अबैत जाइत रहलथि । दुनू बेकतीक आपसी संबंध सेहो ठीक-ठाक लगैत छलनि । तखन ई की भए रहल छल? चंद्रकला सासुर जेबाक नामे नहि लिअए। कखनहु किछु,कखनहु किछु बहन्ना बना कए ओ प्राध्यापकजीकेँ टरकबैत रहलि। एहि बीचमे मयंक आ निखिलक कंपनीक काज बहुत नीक चलि रहल छल। कंपनीक फएदा बढ़िते जा रहल छल। तेँ चंद्रकलाक हेतु ओ सभ एकटा

फ्लैट सेहो कीनि देलक। ओहि फ्लैटमे गृह प्रवेशक खर्च पर्यंत दुनू भाए देलक। किछु दिन चंद्रकला ओहि फ्लैटमे प्राध्यापकजीक संगे रहबो कएलि। मुदा थोड़बे दिनक बाद ओकरा संतान होनहारी भेलैक। तकर बाद साल भरिक बच्चा भए गेलैक। एहि बीच नीलिमा ओकरा बुझेबाक प्रयास करथि-

"बिआहक बाद बेटीकेँ वरक संगे रहबाक चाही। अपन घर बसाएब बहुत जरूरी अछि। बच्चाक पालन-पोषणपर ध्यान देबाक चाही।" मुदा चंद्रकला एहि बातसभपर ध्यान नहि दिअए।

चंद्रकलाकेँ नैहरमे दुनू भाए ओकर सुख-सुविधाक पूरा ध्यान राखए। कालक्रमे ओकरोसभक इच्छा रहैक जे जखन ओकर बिआह भए गेलैक तँ सासुरमे बसए,अपन घरबला संगे गृहस्थीकेँ मजगूत करए। चंद्रकला प्राध्यापकजी संगे हुनका डेरापर जइतए जरूर,मुदा थोड़बे दिनमे वापस भए जाइत। प्राध्यापकोजी किछु नहि कहथिन। डर होनि जे कहीं किछु फसाद ने भए जाए। आखिर दुनू भाए ओकरा किछु कहनाइए छोड़ि देलक। चंद्रकला निचेनसँ नैहरेमे रहए लागलि। केओ किछु पुछबो करैक तँ माएक सेवाक बहन्ना बना दैत। नीलिमाकेँ चंद्रकलाक व्यवहार पसिन्न नहि रहैक। बेर-कुबेर ओ ओकरा बुझेबाक प्रयासो करए। मुदा तकर किछु सकारात्मक परिणाम नहि भेल।

नीलिमा अपन दुनू बेटाक बिआहक हेतु प्रयास करए लागलि। भेलैक जे ओकरसभक कनिआ आबि जेतैक तँ चंद्रकला अपने रस्ता पकड़ि लेत। मुदा चंद्रकला सेहो सतर्क छलि। नैहरक संपत्तिसँ ओकर मोह बढ़ि गेल रहैक। भाएसभक बिआह भेलाक बाद ओकरा नैहरमे के

पुछतैक? ई प्रश्नसभ ओकरा मोनमे घुमैत रहैक । तेँ जहाँ ओकरसभक बिआहक कोनो प्रस्ताव अबैत तँ चंद्रकला किछु-ने-किछु कुचक्र रचि दैत छल। कनिआमे किछु-ने-किछु अवगुण निकालि दैत छलि। घटकक सामनेमे तेहन ने व्यवहार करैत जे ओ सभ इएह ले,ओएह ले निपत्ता भए जाइत। हालति ई भए गेल जे बादमे घटक अएनाइए बंद भए गेलैक। चंद्रकलाक व्यवहार आ वरसभक पारिवारिक परिस्थितिक चर्च सौंसे होमए लागल। केओ अपन बेटीकेँ एहन घरमे किएक देत? आब ककरो अपन संतान एतेक सस्ता नहि छैक जे जानि बुझि कए ओकर जीवन नष्ट कए दितए। इएह बातसभ लोक बजैत रहैत छल। छोटका भाएक हेतु तैओ कथासभ अबैत ,मुदा ओ अड़ल रहए जे भैयाक बिआह हेतैक तखनहि अपन बिआह करत। एहि तरहेँ सालक-साल बीति गेल। दुनू भाएक बएस बहुत बढ़ि गेलैक। मुदा ककरो बिआह नहि भए सकलैक। एहि बातपर एकदिन घरमे जबरदस्त हंगामा भेल। नीलिमा चंद्रकलाकेँ स्पष्ट कहलखिन-

“तूँ नहि चाहैत छैं जे तोहर भाएसभक बिआह होइ। तोहर नजरि ओकरसभक धनपर छौ। तूँ ई छैं,ओ छैं ।”

-कहि ने तामसमे की की कहि गेलैक। ओकर बात सुनि कए चंद्रकला जोर-जोरसँ चिकरए लागलि। हल्ला सुनि कए छोटका भाए निखिल सेहो ओहिठाम पहुँचि गेल। ओहो माएक समर्थनमे किछु-किछु बाजए लागल। ताबे मयंक हाटपर सँ तरकारी कीनि वापस आबि गेल छल। घरक माहौल गड़बड़ देखि ओ कनी काल तँ चुप रहल। मुदा एकाएक जेना ओकरा किछु भेलैक। ओ सामनेमे राखल लाठी उठा

लेलक आ निखिल दिस दौड़ल। मयंककेँ रोकबाक हेतु नीलिमा चिकरए लगलीह। हल्ला ततेक बढ़ि गेल जे देखिते-देखिते ओहिठाम सौंसे गामक लोक एकत्रित भए गेल। गौआँसभक हस्तक्षेपक बाद बहुत मोसकिलसँ स्थिति नियंत्रणमे आएल। बात तैओ शांत नहि भेल। थोड़बे कालक बाद मयंक झोरा उठओलक आ घर छोड़ि कए बिदा भए गेल। जाइत-जाइत कहैत गेल-

"यदि चंद्रकला एहि घरमे नहि रहि सकत तँ हमहूँ एहिठाम नहि रहब।"

नीलिमा असहाय भेल सभटा देखि रहल छलीह। बुझेबे नहि करनि जे ई सभ की आ किएक भए रहल छल। ओ पेटकुनिआ दए देलीह। कैक दिन किछु खेबो नहि केलीह। बहुत मोसकिलसँ गामक लोकसभ हुनका मनओलकनि। एहि तरहेँ चंद्रकलाक प्रसंगे किछु-ने-किछु होइते रहैत छल। मयंककेँ रुसि कए घरसँ कतहु बाहर चलि गेलाक बाद नीलिमा बहुत दुखी भए गेलथि। बहुत मोसकिलसँ ओकरा मनाओल गेल। नीलिमा आ निखिल आब मयंककेँ टोकारा देनाइ छोड़ि देलनि। चंद्रकलाकेँ जे मोन होइ सएह करए । ओकर बच्चा छेटगर भए रहल छलैक। मुदा घरक वातावरण तेहन बनि गेल छल जे ओकरा पढ़ाइ-लिखाइमे कनीको मोन नहि लगैक। दिन-राति मोबाइल,टीभी मे लागल रहैत छल। इसकुलसँ शिक्षक यदि किछु समादो देलक तँ मयंक उल्टे ओकरे फज्झति कए अबैक। मास्टरोसभ की करितथि?ओकरा टोकनाइए छोड़ि देलखिन।

प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितिक चलते नीलिमाक स्वास्थ्यमे निरंतर ह्रास होइत गेलनि।रक्तचाप,रक्त शर्करा,हृदयक गति सभ अनियंत्रित रहए लगलनि। हुनका रहि-रहि कए माथामे चक्कर देबए लगलनि। एकदिन एहिना शौचालय गेल रहथि कि लगलनि जेना भूकम्प भए रहल छैक। ओ ठामहि खसलीह। माथामे बहुत चोट लगलनि। ओ ओतहि बेहोस पड़ल रहलीह। चाह देबाक हेतु मयंक ताकि रहल छलनि। मुदा ओ जखन शौचालयसँ बड़ीकाल धरि बाहर नहि निकललथि तखन ओकर केबार तोड़ल गेल। नीलिमा बेहोस पड़ल छलीह। माथसँ खून निकलि रहल छलनि। हुनकर ई हाल देखि मयंक अबाज देलक। हल्ला सुनि निखिल सेहो ओतए पहुँचि गेलाह।

नीलिमाकेँ उठा-पुठा कए मयंक आ निखिल एम्बुलेंससँ अस्पताल लए जा रहल छल। लगपासक लोकसभ एम्बुलेंसक सायरनक अबाज सुनि ओकर घरक आगू एकत्रित भए गेल छल। मुदा ककरो किछु पता नहि रहैक जे आखिर भेलैक की? एम्बुलेंसमे के जा रहल अछि आ ओकर की स्थिति छैक?सभ एक-दोसरक दिस प्रश्नचिन्हक मुद्रामे देखि रहल छल। सभक मोनमे जिज्ञासा छलैक। बात की छैक? की भेलैक? मुदा उत्तर ककरो लग नहि रहैक। एम्बुलेंस आगू बढ़ि गेल। ओकर संगे मयंक आ निखिल बैसल छल, चिंतित आ परेसान। क्रमशः ओहिठाम उपस्थित लोकसभ हहरि गेल। ककरो किछु निजगुत जनतब नहि भए सकलैक। सभ अपना-अपना हिसाबसँ अनुमान लगबैत रहल,किछु-किछु बजैत रहल ।

बेहोसीक हालतिमे नीलिमा दिल्लीक नामी अस्पतालमे भर्ती कराओल गेलथि। डाक्टरसभ किछु नहि बाजए, जेना मुँह सीबि लेने होअए। नीलिमाकेँ आपातकालीन विभागमे राखल गेलनि। अस्पतालमे तुरंत किछु टाका जमा करबाक रहैक । संगमे टाका रहैक नहि । मयंक एटीएमसँ टाका निकालबाक हेतु गेल । एही बीचमे डाक्टर निखिलकेँ कानमे किछु कहलकैक। डाक्टरक बात सुनि ओ बहुत उदास भए गेल। एमहर-ओमहर ताकए लागल। ताबे मयंक एटीएमसँ टाका निकालि आबि गेल । ओकरा सामने देखि निखिल कानए लागल। मयंककेँ बुझेबे नहि करैक जे ओ एना किएक कानि रहल अछि?

"की भेलौ?"

"डाक्टर कहलक जे,,, ।"

"की कहलकौ से साफ-साफ बाज ने,,,।"

"माएकेँ ब्रेन हेमरेज भए गेलैक अछि । तुरंत आपरेसन करेबाक हेतैक। तकर बादो की हेतैक तकर कोनो ठेकान नहि। भए सकैत अछि जे होस आबि जाइक,अथवा बेहोसे रहि जाए।"

ओकर बात सुनि मयंक गुम्म पड़ि गेल। ओकर माथा घुमए लगलैक। ओ बहुत मोसकिलसँ अपनाकेँ सम्हारलक। ओ निखिलकेँ लेने आपातकालीन विभागमे पहुँचल । ओहिठामसँ ओकर माए आइसीयूमे जा चुकल छलीह। हुनकर तुरंत आपरेसन हेबाक छलनि। ताहि हेतु पाँच सीसी खून चाही। टाका तँ चाहबे करी। खूनक जोगार करबाक भार निखिलकेँ दए मयंक टाका जमा करबाक हेतु चलि गेल ।

पाँच घंटा धरि लगातार आपरेसन चलल। नीलिमाक माथामे रक्तश्रावक कारण अनेक ठाम गाँठ बनि गेल छलनि। अपना भरि डाक्टरसभ बहुत मेहनति केलक। छओ घंटा धरि आपरेसन चलैत रहल। तकर बाद हुनका गहन पर्यवेक्षणमे राखल गेलनि। मुदा नीलिमाकेँ आपरेसनक तीनघंटाक बादो होस नहि भेलनि। डाक्टर सभ बहुत चिंतित छल। ओकरसभक चिंता उचित रहैक। कारण एक बेर बेहोसीमे चलि गेलाक बाद फेर होस हेतनि कि नहि,कि सालक साल ओहिना रहि जेतीह तकर कोनो ठेकान नहि । मुदा कएले की जा सकैत छल? डाक्टरसभ अपन प्रयास कए चुकल छल। आगूओ लागले रहए,मुदा नीलिमा ओहिना छलीह,जीबैत मुदा बेहोस। ओ आपरेसन कक्षसँ आइसीयूमे आनल गेलीह। डाक्टर सभ प्रयास कए थाकि गेल। नीलिमाक ओही अवस्थामे चारि दिन बीति गेलनि। डाक्टरसभ बूझि गेल जे हुनकर हालतिमे सुधार मोसकिल छनि। यदि सुधार हेबो करतनि तइओ ओ पहिलुका स्थितिमे तँ नहिए आबि सकतीह। आखिर डाक्टरसभ हुनका घर वापस लए जेबाक परामर्श देलक । घरे पर नर्ससभ लागल रहतनि,डाक्टरो अबैत-जाइत रहत। डाक्टरसभक बात मानि दुनू भाइ नीलिमाकेँ एम्बुलेंससँ घर वापस आनि लेलक । संयोगसँ नीलिमाक बेटी चंद्रकला तखने पटनासँ वापस आएलि। चंद्रकलाक पिताक पटनाक बैंकमे सावधि जमा छलनि। चंद्रकला ओहि बैंक खातामे नामांकित कएल गेल छलि। समय पूरा भए गेल रहैक। ओकरे निकासी हेतु ओ पटना गेल छलि। माएक स्थिति देखि ओ बहुत दुखी भेलि,चिंतामे पड़ि गेलि।

नीलिमाकेँ अस्पतालसँ छुटला तीन मास भए गेलनि। एतेक दिनक बाद आइ हुनका कनी होस आएल छलनि। हुनकर आँखिसँ निरंतर नोर झहरि रहल छलनि। ओ किछु-किछु बाजए सेहो चाहथि,मुदा बात लटपटानि,स्पष्ट नहि होनि। मयंक आ निखिल दिन भरि हुनके लग रहि गेल। कैक बेर डाक्टरसँ गप्प केलक। डाक्टरो आजुक समाचारसँ उत्साहित छल।

ओहि दिन नीलिमाक हालति एकाँएक बहुत खराप भए गेलनि। चंद्रकला आ मयंक कतहु बाहर गेल रहए। घरमे निखिल एसगर छल।ओ शौचालयमे गेले छल कि बगलक कोठरीमे नीलिमाकेँ जोरसँ हिचकी भेलनि । तकर बाद ओ तुरंत आँखि उल्टा देलनि। अबाज सुनि कए निखिल धड़फड़ाएल ओहि कोठरीमे पहुँचल। ताबे तँ नीलिमाक खेल खतम छल। हुनकर ई हाल देखि कए निखिल भोकारि पारि कए कानए लागल। चंद्रकला आ मयंक सेहो घरक द्वारिपर पहुँचि गेल छल। ओ सभ निखिलकेँ एना कनैत देखी तुरंत कोठरीक भीतर पहुँचल। मुदा ताबे तँ जे हेबाक से भए गेल छल। नीलिमा एहि असार संसारकेँ छोड़ि चुकल छलीह। सभ किछु ठामहि छल,मुदा नीलिमा जा चुकल छलीह ।हुनकर सपना सपने रहि गेलनि। बेटा सभक घर नहिए बसि सकलनि। चंद्रकला सेहो सुखी नहि रहि सकलि। अपितु,आब अफसोच करए । मुदा आब बहुत देरी भए चुकल छल। समय थोड़े लौटि जाएत।

२६।३।२०२४

जीवन अनमोल अछि

मुरली कैक साल धरि लगातार गामसँ बाबाधाम पैरे जाइत रहलाह,पंचमीक दिन बाबाकेँ जल चढ़बैत रहलाह । बाबाक मंदिरमे पैसितहि हुनकर आँखिसँ धाराप्रवाह नोर खसैत रहनि,ओ बाबाक भजन गबैत रहथि,केओ की कए रहल अछि ताहिसँ कोनो मतलब नहि रहैत छलनि । जानह हे महादेव़ ! से कहि माथा टेकि देथि। लोकसभ चिचिआ रहल अछि,पण्डासभ अंतमे हाथ पकड़ि कए बाहर कए दनि, तखने ध्यान आबनि। सालक-साल इएह क्रम अवाध गतिसँ चलैत रहल। आखिर बाबा हुनकर प्रार्थना सुनलखिन । एहि बेर बाबाधामसँ लौटलाह तँ हुनकर पत्नी श्यामा बहुत प्रसन्न रहथिन । मुरली कैक बेर पुछबो केलखिन-

“बात की छैक? आइ बहुत प्रसन्न देखि रहल छी।”

मुदा श्यामा किछु नहि बाजथि ।

“पहिने बाबाक प्रसाद दिअ । तखन किछु आर।”

“ठीके कहलहुँ ।”

मुरली झोरामे सँ बाबाधामक प्रसाद,स्वादिष्ट पेरा निकालि कए देलखिन। दुनूगोटे बाबाक प्रसाद ग्रहण करैत छथि ,पानि पीबैत छथि । तकर बाद श्यामा मुरलीक कानमे किछु फुसफुसाइत छथि । श्यामाक बात सुनि मुरलीक खुसीक अंते नहि छनि । ओ भावविभोर भए चिचिआ उठैत छथि-

“जय बाबा बैद्यनाथ !”

परिवारमे पहिल संतानक आगमनसँ सर्वत्र प्रसन्नताक माहौल छल। मुरलीक ओहिठाम अष्टजामक आयोजन कएल गेल। सौंसे गाम लड्डू बाँटल गेल। छटिहारक बाद पंडितजीकेँ बजाओल गेल । हुनका नेनाक नामकरण हेतु आ ओकर टिप्पनि बनेबाक हेति कहल गेलनि । पंडितजी बहुत उत्साहपूर्वक ओकर नाम माधव रखलनि। ओ जल्दीए माधवक टिप्पनि सेहो बना देलखिन ,मुदा ओहिमे ग्रहक स्थिति प्रतिकूल देखि बहुत चिंतिति भए गेलथि।

“एकरा तँ कमे बएसमे किछु खराप योग छैक । ई बात मुरलीकेँ केना कहि सकैत छिअनि? नहि कहबनि तखन ओ तकर समाधान कोना करताह?”

- मोने-मोन पंडितजी सोचथि । ओमहर मुरली बहुत उत्सुकतासँ टिप्पनिक प्रतीक्षा कए रहल छलाह। दस दिन बीति गेल। तखनहु पंडितजी टिप्पनि नहि देलखिन,ने किछु कहलखिन। तखन एकदिन अपने हुनका ओहिठाम पहुँचि गेलाह। मुरलीकेँ देखि पंडितजी चिंतामे पड़ि गेलाह।

“आब की करी?”- बहुत अचता-पछता कए पंडितजी मुरलीकेँ सभटा बात स्पष्टतासँ कहि देलखिन – “हिनकर टिप्पनि तँ बहुत नीक छनि मुदा ।”

“मुदा की?”

“पन्द्रह सालसँ बीस सालक बीचमे बेसी गड़बड़ समय रहि सकैत छनि ।”

"तकर निवारण?"

"परेसान नहि होउ, दुर्गापाठ करैत रहू। सभ ठीके रहतैक।"

पंडितजीक बात सुनि मुरली आ श्यामा बहुत चिंतामे पड़ि गेलाह ।

पंडितजी अपन बात कहि गेलाह,मुरली सेहो सुनि लेलनि,चिंतो भेलनि,मुदा समयक संगे सभ बात बिसरि ओ माधवक उच्च शिक्षाक जोगारमे लागि गेलाह। माधव बहुत संस्कारी छल । ओ सभ दिन पढ़ाइमे नीक करैत रहल । मैट्रिकक परीक्षामे बहुत नीक केलक । ओहि दिन मुरली आ श्यामाक प्रसन्नताक तँ अन्ते नहि छल। कैकदिन धरि पूजा-पाठ होइत रहल । तकर बाद सौंसे गाम मधुर बाँटल गेल । मैट्रिकक परीक्षामे माधवक नंबर ततेक नीक छल जे ओकरा बिना कोनो दिक्कतिकेँ नीक कालेजमे नाम लिखा गेलैक । छात्रावासो भेटि गेलैक। माधवकेँ माता-पितासँ फराक रहबाक मोन नहि रहैक। ओ बहुत अछता-पछता कए कालेज बिदा भेल । संगमे मुरली सेहो गेलथि । कालेज जा कए ओकर सभटा ओरिआन कए देलखिन,जाहिसँ ओकरा कोनो दिक्कति नहि होइक ।

मैट्रिकमे माधवकेँ विज्ञानक विषयसँ कलाक विषयसभमे बेसी नीक नंबर आएल रहैक ।असलमे ओकरा कलाक विषयसभमे बेसी मोन लगैक । मुदा मुरली सदिखन ओकरा अभियन्ता बनबाक हेतु प्रेरित करैत रहैत छल । ओहो अनिच्छापूर्वक लागल रहल। मुदा इन्टरक परीक्षामे ओकरा नीक नंबर नहि अएलैक। ओ मोसकिलसँ पास केलक । ओ आबो चाहए जे विज्ञान छोड़ि कलाक विषय राखि ली । मुदा से

मुरलीकेँ पसिंद नहि होनि। ओ माधवकेँ कोचिंग करबाक हेतु कोटा पठा देलखिन । कोटामे शुरूएसँ ओकरा कोना दनि लागैक। ओकर बस चलैक तँ ओ तुरंत ओहिठामसँ वापस आबि जाए । ओहिठामक माहौलसँ ओ बहुत परेसान छल। ओकरा कोचिंगमे एकदम मोन नहि लागैक। ओमहर मुरली फोनपर माधवकेँ बेर-बेर बुझबैत रहलैक । अपना भरि ओकरा कोचिंगक महत्व बुझबैक। मुदा माधव एहिसभसँ संतुष्ट नहि होअए।

कोनो काज यदि अनिच्छापूर्वक कएल जाइत अछि तँ मोनपर ओकर प्रतिकूल असरि पड़िते अछि। बरदासोक एकटा सीमा होइत अछि। तकर बाद ओ आदमी टूटि जाइत अछि किंवा कोनो विकृतिक वशीभूत भए जाइत अछि,कोनो एहन काज कए लैत अछि जे साइत ओ कहिओ अपनहु नहि सोचने रहल होएत। मुदा लोक तँ परिणामटा देखैत अछि। यदि अहाँ सफल छी तँ सभ अहाँक समर्थनमे बुझाएत,यशगान करत अन्यथा अपनो लोक पाछू हटि जाएत । माधवोक संगे सएह भेलैक। कोटाक कोचिंग संस्थानमे ओकर मोन कहिओ नहि लगैक। कहुना कए ओ समय काटि रहल छल। कोचिंग किलासमे ओकर निंदा होइते रहैत छलैक। एहिसँ ओकर आत्मसम्मानपर चोट पड़िते छल। ओ मुरलीकेँ बेर-बेर अपन बात बुझेबाक प्रयास करैत रहल। मुदा ओ किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि रहैक। माधव की करैत? ओहो जेना-तेना समय काटैत रहल।

किछु दिनक बाद कोटामे एकटा एहन घटना घटल जे ओकरा हिला कए राखि देलकैक। ओहि दिन ओ जलखै कए कोठरीमे आएले छल कि सामनेक कोठरीमे विचित्र अबाज सुनेलैक।

"किछु गड़बड़ जरूर अछि। ई अबाज सामान्य नहि अछि।"

माधव ओहि कोठरी दिस दौड़ल।संयोगसँ एक्के-दू धक्कामे केबारक छिटकनी नीचाँ दिस खसि पड़ल आ केबार खुजि गेल। तकर बाद जे दृश्य ओ देखलक से देखिते रहि गेल। क्षण भरिक हेतु ओकर आँखिक आगू बिजलौका चमकि उठलैक,सौंसे देह रोमांचित भए गेलैक। कामिनी अपन गर्दनिमे ससरफानी लगेने छल,दर्दसँ छटपटा रहल छलि। माधव ध्यानसँ देखलक। ओकर साँस चलि रहल छलैक। ओ हाँइ-हाँइ ओकरा कोरामे लेलक,ओकर ससरफानीकेँ ढील कए देलक। कामिनी आँखि मुनने छलि,मुदा किछु बाजि नहि पाबि रहल छलि। गलाक ससरफानी ढील होइतहि कामिनी जोरसँ साँस लेलक आ आँखि मुनि लेलक। माधव ओकर जल्दीसँ उतारि नीचाँ राखल चौकीपर पाड़ि देलक। ओ तुरंत डाक्टरकेँ फोन केलक। देखिते-देखिते बात बहुत गुलगुला गेलैक। थोड़बे कालक बाद ओहि कोठरी लग कैकटा विद्यार्थी आ शिक्षक एकत्रित भए गेल। डाक्टर सेहो आबि गेल रहथि। डाक्टर कामिनीकेँ किछु दबाइ देलकनि। ओ तुरंते सुति रहलि। क्रमशः ओहिठाम आएल लोकोसभ हहरि गेल। मुदा माधव कतए जाइत ?ओकर तँ कामिनी लगीचेमे रहैत छलि। साँझ धर कामिनी क्रमशः ठीक भेलि। तकर बादो ओ परेसान छलि,किछु-किछु बजैत रहैत छलि। "हमरा जाए दिअ,हम एहिठाम रहए जोकर नहि छी,हमर जिनगी नरक

भए गेल अछि।" माधव ओकरा आश्वश्त करबाक बहुत प्रयास केलक। मुदा कामिनी बेचेन छलि, ओहिठाम एक्कोक्षण रहबाक हेतु तैयार नहि छलि।

माधवेक पिता जकाँ कामिनीक पिता, सुरेश सेहो बहुत महत्वाकांक्षी रहथि। ओ अपने डाक्टर नहि बनि सकल रहथि । तेँ मोनमे बहुत अरमान छलनि जे बेटी डाक्टर बनए। तहिना माधवक पिता मुरलीकेँ ओकरा प्रतिए बहुत योजनासभ रहनि। मुदा ओहिठामक कोचिंगसँ आ ओकर व्यवस्थासँ ने माधव प्रसन्न छल ने कामिनी। एहन-एहन कतेको विद्यार्थीक कोटामे साँस फुलि रहल छलैक । कतेको दुखद समाचार अबिते रहैत छल । लोक सुनए आ आगू बढ़ि जाए। कइए की सकैत छल?मुदा मुरली आ कामिनी निर्णय कए चुकल छल जे आब ओ सभ एहिठाम नहि रहत। ओ सभ ओही राति कोटा छोड़ि देलक। टीसन पहुँचल तँ मुम्बईक रेलगाड़ी लागल रहैक । जेना-तेना टिकटक जोगार केलक आ ओहिमे बैसि गेल । थोड़बे कालमे ट्रेन खुजि गेलैक । लगलैक जेना ओ ट्रेन ओकरे सभक बाट ताकि रहल छलैक ।

ओमहर प्रात भेने सुरेश घटनाक जनतब भेटितहि कोटा पहुँचलाह । ओ टीसनसँ सोझे कामिनीक छात्रावास गेलथि, मुदा ओतए कामिनी नहि छलि। ओ तकर बाद कोचिंग संस्थाक प्रमुखसँ भेंट केलखिन । ओकरो कामनीक छात्रावाससँ चलि जेबाक सूचना भेटल रहैक । ओकरा कामिनीक एकटा पत्र भेटल रहैक जे कामिनी अपन पिताकेँ लिखने छलि । कामिनीक पिता चिठ्ठी पढ़ैत छथि-

“पूज्य पिताजी,सादर प्रणाम। हम जनैत छी जे ई पत्र पढ़ि कए अहाँ बहुत निराश होएब। अहाँ कहिआसँ उम्मीद लगेने रही जे अहाँक बेटी डाक्टर बनत। ताहि लेल जे किछु अहाँकेँ पार लागल से केलहुँ। मुदा अहाँ हमर रुचि आ स्वभावक ध्यान नहि राखि सकलहुँ। हमरा डाक्टरी पढ़ाइमे कोनो रुचि नहि रहए। हमरा इतिहास नीक लागए,हमरा चित्रकलामे बहुत मोन लागए,हम गीतो बहुत नीक गाबि ली,मुदा अहाँक हिसाबे तकरसभक कोनो मोल नहि छल। बस डाक्टर बनक चाही,चाहे हमर जान रहए की जाए। हम कोटा नहि जाए चाही,मुदा अहाँ अरारि कए देलहुँ। हम की करितहुँ? अहाँक बात मानि लेलहुँ। मुदा एहिठाम अएलाक बाद हम कहिओ नीकसँ सुति नहि सकलहुँ। एहिठामक जिनगीसँ हम ततेक परेसान भए गेलहुँ जे एकदिन मोन भेल जे एहि दुनिआकेँ छोड़ि दी। हम ताहि हेतु प्रयासो केलहुँ। मुदा हमर संगीसभ कोना-ने-कोना हमरा बचा लेलक। हम बचि तँ गेलहुँ ,मुदा आब एहिठाम कोनो हालतिमे नहि रहि सकैत छी। हम कोटा छोड़ि कए माधव संगे जा रहल छी। हमरासभकेँ अपनो नहि बूझल अछि जे कतए जाएब,की करब? मुदा एहिठामक यातनापूर्ण जीवनसँ मुक्ति तँ भेटिए जाएत।

अहाँ चिंता नहि करब। हमरा विश्वास अछि जे हमसभ उचित रस्ता ताकि लेब।

अहाँक बेटी,

कामिनी ”

चिठ्ठी पढ़ि कए सुरेश गुम्म पड़ि गेलाह। एहिसँ पूर्व संस्थानक मनेजर हुनका सभ बात कहने रहनि। कामिनीकेँ कोचिंगक

परीक्षासभमे नीक नंबर नहि अबैक,कोचिंगक कठिन दिनचर्यामे ओ परेसान भए गेल छलि। ओ कैकदिन कोचिंग किलासमे नहि जाए। कैक बेर ओकरा चेतौनी सेहो भेटल रहैक। कमोबेस इएह हालति माधवोक रहैक । आब जखन माधव आ कामिनी कोचिंग संस्थानसँ कतहु चलि गेल अछि तखन ओकर माता-पिताकेँ अपन गलतीक अनुमान भए रहल छैक। मुदा आब अपन हाथमे किछु छैहे नहि । ओ सभ एतबे चाहैत अछि जे कहुना ओ सभ जीबैत होअए,जतए होअए स्वस्थ रहए। मुरलीकेँ सेहो सभ बात पता लगलैक। ओहो कोटा स्थित कोचिंग संस्थान आएल । मुदा आब ओतए किछु करए जोगर नहि रहैक। मुरली आ सुरेश अछता-पछता कए कोटासँ वापस अपन-अपन घर चलि गेलाह।

कोटासँ जान बचा कए कामिनी आ माधव मुम्बई पहुँचल । ओ सभ मुम्बई आबि तँ गेल,मुदा आब करए की? ओहि महानगरमे कोनो आधार तँ रहैक नहि। संगमे टाका सेहो नहि रहैक,ने कोनो जान-पहिचान रहैक । कतए रहत,की भोजन करत? दिनभरि ओ सभ भुखले छल।दिन-भरि मुम्बईमे एमहर-ओमहर बौआइत रहि गेल। आब साँझ पड़ि रहल छलैक । तथापि,कोनो ठेकाना नहि बुझा रहल छलैक। संयोगसँ सड़कपर एकटा सरदारजी भेटि गेलखिन। एकरासभकेँ परेसान देखि सरदारजी पुछलखिन-

"की बात अछि? तूँ सभ ककरा ताकि रहल छह?"

"ककरो नहि? "

"तखन? "

"हमसभ पहिल बेर मुम्बइ आएल छी। किछु काज करए चाहैत छी जाहिसँ गुजर कए सकी आ आगू किछु विकासो करी।"

"तूँ हमरा संगे चलबह?"

"किएक ने? "

दुनूगोटे सरदारजी संगे बिदा भए गेल। सरदारजी दुनूगोटेकेँ अपना संगे गुरुद्वारा लेने गेलथि। ओहिठाम दुनूगोटे लंगर चखलक आ रातिमे ओहीठाम रहबाक ओरिआन सेहो भए गेलैक । सरदारजी नित्य गुरुद्वारा अबैत छलाह । प्रातभेने जखन ओ गुरुद्वारा अएलाह तखन फेर ओकरासभसँ भेंट भेलनि। मुरली आ कामिनीकेँ ओतहि सेवादारक काज धरा देलखिन। ओतहि रहबाक व्यवस्था सेहो भए गेलैक । दुनूगोटे मास दिन ओहिठाम रहैत आगूक प्रयास करैत रहल। किछु दिन ट्यूशन सेहो पढ़ेलक। किछु दिन कपड़ाक दोकानपर सेल्समैनक काज केलक। जखन जे काज भेटैत गेलैक,करैत गेल । एहि बीच ओकरसभक आत्मविश्वास आ संघर्षक शक्ति बढ़ैत गेलैक। क्रमशः ओ सभ सरदारजीक सहयोगसँ अपन चाटक दोकान खोलि लेलक। संयोग एहन भेलैक जे ओ चाटक दोकान खूब चलल। लोकसभ ओहिठामक चाट खेबाक हेतु दूर-दूरसँ अबैत छल । चारि-पाँच सालक भीतरे ओ सभ मुम्बईमे नीकसँ स्थापित भए गेल।

आब जखन कामिनी आ माधव मुम्बईमे नीकसँ स्थापित भए गेल छल,ओकरा सभकेँ एक बेर कोटा कोचिंग संस्थान जेबाक मोन भेलैक जाहिसँ ओहिठाम अनेरे परेसान युवकसभकेँ मार्गदर्शन कए सकए । मुदा व्यस्तताक कारणेँ से नहि भए पबैक । कतेक दिन धरि ई

कार्यक्रम लटकल रहल। आखिर,वसंत पंचमीक दिन ओसभ कोटा पहुँचिए गेल। ओहिठाम अखनहु ओकर किछु संगी सभ कोचिंगेमे घसि रहल छल। कामिनी आ माधवकेँ कोचिंग संस्थान आएल देखि ओकर पुरना संगीसभ दौड़ल आएल। सभ ओकर प्रगतिक खिस्सा सुनि-सुनि अचंभित रहए ।

"तूँ तँ कमाल कए गेलह।"

"हमसभ अनेरे एहिठाम फसल छी।"

"डाक्टर, इंजीनियरे बनब सफलताक गारंटी नहि थिक।"

"हमहूँ तोरे संगे मुम्बई चलब ।"

सभ तरह-तरहक बात करैत रहल। कोचिंग संस्थानमे तँ जेना हड़बिड़रो मचि गेलैक। कैकटा अभिवावकसभ जे अपन विद्यार्थीक संगे कोचिंगमे नाम लिखबए आएल छलाह,अपन-अपन विद्यार्थीसभक संगे चोट्टे घुरि गेलाह । कैकटा विद्यार्थीसभ जे कोचिंगसँ परेसान भए गेल रहथि,से सभ माधव आ कामिनीसँ प्रेरणा ग्रहण करैत एकस्वरमे बाजि उठलाह-

"कोचिंग करब, इंजीनियर ,डाक्टर बनब जीवनक अंतिम लक्ष्य नहि भए सकैत अछि। जीवन ईश्वरक अनुपम उपहार थिक। जीवनअनमोल थिक। एकरा संकटमे दए कोचिंग करबाक किंवा किछु करबाक कोनो अर्थ नहि थिक । हमहूँसभ कामिनी आ माधव जकाँ अपन-अपन उद्योग शुरू करब । ककरो मातहत किएक रहब?

कोचिंग संस्थानमे कामिनी आ माधवक आगमन आ तकर बाद घटित घटनासभक जनतब मुरली आ सुरेश धरि पहुँचलनि । ओ सभ

अतिशय प्रसन्न रहथि । तकर बाद तँ अपन बच्चासँ भेंट करबाक हेतु मोन व्याकुल भए गेलनि। एतेक दिन बीति गेल,मुदा हुनकासभकेँ किछु पता नहि चललनि जे ओ सभ कतए अछि की कए रहल अछि? आब एक्को क्षण रुकबाक स्थितिमे ओ सभ नहि रहथि। दुनूगोटे एक्के संगे कोटा पहुँचलाह । ताबे माधव आ कामिनी मुम्बई वापस चलि गेल रहए। पाछू लागल ओहोसभ मुम्बई पहुँचलाह। ओहिठाम दुनूगोटेक कारबार देखि हुनका लोकनिक प्रसन्नताक अंते नहि रहए। ततबे नहि,ओ सभ दुनूगोटेक मित्रतासँ बहुत प्रभावित रहथि।

"जखन एतेक सालसँ ओ सभ आपसमे नीकसँ रहि रहल छथि तखन किछु सोचबाक काज नहि। शुभस्य शिघ्रम्।"

एहि शुभ अवसरपर सभ गोटे प्रसन्नतापूर्वक विघ्नविनाशक मंदिर पहुँचि भगवान गणेशकेँ प्रणाम केलनि। मुरली आ सुरेशक प्रसन्नताक तँ अन्ते नहि रहनि।

१२।०२।२०२४

लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

जन्म तिथिः२ जनबरी १९५४(प्रमाण पत्र)

२४ अगस्त १९५२(जन्मपत्र)

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)/

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक

विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :मैथिलीमे:-

प्रकाशन वर्ष:2017

१. ‘भोरसँ साँझ धरि’ (आत्म कथा), २. ‘प्रसंगवश’ (निबन्ध), ३. ‘स्वर्ग एतहि अछि’ (यात्रा प्रसंग),

प्रकाशन वर्ष:2018

४. ‘फसाद’ (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै’ (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबन्ध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2019

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबन्ध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2020

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

प्रकाशन वर्ष:2021

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2022

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३. संयोग(कथा संग्रह) २४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2023

२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास) २६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास) २७.पटाक्षेप(उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2024

२८. माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग) २९. जयतु जानकी(उपन्यास)
३०. यज्ञसेनी(उपन्यास)
प्रकाशन वर्षः२०२५
३१.कथा अखन बाँकी अछि(संस्मरण) ३२. गाछ बजैत छैक(कथा संग्रह) ३३.सूर्यपुत्र(उपन्यास)
प्रकाशन वर्ष ;२०२६
बिसरि जाएब जरूरी छै(कविता संग्रह)
In English: -

Year of publication:2018

1. The Lost House (Collection of short stories)

2. Life is an art

3.The Ganges Whispers

हिन्दी में –

प्रकाशन वर्ष:2019
१.न्याय की गुहार

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण pothi.com पर आनलाइन कीनल जा सकैअछि।

www.amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि।